3.3.1 Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC care list during the last five years

3.3.1.1. Number of research papers in the Journals notified on UGC CARE year wise during the last five years

List of Documents		
Sr.No.	**Details**	
	2017-18	
1	Dr.S.M.Bharambe	1
	Mr.R.R.Khare	4
	Dr.S.B.Dhake	2
	Dr.V.Z.More	1
		8
	2018-19	
2	Dr.S.M.Bharambe	4
	Dr.R.R.Khare	3
	Dr.S.B.Dhake	1
	Dr.V.Z.More	2
	Dr.A.K.Jawale	2
	Mr.A.D.Kurkure	1
		13
	2019-20	
3	Dr.S.B.Dhake	2
	Dr.V.Z.More	2
	Dr.A.K.Jawale	2
	Dr.S.M.Bharambe	6
	Dr.R.R.Khare	5
		17
	2020-21	
4	Dr.S.B.Dhake	6
	Dr.V.Z.More	2
	Dr.S.M.Bharambe	2
	Dr.R.R.Khare	2
		12

Dongar Kathore

5	2021-22	
	Dr.S.B.Dhake	04
	Dr.V.Z.More	01
	Dr.S.M.Bharambe	03
	Dr.R.R.Khare	03
		11

Dongar Kathore

Principal
Womens's College of Art's,Commerce &
Computer Application,Dongar Kathora
Tal.Yawal,Dist.Jalgaon

List of Full Time Teachers
2017 to 2022

Sr.No	Name of the Teachers
1	Dr.D.G.Bhole
2	Dr.S.B.Dhake
3	Dr.A.P.Mahajan
4	Dr.S.M.Bharambe
5	Dr.V.Z.More
6	Mr.B.R.Patil
7	Dr.R.R.Khare
8	Mr.V.S.Wakekar
9	Mr.A.D.Kurkure

Dongar Kathore

Principal
Womens's College of Art's, Commerce & Computer Application. Dongar Kathora.
Tal. Yawal. Dist. Jalgaon

S MB 17-18 (1)

Power of Knowledge UGC Approved Journal Volume : I Issue XX Oct to Dec 2017 ISSN 2320-4494

गौरी देशपांडे यांच्या कथांमधील स्त्री

प्रा.डॉ. शकुंतला एम.भारंबे
कला,वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरा
ता.यावल जि. जळगाव

गौरी देशपांडे या मराठी साहित्यक्षेत्रात खळबळ माजवणा-या एक आधुनिक व बंडखोर स्त्रीवादी लेखिका म्हणून सुप्रसिध्द आहेत. कथा, कादंबरी, लेख, स्फुट साहित्यप्रकार त्यांनी हाताळले आहेत. मराठीबरोबरच त्यांचे बरेचसे इंग्रजी लिखाण आहे तसेच काही इंग्रजी-मराठी व मराठी इंग्रजी अनुवादसुध्दा प्रकाशित झाले आहेत. मराठी साहित्यक्षेत्रात त्यांना न ओळखणारा असा एकही वाचक मिळणे अशक्य आहे. त्यांचे साहित्य म्हणजे स्त्रीवादी जाणिवांना जोरदार धक्का देणारे, वाचकाला खडबडून जागे करुन विचार करायला भाग पाडणारे आहे. त्यांनी रुढ पारंपारिक, सामाजिक संकेत झुगारुन लेखन केले. आजपर्यंत स्त्रीची भुमिका ही पुरुषांच्या छायेत रेखाटली जायची. या परंपरेला छेद देण्याचे काम गौरी देशपांडे यांनी केले. व्यक्तीस्वातंत्र्याचा पुरस्कार करणा-या गौरी देशतांडे स्त्रीकडे स्वतंत्र व्यक्ती म्हणून पाहते.

१९७० नंतर त्यानी कथालेखनास प्रारंभ केला असून आहे हे असं आहे व एकेक पान गळावया हे कथासंग्रह आहेत. त्यांनी आपल्या कथालेखनातून स्त्री स्वातंत्र्याचा शोध घेतला असल्याने त्यांची कथा स्त्रीकेंद्रित दिसून येते.गौरी देशपांडे यांना लग्न ही संकलपनाचित्र मान्य नसल्याने त्यांच्या कथांमधून मुक्त मैत्रीचे चित्रण, विवाहबाहय संबंधाचे चित्रण दिसून येते. त्यांच्या आहोटी सवय मग काय झालं कुणास ठाऊक, जागड, एकेक पान गळावया या कथांमधून त्या लिव्हिंग टुगेदर ची संकल्पना मांडतात. आहोटीड या कथेतील राम ज्यावेळी दुसरे लग्न करतो त्यावेळी या गोष्टीचे नायिकेला काही वाटत नाही. ती स्वत: म्हणते, इतक्या सगळया गोष्टी होत असतांना मी काहीच संशय न घेता गप्प बसले कशी याला कारणं दोन. एक तर कशाचंच विश्लेषण करीत यायचा माझा स्वभाव नाही; आणि दुसरं म्हणजे एकमेकाला कसल्याही बंधनाने बांधून प्रश्न, जाबजबाब, रडारड, व्हिस्टेरिकल सीन असल्या गुंतावळयात पडायचं नाही हा आमचा अलिखित करार होता.छ

एकेक पान गळावयाड या दीर्घकथेतील राधा, माधव (तिचा नवरा) व फरहद यांच्या मुक्त मैत्रिचे चित्रण आलेले आहे. माधव या जगातून निघून जातो तेव्हा तिला सर्वापेक्षा फरहदच जवळचा वाटतो. त्यालाही माधवबद्दलचे वाईट वाटते आणि तो रडायला लागतो तेव्हा स्वत:चे अश्रू आवरत ती म्हणते, फरहद! फरहद! रडू नको राजा, रडू नको सोन्या!छ राधा मुंबईला येते तेव्हा आपल्या मुलांकडे न जाता आपल्या स्वतंत्र घरात राहते कारण तिला वाटते की प्रत्येकाने बंदिस्त चौकटीत न जगता स्वतंत्र पध्दतीने जगावे. गौरी देशपांडे यांच्या कथेतील नायिका स्वत: स्वातंत्र्य उपभोगतात आणि आपल्याबरोबरच इतरांनाही त्याचा अधिकार आहे असा विचार करतांना दिसतात. तसेच समाजाला काय वाटेल म्हणून आपल्या जीवन जगण्याच्या पध्दतीत बदल करताना दिसत नाही. त्यांच्या मते स्त्री-पुरुषाचे प्रियकर-प्रेयसीचे नाते असते तोपर्यंत सगळे उत्कट असते आणि हेच तो नवरा-बायकोमध्ये परिणीत रुपांतर झाले की रटाळ जीवन सुरु होते. पुरुषाला जशी नाविन्याची ओढ असते तीच स्त्रीलाही असते हे समाज मान्य करु शकत नाही. लग्नानंतर आवडी-निवडी स्वातंत्र्य सगळया गोष्टी बंदिस्त होऊ लागतात. अशा बंधनात ती राहताना दिसत नाही. त्यांच्या कथांमधील स्त्रिया स्वतंत्रपणे जगणा-या असून त्यांना स्वातंत्र्यासाठी संघर्ष करावा लागत नाही. त्यांचे आजोबा-महर्षी धोंडो केशव कर्वे, काका-रघुनाथ कर्वे, वडील-दिनकर कर्वे आणि आई इरावती कर्वे यांच्या समाजसुधारणेचे विचार त्यांच्या साहित्यातून अभिव्यक्त होताना दिसतात. त्यांना आपण स्त्री आहोत म्हणून अशी वेगळी वागणूक दिलेली जाणवत नाही त्यामुळेच त्यांच्या कथांमधून स्त्रीला

Dongar Kathora

25

हिमांशु जोशी की कहानियों में नारी–चित्रण

प्रा. रविंद्र आर. खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एवं कम्प्युटर ॲप्लीकेशन
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरा, जि. जलगाँव

****

प्राचीन काल से भारतीय समाज में पुरूष प्रधान व्यवस्था है। पुरूषों की तुलना में वर्तमान समय में भी नारी का स्थान गौण है। पुरूषसत्ता ने नारी का सदैव शोषण ही किया है। आज भी भारत में नारी को अपने मौलिक अधिकारों से लेकर सामाजिक अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ता है। नारी अपने अस्तित्व के लिए लड़ना चाहती है, अपना व्यक्तित्व बनाना चाहती है। आज की नारी शिक्षा एवं आत्मविश्वास से प्रेरित होकर समानता एवं स्वतंत्र अस्तित्व चाहती है, "नारी और पुरूष अपनी–अपनी जगह पूर्णत्व की खोज में प्रयत्नशील है। किन्तु खोज की हर दिशा उनेनि व्यक्तित्वों को खंडित कर रही है। परम्परागत वर्णनाओं से आज की नारी जैसे मुक्त हो रही है उसके सम्मुख नई–नई समस्याएँ उभरकर आ रही है।" इस प्रकार नारी प्रत्येक संघर्षो से गुजरती हुई दिखाई देती है।

नारी के उदात्त गुणों में त्याग, संयम, समर्पण, सेवा आदि प्रमुख है। जिसमें हिमांशु जोशी ने अपने कथा साहित्य में नारी की व्यथा, शोषण का चित्रण किया है।

१) आर्थिक विपन्नता से मजबूर नारी

'लकीर सी परछाई' कहानी सुजाता एक आत्मपीड़ित नारी है। सुजाता को उसके ही ऑफिस का मैनेजर द्वारा आर्थिक प्रलोभन देकर उसे अपनी ओर आकृष्ट करता है। उसे देर तक ऑफिस में काम करना पड़ता है, क्योंकि वह माँ की बीमारी, दफ्तर में मैनेजर का आदेश, कम वेतन में परिवार का बोझ ढोना आदि के कारण शोषण का शिकार होती है। सुजान की माँ उसकी राह देखती रहती है और कहती भी है कि, सबके ऑफिस तो सुना पाँच–छः बजे तक बंद हो जाते है, लेकिन तुम नौ–दस के पहले शायद ही कभी लौटती हो। भले घर की लड़कियों को इत्ती रात गए लौटना क्या अच्छा लगता है बिट्टो! माँ की आवाज में दबा आक्रोश, दबी वेदना, दबी बेबसी झलके बिना न रहती। स्पष्ट है कि नौकरी करनेवाली युवतियाँ का शारीरिक एवं आर्थिक शोषण होता है। माँ की बीमारी के कारण उसका मन घर पर लगा रहता है तथा माँ हमेशा बेटी की चिंता में दबी बेबसी से शाम को लौटने का इंतजार करती है।

'भेड़िए' कहानी की नायिका नन्दिता तथा उसके दफ्तर की औरते आर्थिक विपन्नता के कारण यौन शोषण का शिकार है। इनमें से बहुत सी औरते अपने सुख–चैन के लिए अपनी मर्जी से पैसों के लिए पुरूषों से शारीरिक संबंध बनाये रखती है। मिस उपाध्याय मानती है कि जिन्दगी एक व्यवसाय बन गई है। वह नन्दिता को सतर्क करती है कि, "सुमन और बूढ़ी असिस्टेन्ट सोबती के चक्कर से बचना। उनकी सोहबत में बिगड़ जाओगी।.... ऐसी कोई रात नहीं, जिसे वे घर बिताती है। परसों प्रभा कहती थी, कनॉट प्लेस के रीगल वाले बस स्टॉप पर सुमन रात के ग्यारह बजे खड़ी थी। तभी एक टैक्सी रूकी। दो आदमी पता नहीं उसे कहाँ ले गये।...... डेढ़ सौ रूपये महीने की नौकरी में दो–दो सौ की साड़ियाँ कहाँ से पहनी जाती है....?" नन्दिता को यह सुनकर आश्चर्य नही, अजीब–सा लगता है।

'न जानना' कहानी की केकी की बुआ भी आर्थिक विपन्नता के कारण अपना परिवार का खर्च चलाने के लिए देहिक संबंध बनाती है। केकी वह देर रात तक घर नहीं आती है। एक रात बाहर बारिश चल रही है। लेकिन बुआ के कपड़े सूखे हुए है। केकी एक बार बुआ को छोड़ने आनेवाली लंबी गाड़ी से तर्क लगाता है कि बुआ अपने परिवार के लिए यह सब कुछ कर रही है। यौन संबंध रखना उसकी विवशता

Dongar Kathora

हिमांशु जोशी के उपन्यासों में महानगरीय जीवन

प्रा. रविंद्र आर. खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एवं कम्प्युटर ॲप्लीकेशन
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरा, ता. यावल, जि. जलगांव

आधुनिक युग में गाँव से नगर और नगर से महानगर की ओर स्थलांतरित होने की प्रतिच्छ दृष्टिगत हो रही है। स्थानान्तरण तथा बढ़ती जनसंख्या के कारण गाँवों तथा कस्बों की अपेक्षा में महानगरीय जीवन अधिक समस्याग्रस्त होते जा रहे हैं। महानगरों को वैभव-विलासिता, भीड़ भरी सड़कें, यांत्रिकीकरण, समय के साथ चलने का अनुशासन, मशीनों की जीवन-शोषी गुर्राहट, मानव को यांत्रिक जीवन-यापन करने से मजबूर कर दिया है। महानगरों की भीड़, कोलाहल, भाग-दौड़ में उलझा हुआ मनुष्य अपरिचय, अजनबीपन तथा स्वार्थ लोलुपता का शिकार हुआ है। मनुष्य अपने त्रस्त एवं व्यस्त जीवन में स्वयं का अस्तित्व भूल चुका है। महानगरीय जीवन पर पाश्चिमात्य संस्कृति के अनुकरण से युवक-युवतियों के व्यवहार में काफी परिवर्तन दिखाई देता है। सरेआम नैतिकता की अवहेलना हो रही है। होटल, क्लब, संस्कृति द्वारा पाश्चिमात्य संस्कृति भारतीय संस्कृति पर हावी हो गई है। महानगर के लोग हर मौके पर पार्टियाँ देते है, विदेशी शराब, विदेशी मेजवान। क्लब वासना-पूर्ति के केंद्र बन गए है। नगर एवं महानगरीय जीवन की समस्याओं के संदर्भ में डॉ. माधवी जाधव लिखती है, ``पारिवारिक संबंधों में स्नेह की ऊष्मा का ऱ्हास हो जाने के कारण परिवार विघटन के कगार पर खड़े हैं। दाम्पत्य-संबंध के अंतर्गत पुराने नैतिक मानदंड टूट रहे है। संबंधों को बुहारकर फेंक देने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। परिणामतः अलगाव-बोध तलाक जैसी समस्याएँ पनप रही है। महानगरीय जीवन में जिंदगी तथा भविष्य की अनिश्चितता बहुत बड़ा अभिशाप बनकर मनुष्य को घुट-घुटकर जीने के लिए विवश कर रही है।''[1]

स्पष्ट है कि महानगरीय जीवन में मनुष्य के रक्त-संबंध भी औपचारिक तथा झूठे बन गए है। यहाँ तक कि व्यक्ति महानगरीय जीवन की विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त है, अकेलापन, अजनबीपन तथा घुटन-टूटन से मनुष्य संत्रस्त पाया जाता है। हिमांशु जोशी ने स्वयं दिल्ली जैसे महानगरीय जीवन को नजदीक से देखा एवं परखा है। इसी कारण उनके उपन्यासों में महानगरीय जीवन प्रस्तुत हैं।

`महासागर' उपन्यास में महानगरीय जीवन दिखाई देता है। उपन्यास का नायक साकेत का परिवार निम्नवर्ग का है, जो आर्थिक अभाव से जीवन-यापन करता है। पारिवारिक स्थिति सुधारने के लिए वह पढ़ाई करते-करते हौजरी मिल में छः घण्टे काम करता है तथा ट्यूशन भी करता है। महानगरीय जीवन में मनुष्य यंत्रवत जीवन जीने लगता है। साकेत की अवस्था उसी तरह है, इसी कारण दीपदी कहती है, ``सुबह से शाम तक तुम इतना काम करते हो, तो फिर सोते कब हो? बस थोड़ा-सा खाते समय सो लेता हूँ, थोड़ा-सा चलते समय, थोड़ा-सा पढ़ते समय।''[2]

इस प्रकार विभिन्न स्थानों पर काम करने से साकेत को शारीरिक आराम नहीं मिल पाता है, वह यंत्र की तरह काम में जुट जाता है। उपन्यास का प्रासंगिक पात्र दादा बाबू कोई उद्योग-धंदा करके अपनी आजीविका चलाना चाहता है। लेकिन महानगर ने वह भी छिन लिया जैसे ``दादा बाबू का सब्जी का ठेला कॉरपोरेशन की गाड़ी उठा ले गई है। अब साकेत ने हौजरी मिल से उसे बनियान बेचने का काम दिला दिया है। जितनी बड़ी बनियान उतना अधिक पैसा - दादा बाबू का पुरानी व्यावसायिक नीति यहाँ बरकरार है। वह कंधे पर ढेर सारी बनियाने लादे, गली-गली घूमता है.....।''[3] इस प्रकार महानगरों में बिना लायसंस के कोई व्यक्ति व्यवसाय नहीं कर सकता है। उद्योग-धंदो की स्पर्धा ने तथा सरकारी नोकरियों में अतिरिक्त भ्रष्टाचार, रिश्वत और सिफारिश के बिना नौकरी नहीं मिल पाती है। आधुनिक युग में महानगरों में बेरोजगारी की समस्या से मनुष्य त्रस्त पाया जाता है।

विवेच्य उपन्यास की दीपदी अध्यापिका है। पारिवारिक संबंधों में प्रेम का ऱ्हास हो जाने से परिवार से अलग एवं अकेली रहती है। माँ-बाप के निधन हो जाने से तथा भाईयों को अपने कारोबार से समय न मिलने पर इतने बड़े महानगर में दीप दी अकेली अपना जीवन निर्वाह करती है। अपने परिवार से परायापन मिलने से दीपदी साकेत से मैत्री के संबंध रखती है, वह उसे आर्थिक सहायता एवं परोपकार भी करती है। जब साकेत उसके घर नहीं आ पाता तब खाली समय में उसे अकेलापन परेशान करने लगता है।

`छाया मत छूना मन' उपन्यास के अन्तर्गत हिमांशु जोशी ने महानगरीय जीवन को संवेदनापूर्वक प्रस्तुत किया है। महानगरीय परिवेश का शोर-गुल, भीड़-भाड़ और मनुष्यों की लंबी कतारों से भरे बाजार महानगरीय जीवन के अविभाज्य अंग है। वर्तमान जीवन में यह असहाय भीड़ या शोर-शराबे का आतंक यातायात के साधनों को समय पर पाने के लिए काफी भाग-दौड़ करनी पड़ती है। महानगरीय जीवन की इस विवशता ने मनुष्य को त्रस्त बना दिया है। उपन्यास का नायक देवेन के कथन से स्पष्ट होता है कि, बड़ी भीड़ थी कालका-मेल में। कहीं तिल धरने को भी जगह न मिली। जूते के तसमें खोलता हुआ बोला, ``आदमी बोरे की तरह भरे पड़े थे... । कॉलेज के कुछ छोकरों ने किसी महिला को छेड़ा और फिर उसके कपड़े नोच लियें। लोग देखते रहे, लेकिन किसी ने कुछ न कहा। आर. पी. एफ. के जवान भी पास ही खड़े थे। सरकार नाम की कोई चीज नहीं रह गयी इस मुल्क में। बस अन्धेर है।''[4]

अर्थात स्पष्ट है कि व्यक्ति चारों ओर से असुरक्षित है। इस भीड़ एवं शोर-शराबे के आतंक से, ज्यादातर महिलाएँ असुरक्षित दिखाई देती है। आज महानगरों में मनुष्य स्वार्थलोलुपता के कारण उसके स्वभाव में परायापन, टूटन तथा संवेदनाहीन प्रवृत्ति पैदा हो गई है। इस महानगरीय जीवन की भाग-दौड़ में मनुष्य खोया हुआ लगता है। वह प्रजातंत्र में स्वयं को असुरक्षित पाता है। उपन्यास की

ISSN : 2394-2266
Dongar Kathore

MAH MUL/03051/2012 ISSN: 2319 9318 | UGC Approved Jr.No.62759 | Vidyawarta® | Special Issue February 2018 | 0206

एक छोटी-सी कंकरी हम तोड़ सकते हैं। सांप अपनी केंचुली उतार देता है किंतु सवर्ण के लिए जाति के अहम् से बाहर निकलना अपनी चमड़ी बदलने के बरोबर है। सूरजपाल चौहाण में तिरस्कृत आत्मकथा में शुरू से लेकर अंत तक तिरस्कृत होते हुए नजर आते है। आत्मकथा में वर्णित सभी प्रसंग मनुष्य को दुःखी करते है।

संदर्भ सूचि :-

१) हिंदी आत्मकथा : स्वरुप एवं साहित्य - डॉ. कमलेश सिंह

२) सृजन संदर्भ और मैं - संपा. डॉ. पी.व्ही. कोटमे

३) दलित साहित्य : अवधारणा और स्वरुप - जगन्नाथ पंडित

४) हिंदी कथा साहित्य में दलित विमर्श - डॉ. दिलीप मेहरा

५) तिरस्कृत - सूरजपाल चौहाण

□□□

65

`मोहनदास` कहानी में चिंतन के विविध आयाम

प्रा. रविंद्र रामदास खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कला, वाणिज्य एवं कम्प्युटर ॲप्लीकेशन महिला महाविद्यालय,
डोंगर कठोरा ता. यावल, जि. जलगांव

****

उदयप्रकाश की `मोहनदास` कहानी समय परिवर्तन की कहानी है। `मोहनदास` लंबी कहानी के रूप में प्रस्तुत है। उस पर सन् २००९ में फिल्म भी बनी हुई है। मोहनदास कहानी `हंस` पत्रिका में पहली बार २००६ में सीरीयल में छपने के बाद वाणी प्रकाशन द्वारा पुस्तककार में छपकर लोगों के बीच खासी चर्चा में रही है। इस कहानी पर कई प्रतिष्ठित थियेटरों ने मंचन भी किया और कहानी के अनुवाद कई भाषओं में भी प्रकाशित हो चुके है। `मोहनदास` आज के कठिन समय का सच है।

उदय प्रकाश ने कहानी के अंतर्गत अपने समय समाज तथा जीवन से मिले अनुभवों को ही व्यक्त किया है। अतः कहानी को समझने के लिए उसके कथ्य का विभिन्न दृष्टिकोणों से एवं समय तथा समाज के व्यापक संदर्भो में अध्ययन करना आवश्यक है।

दलित जीवन :- भारतीय समाज में धर्म के साथ-साथ जाति और गोत्र का महत्त्व हजारों सालों से रहा है। जिससे मुक्ति पाना असंभव है। `मोहनदास` कहानी में मुख्य पात्र मोहनदास आज के दलितों का एक प्रतिनिधि है। दलितों के स्वप्न हनन की कहानी है। ये शैक्षिक योग्यता पाने पर भी स्वप्न-भ्रष्ट दलित लोगों के अरक्षित जीवन की विडम्बनाओं की त्रासदी है। संघटित बल न होने के कारण दलित सब कही अपमान का पात्र बनता है। आरक्षण किसको किस अवसर पर देना है, इसके बारे में ठीक निर्णय अभी तक नही हुआ है।

जन-गणना में और सरकारी कागजातों में अलग-अलग जाति लिखकर भी सवर्ण अवर्णा को आरक्षण की सुविधा से दूर भागता है। मोहनदास के बारे में भी यही हुआ, ''गाँव में वैसे भी कबीरपंथी बसोर-पनिहा नीची जात के माने जाते थे। ये अनुसूचित जाति के है या आदिवासी या आदिम जनता, अभी तक सरकारी गजेट

Dongar Kathore

RAK 17-18

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue 50 : Literature : New Trends and Tendencies
साहित्य : नवीन प्रवृत्ती आणि प्रवाह साहित्य : नव प्रवृत्ति एवं प्रवाह
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
March 2018

प्रभा खेतान के काव्य में नारी

प्रा. रविंद्र रामदास खरे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
कला, वाणिज्य एवं कम्प्युटर ॲप्लीकेशन
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरा
ता. यावल, जि. जलगाँव

हिंदी साहित्य के उत्तरशती में अनेक महिला साहित्यकारों ने नारी संबंधी विभिन्न विषयों को लेकर लेखन कार्य किया हैं। उन्होंने पहले से अधिक सशक्त होकर नारी की स्थिति को मुखरित किया है।हिंदी काव्य के क्षेत्र में कई कवयित्रियों ने भी नारी वासना का चित्रण किया है। नारी के विभिन्न पहलुओं को अपने काव्य द्वारा उजागर करने का प्रयास किया है।इनमें प्रभा खेतान एक प्रमुख हस्तक्षार के रूप में उभरी हैं। उनके काव्य के केंद्र में स्त्री हैं उन्ही के शब्दों में "मेरी हर कविता,हर उपन्यास,हर वृतांत के केन्द्र में स्त्री हैं।मैं दुनिया के जिस किसी कोने में गई, मैंने स्त्री को खोजा हैं।उसे जानने की चेष्टा की हैं। उस देश की स्त्री कैसी हैं? वह कैसे कपडे पहनती हैं ? उसकी सामाजिक भूमिका का महत्व हैं?क्या स्त्री अधिकारों के प्रति वह सजग हैं?क्या उसके देश में स्त्री मुक्ति की गुहाए लगायी जा रही हैं?क्या वहाँ की लेखिकाएँ,वहाँ की विशिष्ट बुध्दिजीवी महिलाएँ स्त्री का प्रतिनिधित्व करने की चेष्टा करती है।"१इसलिए प्रभा खेतान ने अपने साहित्य में नारी जीवन की त्रासदी को उभारा हैं,विशेष रूप से वे नारी-शोषण के प्रति चिंतित है।नारी सदैव परिवार और समाज के प्रति समर्पित हैं,परंतु वही समाज और परिवार उसका अपमान एवं शोषण करता है।प्रभा खेतान के काव्य में नारी के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना व्यक्त हुई है। उन्होंने नारी-समाज की विविध समस्याओं का चित्रण किया है।जिनका अध्ययन विविध आयामों के साथ किया जा सकता है।

पारिवारिक स्थिति :-

भारतीय संस्कृति में जीवन व्यथित करनेवाली नारी अपने परिवार के प्रति कर्तव्य दक्ष रहती है।वह घर परिवार की दैनिक कार्य में इतनी व्यस्त रहती है कि उसका निजि कार्य भी वह कर नही पाती तथा प्रकृति का आनंद उटा नही सकती वह यही निवेदन करती है कि-

**"मुझे तो घर का बहुत काम है।
कपडे सुखाने है,
मेरे चूल्हे की लकडियाँ गीली हैं।
बच्चा सर्दी से खाँसता है,
तुम्हारे साथ-साथ
कैसे बनूँ पारवी**

Dongar Kathora

SBD 17-18 (11)

38.

भारतातील महिलांवरील अत्याचार एक समस्या

डॉ.सुरेश श्री. ढाके.
विभाग प्रमुख अर्थशास्त्र
कला वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन,
महिला महाविद्यालय,डोंगर कठोरे
ता यावल जि जळगांव.

राजरत्न भिमराव पोहेकर
संशोधक विद्यार्थी
उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ जळगांव

प्रस्तावना :

एकविसाव्या शतकाचा विचार केला असता भारत देशात विज्ञान आणि तंत्रज्ञानात वाढ होतांना दिसून येते. परंतु विज्ञानाचा विकास होतांनाच देशात इतर ही घटना मोठ्या प्रमाणात घडवून येत आहे. या घटनांमधील महत्वाची व संवेदनशील घटना म्हणजेच देशात महिलांवर होणारे अत्याचार होय. भारत देशाने संविधानिक मार्ग अवलंबिला आहे. व त्याच संविधानामार्फत अनुच्छेद १५ द्वारे निर्धारीत करण्यात आले की, भारतीय नागरिकत्व असलेल्या कोणत्याही व्यक्तीला धर्म, नस्ल, जाती, लिंग, जन्म या आधारे त्यांच्या अधिकारापासून वंचित ठेवू शकत नाही.

भारतीय संविधानाद्वारे प्रत्येक नागरिकाला समानता आणि अभिव्यक्ती स्वातंत्र बहाल करण्यात आले आहे. परंतु राज्यघटनेने दिलेली समानता काही कर्मठ आणि पुरूषप्रधान संस्कृती जपनारे लोक हिसकावण्याचा प्रयत्न करीत आहे. इथल्या मनुवादी आणि पुरूषप्रधान संस्कृतीने नेहमीच स्त्रियांना दुय्यम वागणूक दिली आहे. समाजातील काही लोकांची अशी मानसिकता झालेली आहे की स्त्री फक्त उपभोगाचे साधन आहे अशा विचारसरनीने स्त्रियांना शिक्षण, सत्ता, संपत्ती या सर्वच अधिकारापासून वंचित ठेवण्यात आले. धार्मिक कायद्याचा आधार घेवून स्त्रियांवर अधिकाधिकच बंधने लादण्यात आली यामध्ये सतीप्रथा, बालविवाह, मासिक धर्माची अपृश्यता अशा अनेक अन्यायकारक चालीरिती व वर्तमानात होणारे शारिरीक व मानसिक अत्याचार यामुळे देशातील स्त्रियांचे अवघे आयुष्यच करपून टाकले आहे.

मागील काही कालखंडात स्त्रियांवर होणारे सतत अत्याचार ही खुप चिंतेचा विषय ठरत आहे. या अत्याचारामध्ये विनयभंग, छेडछाड, बलात्कार, खून, हुंडाबळी, कौटूंबीक हिंसा, वेठबिगारी, बळजबरी वेश्या व्यवसाय, जातीय–वर्गीय भेदभाव, अनादर, अपमान, शिवीगाळ अशा अनेक प्रकारच्या अन्याय/अत्याचारांना स्त्रियांना बळी पडावे लागते. शारिरीक अत्याचाराच्या तर दिवसेंदिवस घटना घडतच आहे. जगात सर्वात मोठी लोकशाही असलेल्या देशात अशा घटना घडत आहे ही शरमेची बाब आहे.

- **उद्दिष्टे :**

१. भारतीय महिलांवर झालेल्या अत्याचाराचा अभ्यास करणे.

२. भारतीय महिलांवर जवळील लोकांनी केलेल्या लैंगिक अत्याचाराचा अभ्यास करणे.

- **संशोधन पध्दती:**

प्रस्तुत संशोधन पेपर मध्ये द्वितीय साधन सामग्रीचा अभ्यास करण्यात आला आहे. या द्वितीय साधन सामग्रीमध्ये शासनाचे अहवाल, जनगणना अहवाल, राष्ट्रीय पातळीवरील मासिके, विविध नियतकालिके, दैनिके, वृत्तपत्रे व इंटरनेट संकेतस्थळे इ. आधार घेण्यात आला आहे.

- **भारतात वेगवेगळ्या अत्याचाराला बळी पडलेल्या महिला:**

भारत देशात आज आपणास असे दिसून येते की स्त्री पुरूषाच्या तुलनेत कोणत्याही क्षेत्रात कमी नाही परंतु असे असले तरी स्त्रियांवर अत्याचाराच्या घटना सतत देशात कुठेना कुठे घडतच आहे. महिलांवर एक स्त्री म्हणून तुच्छतेच्या बुध्दीनेच बहुतांशी अत्याचार घडतांना दिसून येतात. काही लोकांची अशी मानसिकता आहे की स्त्री कमकुवत आहे ती

Dongar Kathore

SBD-17-18

कृषी विपणन आणि किमती संदर्भात पाशा पटेल यांचे योगदान : एक व्यष्टी अध्ययन

सुरेश भास्कर ढाके†
सहाय्यक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, ता. यावल, जि. जळगाव.

भीमराव पांडुरंग उगले††
सहाय्यक प्राध्यापक, कालीकादेवी कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, शिरूर कासार, जि. बीड - ४१३२४९.

प्रस्तावना

भारतात शेतकऱ्यांच्या प्रश्नांवर वैयक्तिक एखाद्या व्यक्तीने केलेल्या सामाजिक कार्याचा अभ्यास फारच कमी प्रमाणात झालेला दिसून येतो. सामाजिक कार्याच्या नावाखाली झालेल्या अभ्यासात व लिखाणात सामाजिक कार्याचा अभ्यास केला जातो. केवळ व्यक्तिचरित्रांचा अभ्यास म्हणजे सामाजिक कार्याचा अभ्यास नाही, तर सामाजिक कार्याच्या अभ्यासात त्यांचे विचार, योगदान, भूमिका, धडपड व त्यांच्या परस्परांवरील प्रभाव इत्यादींचा अभ्यास अंतर्भूत असतो. अशा अभ्यासातून राजकारण, राजकीय पक्ष, राजकीय संस्था यांच्या जडणघडणीबरोबरच सामाजिक कार्याचे यशापयश निगडित असते. अशा सामाजिक कार्यात संघटना, वर्ग, जहाल व मवाळ नेतृत्व, उदारमतवादी आणि लोकशाही इत्यादी छटा असतात, म्हणून सामाजिक कार्याच्या नेतृत्वात काही गुण-वैशिष्ट्येदेखील असतात; परंतु सर्वांत प्रेरक घटक कोणता असेल, तर तो म्हणजे निःस्वार्थीपणा होय. शेतकऱ्यांच्या समस्यांच्या ज्वलंत प्रश्नांवर निःस्वार्थीपणाने कार्य करणारे शेतकरी नेते महाराष्ट्रात नव्हेतर भारतात नगण्य प्रमाणात आहेत. पाशा पटेल हे त्यापैकीच एक नाव आहे.

भारताच्या राजकीय, आर्थिक आणि सामाजिक जीवनात शेतकऱ्यांच्या कार्यामध्ये स्वातंत्र्यपूर्व काळापासून तर आजपर्यंत अनेक शेतकरी नेत्यांनी वैचारिक भूमिका निर्माण केली व मार्गदर्शन म्हणून कार्य केले, तर काहींनी प्रत्यक्ष शेतकऱ्यांचे नेतृत्व करून देशातील शेतकऱ्यांच्या ज्वलंत प्रश्नावर लढा देऊन शेतकऱ्यांचे आर्थिक आणि सामाजिक परिवर्तन करण्याचे कार्य केले व सद्यःस्थितीला काही करत आहेत. काही नेते आपले विचार, त्याग, जिद्द व चिकाटीतून शेतकऱ्यांचे प्रश्न भारतभर नव्हे तर जगासमोर मांडत आहेत. स्वातंत्र्योत्तर भारतात रचनात्मक कार्यातून देशाची प्रगती आणि शेतकऱ्यांची समृद्धीसाठी प्रयत्न अनेक शेतकरी विचारवंतांनी किंवा शेतकरी नेते सद्यःस्थितीला करत आहेत. ह्या शेतकरी विचारवंत नेत्यांमध्ये पाशा पटेल यांचीदेखील गणना केली जाते. संशोधन अभ्यासाचा विषय या दृष्टीने त्यांच्या सामाजिक कार्य, शेतकऱ्यांच्या कृषी विपणन व शेतमाल किंमत संदर्भातील समस्याविषयक केलेले कार्य, विचार आणि भूमिकेविषयी अभ्यास करण्यापूर्वी त्यांचे बालपण, विद्यार्थिदशेत शेतकरी नेते होण्यासाठी मिळालेली प्रेरणा, स्फूर्ती आणि मार्गदर्शन, या मागील पार्श्वभूमी व स्वरूप

† आजीव सभासद क्र. : १०९५, भ्रमणध्वनी : ९४२०९३९५४४, ई-मेल : sbdhake33@gmail.com
†† आजीव सभासद क्र. : १६७८, भ्रमणध्वनी : ९४०५०३०४२७, ई-मेल : bhimrao.beed@gmail.com

VRM 17-18 - ①

दीपनगर औष्णीक विद्युत केंद्रातील ठेकेदारी पध्दतीने काम करणाऱ्या कामगारांची आर्थिक व सामाजिक स्थिती

डॉ. विनोद रामा मोरे
कला व वाणिज्य व कॉम्प्युटर
ॲप्लीकेशन महिला महाविद्यालय,
डोंगर कठोरे, ता. यावल, जि. जळगांव
मो.नं. 7709118380

प्रस्तावना

आधारभूत संरचनात्मक सोयींना देशाच्या अर्थव्यवस्थेत फार महत्वाचे स्थान असते. कृषी व औद्योगिक क्षेत्राच्या विकासावर अर्थव्यवस्थेचा विकास प्रत्यक्षपणे अवलंबून असतो. मात्र त्या क्षेत्राचा विकास हा त्या देशातील सेवाक्षेत्र म्हणजे पाणीपुरवठा, ऊर्जा, वीजपुरवठा, वाहतुक व दळणवळण, व्यापार, विज्ञान व तंत्रज्ञान, शिक्षण व आरोग्य आदी सेवा किती विकसीत आहेत यावर अवलंबून असतो. नियोजनबध्द विकासाच्या प्रयत्नात पहिल्या योजनेपासूनच आधारभूत संरचनेचे विकासातील महत्व लक्षात घेऊन त्या सर्व सोयींचा जलदगतीने विकास करण्यावर भर देण्यात आला. जवळ-जवळ प्रत्येक योजनेत ५० टक्के पेक्षा जास्त खर्च आधारभूत संरचनेवर केलेला आहे. त्यामुळे संरचनात्मक सोयींमध्ये मोठ्या प्रमाणावर वाढ झालेली आहे.

शेती व औद्योगिक विकासासाठी प्रामुख्याने ऊर्जा महत्त्वाची आहे. उपलब्ध स्त्रोतात वीज ही अत्यंत महत्त्वाचा स्त्रोत आहे. कारण वीजेशिवाय शेतीच्या उत्पादनात वेगाने वाढ होऊ शकत नाही. कारखानदारी क्षेत्राच्या विकासासाठी देखील वीज हा अत्यंत महत्त्वाचा घटक आहे. त्याचबरोबर मानवाच्या राहणीमान व जीवनमानात वाढ करण्यासाठी वीज हा घटक महत्त्वाचा आहे. एकंदरीत आर्थिक विकासाच्या प्रक्रियेत वीजेला अत्यंत महत्त्वाचे स्थान आहे.

आर्थिक विकासाच्या दृष्टीने शेती, उद्योग, सेवा क्षेत्रात विद्युत निर्मितीला अतिशय महत्त्वाचे स्थान आहे. विकासाच्या दृष्टीने ऊर्जा ही एक अत्यंत महत्वपूर्ण पायाभूत शक्ती आहे. जगातील विकसीत देशांच्या विकासात ऊर्जा स्त्रोतांचे योगदान खुप मोठे आहे. या उलट ज्या देशांकडे ऊर्जा स्त्रोतांचा अभाव आहे त्या देशांच्या आर्थिक विकासाचा वेग मंद आहे. देशाचा जलद गतीने विकास होण्यासाठी ऊर्जेच्या स्त्रोतांचा पर्याप्त वापर होणे आवश्यक असते. विद्युत शक्तीचा उपयोग उद्योग, कृषी आणि वाहतूक या क्षेत्रांमध्ये व्यापारी दृष्टीने होतो. तर व्यापारेत्तर उपयोगामध्ये घरगुती दिवाबत्ती, स्वयंपाक पाणी, रेफ्रिजरेटर, वातानुकूलित उपकरणे या सारख्या यांत्रिक साधने यांचा अंतर्भाव होतो. लोकसंख्येची वाढ आणि रोजच्या जीवनात आधुनिक साधनांचा वाढता उपयोग यामुळे दिवसेंदिवस घरगुती उपयोगासाठी वीजेची मागणी वाढत आहे. वीजेची वाढती मागणी पूर्ण करण्यासाठी भारतात औष्णिक विद्युत प्रकल्प, अणु ऊर्जा प्रकल्प व अक्षय ऊर्जा या स्त्रोतांच्या माध्यमातून वीज निर्मिती केली जाते. महाराष्ट्रात मोठ्या प्रमाणात औष्णिक विद्युत प्रकल्पातून वीज निर्मिती होत आहे.

खान्देश भूषण म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या जळगांव जिल्ह्यातील भुसावळ तालुक्यातील दीपनगर येथील वीज निर्मिती केंद्राने वीज निर्मितीत उच्चांक प्रस्थापित करुन या भागावर आपली वेगळी मुद्रा उमटविली आहे. प्रगती, विस्तार, रोजगार, शेतीचा विकास असा चौफेर ठसा या प्रकल्पाने उमटविला आहे. दीपनगर हे सुर्यकन्या म्हणून परिचित तापी नदी काठावरील मद नगराईत वसले आहे. आशियायी महामार्ग क्र. ४६ ला लागून व भुसावळ शहरापासून ८ कि.मी. वर सुमारे ७२९ हेक्टर जमिनीवर हे वीज केंद्र विस्तारले आहे.

केंद्रातील संच क्रमांक १ ची स्थापना १७ जुलै १९६८ मध्ये करण्यात आली आहे. या संचाची स्थापीत क्षमता ६२.५ मेगावॅट (सध्या हा संच बंद स्थितीत) आहे. संचासाठी [illegible] कोटी रुपये गुंतवणूक झाली आहे.

Dongar Kathore

SMB 18-19 D

मराठी वाङ्मय : संशोधन क्षेत्र

प्रा.डॉ. शकुंतला एम. ारंबे
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, ता. यावल, जि. जळगांव

'रिसर्च' या इंग्रजी शब्दासाठी 'संशोधन' हा शब्द वापरला जातो. सर्च म्हणजे शोधन 'रिसर्च' म्हणजे पुनः केलेले शोधन हे शोधन एक प्रकारचे मुल्यांकन असते. म्हणून पुनः केलेले शोधन या शब्दासमुहासाठी 'पुनर्मुल्यांकन' हा शब्द वापरता येतो. मराठी साहित्यातील विविध विषयात आज संशोधन होत आहे. त्यातून वेगवेगळया विचारसणी निर्माण होत आहेत. विविध विद्याशाखांच्या संशोधनामागे मानवी मन व मानवी जीवन समृध्द करण्याची प्रेरणा असते. संशोधनातून नव्या नव्या शोधपध्दती व शास्त्रे जन्माला येऊन संशोधन प्रक्रिया अखंडपणे चालु राहते. मराठी वाङमयाचे संशोधन ग्रंथालयनिष्ठ संशोधन आणि सर्वेक्षणात्मक संशोधन अशा दोन स्तरांवर झालेले आहे.

वाङमयाच्या संशोधनात वाङमय हाच प्रमुख दस्तऐवज असतो. त्यातून वाङमयाचे मौखिक संशोधन होत असते. साहित्याचे संशोधन मुलतः वेगळ्या प्रकारचे असते. कारण साहित्याची प्रकृती मुळात वेगळी असते. प्रत्येक व्यक्ती भिन्न स्वभावाची व गुणधर्मांची असते. मानवी मन हे गुंतागुंतीचे आहे. वाङमयकृती ही व्यक्ती निर्मित असल्याने ती गुंतागुंतीची आहे. कलाकृतीमागे विविध प्रेरणा व संस्कार असतात. त्यात समाज- जीवनाबरोबरच व्यक्तीच्या संस्कारांचाही अंतर्भाव होतो. साहित्यात आत्मनिष्ठता असते. मानवी बुध्दीचा आणि संवेदनशीलतेचा नितांत रमणीय विलास वाङमयात झालेला दिसतो.

संशोधन पध्दत :-

वाङमयाच्या संशोधनाची मुळ बैठक विमर्शक विचार पध्दतीची म्हणजे शास्त्रीय संशोधनाचीच आहे. प्रबंधातून जे संशोधन अपेक्षित असते ते वस्तुनिष्ठ (Objective) व विगमन (Inductive)
पध्दतीने व्हायला हवे. वाङमयाच्या संशोधनामध्ये अभ्यास विषयाचा सांगोपांग विचार, समीक्षेची सार्थदृष्टी विचारशक्ती, विषयाची स. पी. अध्ययन, मनन, चिंतन आणि निर्मळ शोधकता प्रकट होत असते. त्यासाठी संपन्न अभिरुची, विविध ज्ञान शाखांचा परिचय आणि प्रखर जिज्ञासा आवश्यक असते. वरील विविध गुणांच्या संयोगातून एखादा संशोधक आपला शोध पूर्ण करीत असतो.

संशोधनाचे दोन प्रकार आहेत.

१) लोक ज्ञात नसलेला ग्रंथ किंवा अज्ञात संहिता प्रकाशात आणणे व ती संहिता नव्याने उपलब्ध करून देणे.

२) उपलब्ध असलेल्या ग्रंथातील आशयाचा त्यातील विचारसणीचा काही नवा अन्वयार्थ लावणे, त्याचे स्वतंत्र अर्थशोधन करणे.

Dongar Kathora

SMB 18-19 (2)

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 73 :
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
November-2018

बारोमास - होरपळून निघणाऱ्या कृषीकेंद्रित जीवनाची करुण गाथा

डॉ. शकुंतला एम.भारंबे
कला,वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन महिला
महाविदयालय, डोंगर कठोरे . ता.यावल जि. जळगाव.
Mob No.- 9423279734
Email- smbharambe37@gmail.com

१९७५ नंतरचे महत्वाचे ग्रामीण लेखक म्हणून सदानंद देशमुख यांचे नाव उल्लेखनीय ठरते. कथा, कविता, कादंबरी या वाङ्मय प्रकारांना समर्थपणे हाताळणारे सदानंद देशमुख यांच्या संपूर्ण जीवननिष्ठा कृषीजीवनाशी जुळलेल्या आहेत.वयाच्या अवघ्या ४४ व्या वर्षी त्यांच्या 'बारोमास' कादंबरीला साहित्य अकादमी पुरस्कार मिळाला.'तहान' कादंबरी लिहून पाण्याचा प्रश्न मांडणाऱ्या सदानंद देशमुख यांनी 'बारोमास' या कादंबरीत ग्रामीण वास्तवाच्या अनेक बाजूंना स्पर्श केला आहे.'बारोमास' ही ग्रामीण शेती व्यवस्थेच्या पडझडीची, बदलाची, वाताहतीची, घुसमटीची आणि शेतकऱ्याच्या आत्महत्येची कहाणी आहे. या कादंबरीत भारतीय कृषीजीवनाचे व त्यातही विदर्भातील कृषी व्यवस्थेचे कटू सत्य सदानंद देशमुख यांनी व्यक्त केले आहे ते असे - "आधीचे पेरले तर पिकत नाही आणि पिकले तर विकत नाही. अशा अस्मानी सुलतानी गर्तेत शेतकरी वर्ग सैरभैर झाला आहे. त्याला सावरायचे असेल तर शेतमालाचा निर्यातीवर भर देणे जसे आवश्यक आहे तसेच अर्थव्यवस्थेचे विकेंद्रीकरणही आवश्यक आहे. त्यासाठी भविष्यात कारखाने व उदयोगधंदे निर्माण झालेच तर ते निग्रहाने ग्रामीण भागात निर्माण व्हावेत.तेथील प्रक्रीया केंद्रातून शेतकरी कुटुंबातील निदान एकाला तरी अर्थार्जनाची शाश्वत मासिक सोय उपलब्ध होईल, अशी व्यवस्था करणे आवश्यक आहे. त्यामुळे विफल मानसिकतेच्या शिथिल बेकार पिढीला नवी दिशा गवसू शकेल; अन्यथा शेतकऱ्याच्या मुलांचा हा बेकारीचा आणि वैफल्याचा लोंढा कोणत्या दिशेला भरकटत जाईल ते सांगता येणार नाही. आधीच दूरचित्रवाणीच्या विविध वाहिन्यांवरुन शहरी भागाचे, तेथील धनिक वर्गाचे भौतिक सुखसोयींनी युक्त असे भपकेबाज व वैभवशाली जीवन हा तरुण हपापल्या मनाने पाहतो आहे. त्यातून त्याच्या मनात स्वतःच्या जगण्याबद्दल आणि परिसराबद्दल न्यूनगंड निर्माण व्हावा असे वातावरण सामाजिक पर्यावरणात निर्माण झाले आहे. शेतकरी कुटुंबातील स्त्रीची वेदनाही काळजाच्या चिंध्या करणारी आहे."

खेडयातील सुशिक्षित बेरोजगार तरुणांच्या व्यथा -

'बारोमास' या कादंबरीतून नानू आजा, सुभानराव आणि नायक एकनाथ या शेतकरी कुटुंबकथेच्या माध्यमातून ग्रामीण भागातील शेतकऱ्यांच्या विविध समस्या व्यक्त झाल्या असून बेरोजगार एकनाथची ससेहोलपट प्रखरपणे मांडलेली आहे. एकनाथ हा कादंबरीचा नायक एम.ए. बी.एड. आहे, सुभानरावांनी त्याला अत्यंत कठीण परिस्थितीत शिकविले आहे. शेती म्हणजे आतबट्ट्याचा व्यवसाय हे सुभानरावांच्या लक्षात आल्याने आपल्या मुलांच्या चांगल्या भवितव्याचे स्वप्न त्यांनी जोपासले. एकनाथला एका महाविदयालयात प्राध्यापकाची नोकरी मिळण्यासाठी लाख रुपये हवे असतात पण ते तो भरु शकत नाही म्हणून ती संधी हुकवावी लागते. मुलगा शिकला सवरलेल्या व होतकरु आहे. आता नाही तर पुढे नोकरी लागणारच या आशेवर एकनाथची अवस्था अधिकच केविलवाणी होऊन जाते. तिच्या भौतिक गरजाही पूर्ण होत नाही त्यामुळे ती वैतागते. शेती विकून एकनाथच्या नोकरीचे पैसे भरावे आणि या दरिद्री कुटुंबातून बाहेर पडावे असे अलकाला वाटते पण त्यासाठी सुभानराव तयार नसतो त्यामुळेच नोकरदाराने शेतकरी कुटुंबात मुलगी देऊ नये असे तिला जाणवते म्हणूनच आपल्या दिरासाठी तिच्या नात्यातले आलेले स्थळ परतवून लावते. तिला मन मारुन तणावग्रस्त जीवन जगावे लागत असल्याने एकनाथचा तिला तिरस्कार वाटतो. शेती असूनही पराभूत जीवन शेतकऱ्याच्या वाट्याला आलेले असते. त्यातच श[illegible]लेल्या घराण्यांतील अनेकांचा खेडयातील एकनाथच्या

SMB 18-19(3)

Power of Knowledge Peer Review Journal, Volume : II, Issue : III, Oct. to Dec. - 2018 ISSN 2320- 4494

मराठी दलित कविता

प्रा.डॉ. शकुंतला एम.भारंबे
कला,वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे .
ता.यावल जि. जळगाव

मनातील सव भावना अभिव्यक्त करण्याचे उत्तम साधन म्हणजे कविता. दलित कविता ही फुले-आंबेडकरी विचारांच्या जाणिवेतून साकार झालेली आहे. सामाजिक भानातून ती प्रकट झालेली असल्याने जाणिवगर्भता हे तिचे वैशिष्यच आहे. सामाजिक, सांस्कृतिक जीवनाचे दर्शन या कवितेने घडविले आहे. साठोत्तरी कालखंडात मराठी साहित्याचे वर्तुळ सपाटून बिस्तारणारा दलित साहित्य प्रवाह निर्माण झाला आणि शेकडो वर्षांच्या वेदनेचे दुःख मुकाटपणे सहन करणाऱ्या जीवघेण्या जाणिवा विद्रोहातून कवितेच्याव्दारे व्यक्त होऊ लागल्या.

यंबक सपकाळे यांच्या घ्सुरुंगड सारख्या काव्यसंग्रहाने पारंपारिक व्यवस्थेला विलक्षण हादरा दिला. ज्या संस्कृतीने इथल्या दलितांना सदैव अक्षरशत्रू ठेवले, मानवतेच्या अभावी पिचत ठेवले त्या संस्कृतीला इथल्या दलितांची जाणीव झाली नाही.

नागडा आलो
पण इथेही नागवला गेलो
समाजपुरुषाच्या अहंकाराने
हे संस्कृतीप्रिय देशा
माझा झाकताच आला नाही

अन्यायी परंपरेच्या विरोधात त्यांनी आवाज उठविला. इथल्या परंपराधिष्ठित समाजपुरुषाच्या दगडी छातीवर कितीही डोके आपटून रक्तबंबाळ करुन घेतले तरी त्या जखमेवर आपल्या स्वतःलाच फुंकर घालावी लागेल. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या क्रांतीकारी विचारांची आठवण त्यांची कविता करुन देते. त्यांचे मन नेहमी अवमान, अन्याय सोशीत जगले त्यामुळेच त्यांच्या कवितेतील मुख्य स्वर व्यथावेदनेचा आहे. डाफ. आंबेडकरांच्या क्रांतीकारी विचारांमुळे त्यांच्या दडपलेल्या मनातही एक तेजस्वी ज्योत तेवत राहिती. ती त्यांना अस्वस्थ करते. दलित मन जागे होऊन विचारत आहे की आमच्यावर शतकानुशतके झालेल्या अन्यायाबद्दल एक अवाक्षरही तुम्ही काढले नाही. त्यासाठी स्वत्त्वाचे भान येणे फार आवश्यक आहे. आपल्या उद्धारासाठी आणखी कोणीतरी प्रेषित येईल म्हणून वाट पाहणाऱ्या आपल्या बांधवांनाउद्देशून कवी म्हणतात -

हे अभ्यागतांना
जागवा तुमच्यातील माणूस तुम्हीच स्वतः
त्यातून उगवेल एखादी पहाट
नवतेजाची
माणसांच्या महानतेची

आत्मतेज जागवा आणि आपणच आपले भाग्यविधाते व्हा. असा संदेश कवी या कवितेतून देतात.

नामदेव ढसाळांची कविता सर्वसामान्य वाचकाला विशेषतः पांढरपेशा वाचकाला चक्रावून टाकणारी आहे. त्यांच्या कवितेतील जग पांढरपेशा जगाच्या सीमेपलीकडे सुरु होते. घोलपीठाड या काव्यसंग्रहाच्या प्रस्तावनेत विजय तेंडूलकर

College of Arts Com. & Science, Dongar Kathore

IJCRT
ISSN 2454-7719
International Journal of Computer Research & Technology
** A Peer Reviewed Journal **
Vol - 5 Issue 1, Jan-Jun 2019

Paper ID: Lang-03

माहिती तंत्रज्ञान आणि मराठी भाषा

प्रा.डॉ. शकुंतला मिठाराम भारंबे

कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे

Email- smbharambe37@gmail.com

भाषा हे संदेशवहनाचे महत्त्वाचे माध्यम आहे. संदेशवहनामुळेच भाषेची देवाण-घेवाण होत असते. समाजातील सर्व स्तरातील लोकांपर्यंत भाषेच्या माध्यमातून विचारांचे आदान-प्रदान करून जगातील ज्ञानाची कवाडे माहितीतंत्रज्ञानामुळे खुली झाली आहेत. मुद्रित माध्यमांपेक्षा हे माध्यम खूप प्रभावी ठरले आहे. आजच्या आधुनिक युगात कम्प्युटरने एक प्रकारे क्रांतीच घडवून आणली आहे. माहिती तंत्रज्ञानात मराठी भाषा देखील आपले कार्य करीत आहे. असे समजले जाते की कम्प्युटर केवळ इंग्रजी भाषेच्या संदर्भातच काम करतो परंतु तसे नाही. कम्प्युटर इंग्रजी भाषेसोबतच मराठीसारख्या देवनागरी लिपीतील इतर भाषांमध्येही काम करतो. आजमितीला तरी जगाची ज्ञानभाषा आणि संपर्क भाषा म्हणून इंग्रजी भाषेला महत्त्वाचे स्थान आहे. त्यामुळे अनेक महत्त्वाच्या तंत्रज्ञानाचा शोध आणि प्रगती इंग्रजी भाषेतून झाली. यात संगणकाचा देखील समावेश होतो. संगणकाची निर्मिती प्रगती झपाट्याने होण्यामागचे एक महत्त्वाचे पण अप्रत्यक्ष कारण रोमन लिपी हे देखील आहे. रोमन लिपी ही वर्णात्मक आहे. युनिकोडचा वापर करून संगणकावर मराठी वापरता येते.

आज संगणक युगात मराठीला जागतिक स्तरावर विस्तार पावण्यासाठी चांगल्या संधी निर्माण झाल्या आहेत. अगदी अलिकडे संगणकावर मराठी हे इंग्रजी भाषेसारखे रोमन लिपीतून लिहावे लागायचे आज सॉफ्टवेअरच्या मदतीने संगणकावर देवनागरीत लिहिता येणे शक्य झाले आहे. युनिकोडमुळे तर ते आणखीनच सोपे झाले आहे. युनिकोड प्रमाणित करून व संगणकाचे मराठीकरण करून युनिकोड फॉंटमुळे इंटरनेटवरील मराठी भाषेला अस्तित्व प्राप्त झाले आहे. माहिती तंत्रज्ञान क्षेत्राचा विस्तार झाल्याने छपाई क्षेत्रातही टंकलेखन यंत्राऐवजी संगणकाचा वापर सुरु झाला. सुंदर छपाईसाठी संगणकीय लिपीसंच (फॉंट) विकसित केले. पुढे आणखी टंकलेखन करून जाणे यासाठी विविध प्रकारचे कळफलक यासाठी वापरण्यात येऊ लागला. मराठी फॉन्टमुळे बोलायचे झाले तर इन्स्क्रिप्टची श्री लिपी, अंकुर श्रेणीतील फॉंट, सौदिकचे योगेश, सुरेश हे फॉंट, कृतीदेव, शिवाजी, योगेश, चाणक्य, यश यासारखे अनेक प्रकारचे फॉंट वापरून संगणकावर मराठी भाषेतील मजकूर लिहिता येतो. मराठीचा वापर करतांना संगणकावर मराठी फॉंट स्थापित करावा लागतो. इंटरनेटवर मराठी अक्षरे नीट दिसायची असतील तर पाहणाऱ्याच्या संगणकावर असा फॉंट असणे जरुर असते. त्यामुळे मराठी भाषेतून संकेत स्थळ (वेबसाईट) असेल तर त्या संकेतस्थळावर वापरलेला फॉंट डाऊनलोड करावा लागतो. तो आपल्या संगणकावर स्थापित केल्याशिवाय संकेतस्थळावरील माहिती वाचता येत नाही. साहजिकच या संकेतस्थळावरून तो पाहणाऱ्याच्या दर्शक पडद्यावर कार्यान्वित व्हावा असे डायनॅमिक फॉंट्स तंत्रज्ञान विकसित करण्यात आले.

विकिपीडिया सारख्या जागतिक ज्ञानकोशात हजार भाषांच्या बरोबरीने मराठीतून ज्ञानसंक्रमण करण्याचे माध्यम खुले झाले आहे. मायक्रोसॉफ्टने संगणकावर मराठीतून सर्व प्रकारचा पत्रव्यवहार, माहितीची साठवणूक, हिशेब ठेवण्याची सुविधा उपलब्ध करून दिली आहे. मराठी-इंग्रजी शब्दकोश, शुद्धलेखनाची आज्ञावली आता संगणकाच्या पडद्यावर इंटरनेटच्या माध्यमातून जगातल्या कुठल्याही कोपऱ्यात आता वाचता येतात. विशेष म्हणजे पूर्वी मराठी साहित्य वाचण्यासाठी संग्रही करावे लागायचे तेच मराठी साहित्य किंवा भाषेबाबतची माहिती गुगलवर शोध घेऊन मिळते पण विशेष विषयासाठी खास साइट असेल तर ते अधिक सोपे होते. आज मायबोली, मराठी सृष्टी, मराठी साहित्य या वेबसाइट्स अशा प्रकारचे काम करताहेत. यामुळे घरबसल्या जुने-नवे साहित्य वाचायला मिळत आहे. इंटरनेट माध्यमातून साहित्याचे जतन झाले आहे. मराठीला ज्ञानकोश आणि अन्य कोशांची मोठी परंपरा आहे. एनसायक्लोपीडियाच्या व विसाव्या शतकात जे ज्ञानकोश मराठीत आले त्याच धर्तीवर त्याहून अधिक लेखांचे विषय आलेले आहेत. मराठीचा विकिपीडिया जगाचे ज्ञान देऊ शकेल इतके विषय मराठी ग्रंथालयामध्ये जमा आहेत. युनिकोडने

Dongar Kathore

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal ISSN : Febr
Impact Factor (SJIF) - 6.261 | *Special Issue 109 :* Role of Social Reformers in Nation Building

लोकसाहित्यातील सामाजिकता

– डॉ. शकुंतला एम. भा
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन महिला महाविद्यालय
डोंगर कठोरा ता. यावल, जि.जळगांव

मौखिक परंपरेने चालत आलेल्या लोकगीतांच्या निर्मितीत आणि प्रचलनात स्त्रियांचा फार महत्वाचा वाटा आहे. स्त्री ही समाजाचा एक घटक आहे. समाजाच्या संस्कृतीच्या जडणघडणेत तिचा फार मोठा वाटा आहे. ती ज्या समाजात जीवन जगते त्या जीवनपध्दतीचा तिच्यावर परिणाम होत असतो. आणि या सार्‍यांचा परिणाम स्त्रीगीतांवर होत असतो त्यातूनच साहित्य व समाज यांच्यात एक अतूट नाते निर्माण होते. याविषयी कॉडवेल म्हणतात, समाजजीवन हे शिंपल्याप्रमाणे असून साहित्य हे मौक्तिकाप्रमाणे आहे. या लोकगीतातून आविष्कृत होणाऱ्या समाजजीवनाचे विविध पैलू पहावयास मिळतात. निरनिराळया जाती-जमातींचे वैशिष्ट्य, आचार-विचार, सामाजिक अवस्था, समाजजीवनात होणारे परिवर्तन यांची ओळख या गीतांच्या माध्यमातून होतअसते. स्त्रियांत मौखिक रुपात प्रचलित असलेल्या गीतांत जात्यावरची ओवीगीते, धर्मविधी, संस्कारविधीची गीते, उपासना गीते, नृत्यखेळगीते अशा विविध गीतांचे संकलन आजपर्यंत झालेले आहे. मौखिकरुपाने प्रचलित असलेल्या, स्त्रियांनी जीवापाड जतन केलेल्या या गीतांना स्त्रीजीवनाच्या आणि समाजजीवनाच्या दृष्टीने महत्त्व आहे.

लोकसाहित्याची निर्मिती आणि जोपासना प्रामुख्याने अडाणी, अशिक्षित आणि ग्रामीण भागातच होत असल्याने ग्रामीण समाजरचनेचे प्राचीन अवशेषही लोकसाहित्यातून पहावयास मिळतात. ग्रामीण समाजरचनेत गावाचा पाटील, त्याची पत्नी आणि इतर वतनदार, बलुतेदार यांचे महत्त्व किती होते इ. बाबी आपल्याला लोकसाहित्यात प्रकर्षाने पहावयास मिळतात.

गावकीचामहार, हाक मारितो पाहाटे
पाटलिणी नंतर नेहरी करी

वरील ओवीवरुन गावात पाटलाचे व पाटलिणीचे स्थान उच्च दर्जाचे होते याविषयीची कल्पना येते. या कृषीसंस्कृतीत स्त्रीवर घरातील कामांच्याबाबतीत सर्व जबाबदारी टाकण्यात आली. ही जबाबदारी तने पार पाडावयाची. पुरुषाच्या अधिपत्याखाली राहून राहून म्हणून स्त्रीगीतातून पुरुषप्रधान संस्कृतीचे, त्याच्या वर्चस्वाचे आणि स्त्रीच्या परावलंबीत्वाचे चित्रण आलेले आहे. समाजाने, धर्माने, रुढीने तिला जणू सक्ती केली होती याविषयीचे वास्तव –

अस्तुरीचा जन्म, नको घालू श्रीहरी
संवसारी येऊन, पराव्याची ताबेदारी

यावरुन स्त्रीकडे पाहण्याचा पारंपारिक समाजाचा दृष्टीकोन प्रत्ययास येतो.

सण, उत्सव आणि यात्रा यांना समाजजीवनात महत्वाचे स्थान होत आणि आजही आहे. आजही ग्रामीण भागात विविध सणांना, उत्सवांना आणि यात्रांना अनन्य साधारण महतव असल्याचे दिसते. नागपंचमीच्या दिवशी तर स्त्रीच्या आनंदाला पारावारच रहात नाही. आपले सौभाग्य अखंडित राहवे, कपाळाचे कुंकू अक्षय रहावे यासाठी ती हळदी-कुंकू देवून आपल्या सत्यवानासाठी दीर्घ आयुष्य मागण्यासाठी वडाची पूजा करते तसेच दिवाळीचा सण तर तिच्या जीवनात अनन्य महत्वाचा असतो. सासरी गेलेल्या स्त्रीस या सणाची फारच उत्सुकता असते–

दसऱ्यापासून वीस रोज
वाट पाहते नित रोज

माहेराच्य प्रेमळ वातावरणात रमण्यासाठी तिचे मन आसुसलेले असते.

या लोकजीवनावर धार्मिकतेचाही तेवढा पगडा पडलेला आ. समाजजीवनात राम, लक्ष्मण, सीता, पांडव, श्रीकृष्ण, मारोती विठोबा या दैवतदेवतांसोबत म्हाळसा, आसरा, मरोबा, सटवाई, खिरोबा या ग्रामदेवतीची श्रध्दाही आदरणीय आहे. काही अंधश्रध्दा, रुढी, प्रथा समाजजीवनात किती खोलवर रुजल्यात याचे ज्ञानही लोकसाहित्यातून पहायला मिळते.

आराध्याची निंदा, कोण करिते जतरत
फूल टाकिले नेतरात
गोंधळयाची निंदा, कोण करिते जतरत
किडे पाडिले देहात

पंढरपूरच्या विठोबाविषयी लोकांच्या मनात नितांत श्रध्दा आहे. लोकजीवनात विठोबा, खंडोबा, सटवाइ इ. देवदेवतांना अनन्यसाधारण महत्वअसल्याचे दिसून येते. विठ्ठल हे महाराष्ट्राचे दैवत. सर्व प्रादेशिक भागातून हया आराध्य दैवताची उपसना केली जाते. आषाढी कार्तिकिला सर्व भागातून पंढरपूरला दिंडया जात. अनेक लोकगीतात विठ्ठलाची गाणी गायली जातात.

विठ्ठलाचं राज रुक्मीन सांगती भैनीला
मोत्या पवळयांची रास तिच्या वेनीच्या गोंडयाला
नऊ लाख मोती रुक्मिणीच्या बुगडीला
दामूजी ग सोनारानं समींदर उघडीला
रुसली रुक्मीन जाऊन बसली वाळवंटी
विठ्ठल देव बोलं का ग रुक्मिणी रागं रागं
सहज पल्याला गेलोवतो आली तुळस मागं मागं

वरील भक्तीगीतातून विठ्ठलाच्या घरी नांदणाऱ्या रुक्मिणीचं वैभव, तिचे रुसणे-फुगणे, विठ्ठल-रुक्मिणीतला प्रेमाचा ओलावा या गीतात दिसून येतो. लोकसाहित्यातून व्यक्त होणाऱ्या समाजजीवनाचे एक आगळे वैशिष्ट्य म्हणजे या समाजजीवनात मराठी लोकसंस्कृतीच्या उपासकांना महत्वाचे स्थान आहे. वासुदेव, पोतराज, वाघ्या-मुरळी, भराडी, भोपे इ. लोकसंस्कृतीच्या उपासकांची कामगीरी समाजाचे नैतिक आरोग्य अबाधित राखण्यासाठी महत्वाची ठरली आहे. बदलत्या

RRK. 18-19 ①

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 114 (B)- हिंदी साहित्य के आधुनातन आयाम
UGC Approved Journal

ISSN : 2348-7143
February-2019

`जूठन` - दलित विमर्श का प्रामाणिक दस्तावेज

प्रा.डॉ. रविंद्र खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एवं कम्प्युटर ऑप्लीकेशन
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरा,
ता. यावल, जि. जलगाँव

दलित आत्मकथाओं के केंद्र में 'व्यक्ति'नही शापित समाज का एक विशिष्ट तबका या स्तर या जाति होती है। एक ऐसी जाति जो प्रतिष्ठित समाज व्दारा नाकारी गई है। व्यक्ति उस जाति का प्रतिनिधी पात्र बनकर आता हैं। अनेक प्रकारो से वह शोषितों,पीड़ितों,श्रमिकों तथा व्यथितों का प्रतिनिधी बनकर प्रतिष्ठित समाज को अनेक प्रश्न पुछने लगता हैं।

इस प्रकार 'जूठन' जैसी आत्मकथाएँ प्रस्थापित समाज व्यवस्था की क्रुरता,संवेदन शुन्यता और शोषण के महत्वपूर्ण दस्तावेज बनकर उभरने लगते है। इन आत्मकथाओं व्दारा आत्मकथाकार अपने समाज के दर्द को, उसकी यातना को तथाकथित प्रतिष्ठित समाज के सम्मुख रखना चाहते हैं। गिड़गिड़ाकर नही, परंतु पूरे स्वाभिमान के साथ। ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' सामाजिक सड़ाँध को उजागर करनेवाले दलित लेखक की प्रस्तुत कृति हैं, स्मृति के साथ तादत्म्य करते हुऐ आत्मकथा लिखने की पूरी प्रक्रिया जीवन की पीड़ाओं,असहसनीयता और तीक्ष्ण अनुभवो से लेखक को पूनः साक्षात्कार करा देती हैं। स्वतंत्रतापूर्व से भारत में सामाजिक वर्णभेद और जीवन बहुत ही अस्त-व्यस्त था। जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग तब शोषित, अन्याय और आत्याचार,वर्णभेद का शिकार था। भारत की बहुसंख्य जनता हिंदू धर्मावलम्बी है। हिंदू धर्म में अनुशासीत जनता वर्णभेद,छुआछूत,जाति भेद,ऊँच-नीच के गर्त में जा रही हैं। हिंदी के दलित रचनाकारों में अग्रगण्य ओमप्रकाश वाल्मीकि की दृष्टि में - "भाषावाद, अलगाववाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद को दलित शब्द नकारता हैं। उन्हें सामाजिक पहचान देता हैं।"[1]

इस युग का दलितवर्ग आर्थिक और सामाजिक दृष्टिसे उत्पीड़ीत था फिर भी उसकी मानसिक दशा से एक नया मोड आ गया था।

दलितों की मानसिकताः-

ओमप्रकाश वाल्मीकि जिला स्तरीय प्रतियोगिता के लिए स्काउट दल को शहर जाना था स्काउट स्कुल में खाकी हाफ पँट और कमीज मिली थी । उनके स्काउट मास्टर ने वर्दी धोकर इस्तरी करवाने कहा तो, ओमप्रकाश वहाँ गऐ धोबी ने कहा की ,"हम चूहड़े - चमारो के कपड़े नही धोते, न ही इस्तरी करते है। जो तेरे कपड़े पे इस्तरी कर देंगे तो तगा हमसे कपड़े न धुलवाएँगे म्हारी तो रोजी - रोटी चली जा गी ---।"2 उसके इस जवाब ने ओमप्रकाश वाल्मीकि हताश होकर विना कुछ कहे, वे उलटे पाँव लौट आऐ थे। इस हताश मनस्थिती से मन भारी हो गया था। उनका ईश्वर उठ गया था। गरीबी और अभाव से किसी तरह निबटा तो जा सकता हैं,लेकिन जाति से कैसे छुटकारा पा सके। जाति तो जन्म से पिछे पड़ी थी। इस प्रकार दलितो के प्रति यही मानसिकता रही हैं। सवर्ण के व्दारा सदैव ही दलितों का अपमान होता था। ओमप्रकाश जब स्कुल जा रहा था तो उनके गाँव का सुरजभान तगा का बेटा बृजेश ओमप्रकाश को सामने से आकर किचड़ में धकेल देता हैं। कपड़े और स्कुल का झोला पूरी तरह से किचड़ में भीग जाता हैं किताबे और कॉपिया भीग ने से खुब रोये वे लिखते हैं कि " स्कुल के नल पर मैने हाथ - पॉव धोए थे। किताबे कॉपिया धूप में सुखाई थी । मेरा मन बहुत दु:खी हो गया था। उस रोज लग रहा था जैसे पढ़ना - लिखना अपने हिस्से में नही है। लेकिन पिताजी का चेहरा

Dongar Kathora

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) – 6.261
Special Issue 131 : हिंदी साहित्य में विविध विमर्श
ISSN : 2348-7143
Feb. 2019

दलित विमर्श का प्रामाणिक दस्तावेज–'मुर्दहिया'

प्रा.डॉ. रविंद्र खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष, कला, वाणिज्य एवं कम्प्युटर अॅप्लीकेशन महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरा, ता. यावल, जिला. जलगाँव

'दलित' शब्द अछूत, अस्पृश्य अर्थात वर्ण व्यवस्था के शुद्र वर्ण का नवीन नामकरण है। परंतु आज साहित्य जगत में दलित उसे माना जा रहा है। जो सदियों से चली आ रही वर्ण व्यवस्था और उसकी मानसिकता को ध्वस्त कर देना चाहता है। दलित लेखकों ने दलित जनसाधारण समाज की यातनाओं, पीड़ाओं और उनके विद्रोही आक्रोश को दलित साहित्य में स्थान देकर दलित चेतना जागृत की है। यह एक सामाजिक आंदोलन है क्योंकि सदियों से अधिकार शून्य लोगों को उनका हक दिलाने का प्रयास दलित साहित्य के माध्यम से दलित चिंतक कर रहे है। यही कारण है कि दलित लेखकों की आत्मकथाओं में यह सभी भाव शब्द रूप से विद्यमान है।

हिंदी दलित आत्मकथाओं की उस परंपरा में डॉ तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' की विशेषता अलग रही है। यह आत्मकथा अब तक लिखी गई दलित आत्मकथाओं से इसलिए अलग करती है कि यह आत्मकथा केवल अपने दलितों की ही शोषण की व्यथा–कथा नहीं हैं, बल्कि इसमें अन्य निम्न जातियों, दलितों अनगिनत संकटों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ महसूस किया गया है। आत्मकथाकार अपनी संवेदनाओं का विस्तार करते हैं, सबसे बुरी हालत नाईयों, धोबियों, मुसहरों तथा नटों की होती है। इन की हालत सबसे खराब इसलिए होती है कि वह सालभर किसी परिवार के बाल काटने के बदले में उन्हें सिर्फ एक बार एक केढ़ा अनाज मिलता, लेकिन अकाल या बाढ़ के कारण उपज कम होने की स्थिति में वह भी नहीं मिलता। 'मुर्दहिया' की एक–एक घटना और प्रसंग प्रत्येक व्यक्ति को आत्मपरीक्षण करने का आवाहन करता है और सामाजिक व्यवस्था पर कई अनगिनत सवाल भी खड़े कर देता है। इस आत्मकथा का शीर्षक 'मुर्दहिया' भी दिलचस्प है। 'मुर्दहिया' का अर्थ मुर्दों को दफन करनेवाली जगह। वास्तविक रूप में मुर्दहिया क्या है ? तुलसीराम के शब्दों में–''मुर्दहिया' हमारे गाँव धरमपुर (आजमगढ़) की बहुउद्देशीय कर्मस्थली थी। चरवाही से लेकर हरवाही तक के सारे रास्ते वहीं से गुजरते थे।.हमारे गाँव की 'जिओ–पॉलिटिक्स' यानी भू–राजनीति में दलितों के लिए मुर्दहिया एक सामरिक केंद्र जैसी थी। सबसे रोचक तथ्य यह है कि मुर्दहिया मानव और पशु में कोई फर्क नहीं करती थी। वह दोनों की मुक्तिदाता थी ....हमारी दलित बस्ती के अनगिनत दलितों हजारों दुःख–दर्द अपने अंदर लिए मुर्दहिया में दफन हो गए थे। यदि उनमें से किसी की आत्मकथा लिखी जाती तो उसका शीर्षक 'मुर्दहिया' ही होता।''१ इस प्रकार दलित लेखकों ने अपने जीवन में जिस कड़वें यथार्थ को स्वयं भोगा है वह उनकी आत्मकथा में बखूबी से चित्रित हुआ है।

एक दलित, गरीब, उपेक्षित बच्चे का उच्च विद्याविभुशित होना प्रशंसा का पात्र है। दरअसल बचपन में चेचक निकलने के कारण उनकी दाईं आंख की रोशनी सदैव के लिए विलुप्त हो गई और वह बच्चा घर–बाहर से भी दलित–उपेक्षित बनता गया। उसी कड़ी में डॉ.तुलसीराम की 'मुर्दहिया' है जिसका विवेचन विभिन्न बिंदुओं के अंतर्गत किया जा सकता है।

१ अंधविश्वास से भरा ग्रामीण जीवन

तुलसीराम की आत्मकथा में धरमपुर (आजमगढ़) की धरती में होने वाले अंधविश्वास, भूत–प्रेत, टोना –टोटका, पुइन अर्थात चुड़ैल, ओझा–सोखा, कराहा, चढ़ाना, तांत्रिक, पौहारी बाबा आदि के द्वारा समाज में पल रहे अंधविश्वास को अपनी आत्मकथा में व्यक्त करते हैं। रचनाकार की स्पष्ट मान्यता है कि अशिक्षा ही दलितों के दुख का सबसे बड़ा कारण थी। शिक्षा, ज्ञान और तार्किकता के अभाव में अपने ऊपर पड़ने वाले दुःख को किसी दैवीय अभिशाप से कम नहीं माना जाता है। तांत्रिक क्रियाओं को चमत्कार से कम नहीं मानते थे। उस समय अंधविश्वासी मान्यताओं के चलते मूर्खतावश इसे चमत्कार समझा जाता था। वास्तव में यें सारी क्रियाएँ ठगबाजी की ही परंपराएँ थी। इस बात का प्रमाण स्वयं ही डॉ. तुलसीराम ने अपनी आत्मकथा के शुरुआत में ही स्पष्ट करते हैं– ''मूर्खता हमारी जन्मजात विरासत थी। मानव जाति का पहला व्यक्ति जो जैविक रूप से मेरा खानदानी, पूर्वज था उसके और मेरे बीच न जाने कितने पैदा हुए, किंतु उनमें से कोई भी पढ़ा–लिखा नहीं था। सदियों से पुरानी इस अशिक्षा का परिणाम यह हुआ कि मूर्खता और मूर्खता के चलते अंधविश्वासों का बोझ मेरे पूर्वजों के सिर से कभी नहीं उतरा।''२ स्पष्ट है कि ग्रामीण समाज बीमारियों से मुक्त होने के लिए अनेक परम्परागत तौर–तरीके अपनाएँ जाते हैं, परंतु उनका ध्यान दवाओं की तरफ नहीं जाता। वह प्रत्येक बीमारी को पूजा–पाठ, तांत्रिक क्रिया के प्रयोग से ठीक करना चाहते हैं, क्योंकि देवी, भूत, चुड़ैल और चमरिया माई की खुशी के लिए वे वार्षिक उत्सव करते जो सूअर, बकरे या मुर्गे की बलि देकर पूर्ण होती। अनपढ़ ग्रामीण समाज में कुएँ में गिरकर मर गई स्त्री को चुड़ैल को लेकर एक मनोविकार देखने में आता है। चुड़ैल का प्रकोप शांत करने तथा उससे मुक्ति पाने के लिए वह जो ओझा–सोखा को बुलाया जाता और विभिन्न प्रकार के टोना–टोटका किए जाते है यह सबसे बड़ा अंधविश्वास आज भी ग्रामीण समाज में दिखाई देता है

२ दलित नारियों का जीवन

ग्रामीण समाज की नारियाँ सुबह से रात तक जी तोड़ मेहनत करती है। इनके जीवन का एक हिस्सा घर के लिए रसोई पकाते–पकाते बीत जाता है। चाहे घर के काम हो या पशुओं के या खेती–बाड़ी के जहाँ शारीरिक श्रम की सबसे अधिक जरूरत होती है वहाँ इन्हें ही खपना होता है। विवेच्चित आत्मकथा में दलित नारी का जो वर्णन है, वह अपनी मार्मिक ता में बेजोड़ है। आत्मकथा में वर्णित दलित नारी चरित्र तुलसी राम की दादी है। दूसरी नारी चरित्र उनकी माँ और तिसरी नारी चरित्र बस्ती की नटिनिया। तुलसीराम अंग्रेजी ज्ञान से नटिनिय उनकी तरफ आकृष्ट हुई थी । दूसरी नारी चरित्र तुलसीराम की माँ है। तुलसी जब नौवीं कक्षा में पढ़ते थे तो उनके भोजन के लिए उनकी माँ अधपेट खाती और आधा खाना बेटे के लिए रखती। उस ममतामयी माँ को कितनी तकलीफें सहनी पड़ती थी। उनकी माँ के चरित्र पर उँगली उठाना। उसे पिताजी हमेशा कारूही उठाकर मारने दौड़ते थे। इस शोषण का विरोध करने के लिए तुलसीराम ने पिताजी को तमाचा मार कर इस घटना को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया। खेतों में मजदूरी करना, घर के सारे काम। इस प्रकार जी तोड़ मेहनत करने के बावजूद अपने पति के हाथों मार भी खानी पड़ती थी ।

'मुर्दहिया' की महत्वपूर्ण दलित नारी चरित्र तुलसी राम की दादी है। दादी को विभिन्न रोगों के इलाज तथा वनस्पतियों का गहरा ज्ञान था परंतु साथ–साथ वह अंधविश्वासी भी थी। लेखक के चरित्र को उभारने में उनका सबसे ज्यादा योगदान रहा। दादी का वर्णन करते हुए तुलसीराम लिखते हैं–''मांस काटने का काम प्रायः महिलाएँ करती थी। मरे पशु के मांस के बंदरबाट में महिलाओं के साथ कुत्तों और गिध्दों में उग्र होड़ मच जाती थी। जब खाने की

Dongar Kathore

RRK 18-19 (3)

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 135 (B) - आधुनिक हिंदी साहित्य : विविध विमर्श
UGC Approved Journal

ISSN : 2348-7143
February-2019

हिमांशु जोशी के उपन्यासों में व्यक्त नारी जीवन

डॉ. रविंद्र खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एवं कम्प्युटर ॲप्लीकेशन
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरा,
ता. यावल, जि. जलगाँव

आधुनिक युग में सबसे अधिक शोषित नारी है। घर-परिवार में नारी की अवस्था दयनीय होती जा रही थी। वह घर एवं बाहर दोनों ही स्थितियों में विवश जीवन व्यतीत कर रही है। सम्प्रति नारी एक साथ गृहिणी, पत्नी, माँ का कर्तव्य निभाती हुई, नौकरी भी कर रही है। कई जिम्मेदारियाँ संभालती हुई, तथा रोजमर्रा के जीवन में आनेवाली हर छोटी-बड़ी समस्या से जूझ रही है। ऐसे समय में नारी के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगा हुआ है। पुरूष प्रधान संस्कृति में समर्पण का मिथक बनी हुई है। नारी पुरूषों के अधिकार में अपना जीवन-सर्वस्व समर्पित करने के संदर्भ में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के विचार उचित लगते है, ``वह पुरूषों द्वारा स्थापित मूल्यों को ही शाश्वत तथा महान समझने लगी और उन मूल्यों के अनुसार जीने में ही अपने जीवन की कृतार्थता समझने लगी। यही से वह खुद से दूर होने लगती है। धीरे-धीरे यह मानसिकता इतनी दृढ़ होने लगती है कि वह गुलाम है, यह गुलामी मानसिक, बौध्दिक तथा शारीरिक तीनों स्तर पर हैं, इसे स्वीकारने को भी वह तैयार नहीं होती। उल्टे पुरुष समाज द्वारा निर्मित इन मूल्यों की शाश्वतता का वह समर्थन करने लगती है।``[1]

नारी के जीवन में आज भी घर-परिवार, रिश्ते-नाते, रीति-रिवाज केन्द्र में है। परंपरागत मानसिकता में जकड़ा हुआ पुरूष का स्त्री के प्रति अपना दृष्टिकोण यही है कि वह घर में दासी और पति को शैय्या सुख प्रदान करनेवाली है। नारी की यंत्रवत जीवन जीने की प्रक्रिया लगातार जारी है। नारी की स्थिति एवं गति के संदर्भ क्षमा शर्मा लिखती हैं कि, ``विश्व स्तर पर यह माना गया है कि यदि महिलाओं की स्थिति सुधारनी है, उनके प्रति भेदभाव कम करना है तो उनकी आर्थिक स्थिति सुधारनी होगी। स्त्रियों को यह समझ में आ गया है कि जब तक उनकी आर्थिक स्थिति नहीं सुधरती तब तक उनका विकास नहीं हो सकता क्योंकि दुनिया के अट्ठावन प्रतिशत संसाधनों पर पुरूषों का कब्जा है।``[2] नारी को अपनी आर्थिक स्थिति को प्रबल बनाना होगा। हिमांशु जोशी ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन का पूर्णरूपेण चित्रण किया है।

`अरण्य` उपन्यास में नारी की समस्याओं का सूक्ष्मता से चित्रण किया गया है। उपन्यास की नायिका कावेरी की व्यथा यही है कि उसका विवाह ऐसे ठेकेदार से तय किया जाता है। जो पहले से ही दो विवाह कर चूका है, जो अब बुढ़ा हो चूका है। कावेरी अनाथ है, माधव मामा के यहाँ उसका पालन-पोषण होता है। मामा के परिवार की आर्थिक स्थिति दयनीय होने से, कावेरी अपने विवाह का बोझ उन पर डालना नहीं चाहती है। समाज की दृष्टि से एक ओर बढ़ती उम्र तथा आर्थिक विपन्नता के कारण कावेरी विवश हो जाती है। कावेरी स्वयं को समर्पित करते हुए कहती है, ``बोज्यू अपने से यदि किसी का भला हो जाय तो बुरा क्या? मेरी अब कोई चाह नहीं। अगर इत्ते परानियों को मैं तनिक भी सुख पहुँचा सकी तो इससे बड़ी बात मेरे लिए और क्या होगी ! मामा के कलेजे का कांटा भी उतर जाएगा। कावेरी कहते-कहते रूक आयी! कुछ सोचती हुई फिर आगे बोली, फिर लोक-लाज का भी तो सवाल हैं न! वैसे ही लोग बुरा-भला कहते हैं। बिना बात गाल बजाते हैं।``[3] इससे स्पष्ट होता है कि कावेरी जैसी स्त्रियाँ समझदारी से समस्या का सामना कर सकती है। अपने मामा की आर्थिक स्थिति के कारण विवश होकर वह प्रौढ़ से विवाह करने के लिए तैयार है। उसकी आंयु कम है और अधेड़ ठेकेदार के साथ अपना जीवन काटने पर मजबूर है। तथा अपनी सौतों के साथ मेलजोल बनाकर पति का दुःख अपना समझकर सहनशीलता दिखाती है।

Dongar Kathora

SBD 18-19

IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) REVIEW OF RESEARCH UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X

VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

भारतातील दारिद्र्य आणि आर्थिक वृध्दी एक दृष्टीक्षेप

राजरत्न भिमराव पोहेकर[1] , डॉ.सुरेश बी. ढाके[2]
[1]संशोधक विद्यार्थी , उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ जळगांव.
[2]विभाग प्रमुख अर्थशास्त्र , कला वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन, महिला महाविद्यालय,डोंगर कठोरे, ता यावल जि जळगांव.

गोशवारा:

प्रस्तूत शोध निबंधामध्ये भारतातील दारिद्र्य व आर्थिक वृध्दी या दोन मुद्यांना येऊन दृष्टीक्षेप टाकण्याचा प्रयत्न करण्यात आला आहे. भारताला स्वातंत्र्य मिळून 70 वर्षे पूर्ण होत आहेत तरी भारत दारिद्र्य मुक्त झाला नाही. एकी कडे भारताचा आर्थिक वृध्दी दर वाढत आहे. आपण तो दोन अंकी होण्याची अपेक्षा करत आहेत येणाऱ्या काळात तो दोन अंकी होईल परंतू भारतातील दारिद्र्य, कुपोषण बेरोजगारी या समस्या संपत नाहीत. याचे कारण काय याचा शोध घेण्याचा प्रस्तूत शोध निबंधात प्रयत्न करण्यात आला आहे.

प्रस्तावना:

भारतीय लोकसंख्येचा विचार केल्यास 2011 च्या जनगणनेनुसार भारताची लोकसंख्या 121 कोटी आहे. सी रंगराजन यांच्या अध्यक्षतेखाली मे 2012 मध्ये सी. रंगराजन पॅनल स्थापन करण्यात आले. त्यामध्ये महेद्र देव, के सुंदरम, महेश व्यास आणि के दत्ता या अर्थतज्ज्ञांचा समावेश करण्यात आला. या पॅनल ने दारिद्र्यरेषा ठरविणाऱ्या सुरेश तेंडूलकर गटावर प्रचंड टिका करण्यात आली म्हणून दारिद्र्यची नविन रेषा ठरविण्यासाठी स्थापन करण्यात आली. या पॅनलने 2011– 12 साठी दारिद्र्य रेषा ठरविली. देशामध्ये 29.6 टक्के लोक दारिद्र्य रेषेखाली असल्याचे सांगितले 121 कोटी पैकी 29.6 टक्के म्हणजे देशातील 35 कोटी 56 लाख लोक दारिद्र्य रेषेखाली जीवण जगत आहेत. या पेक्षा भयानक स्थिती म्हणजेच अर्जून सेन गुप्ता यांनी दिलेला अहवाल होय. अर्जून सेन गुप्ता यांच्या अहवालानुसार देशातील 83 कोटी लोकांनकडे 6 ते 20 रूपया पर्यंत दरडोई उत्पन्न आहे म्हणजेच ऐवढे लोक दारिद्र्याचे जीवन जगत आहेत.

भारताला स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर भारत देशात अन्नधान्य, बेरोजगारी आणि गरिबी म्हणजेच दारिद्र्य हे भीषण प्रश्न बनले आहे त्यामूळे 1971 ला तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदीरा गांधी यांनी संसदीय निवडणूकी वेळी गरीबी हटाव ही घोषणा चौथ्या पंचवार्षिक योजनेत केली. याचा परिणाम असा झाला की, नियोजन मंडळाने दारिद्र्य निर्मूलन करण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न केले. भारत सरकारने रोजगार निर्मिती दारिद्र्य निर्मूलनाचे सर्वात महत्वाचे साधन असल्याने स्वातंत्र्य प्राप्तीनंतर दारिद्र्य निर्मूलन रोजगार निर्मितीसाठी विविधांगी प्रयत्न केले आहे. त्यामध्ये 1973–74 ला आवर्षण प्रवण क्षेत्र कार्यकम, 1975ला 20 कलमी कार्यकम, 1980 एकात्मीक ग्रामीण विकास कार्यकम, 1989 ला जवाहर रोजगार योजना, 1999 ला जवाहर ग्राम समृध्दी योजना, 1985–86 ला इंदिरा आवास योजना, 1997 ला स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना, 1999 ला स्वर्ण जयंती स्वरोजगार योजना, 2005 ला राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार हमी योजना त्याच प्रमाणे 2009 ला राष्ट्रीय ग्रामीण उपजीविका अभियान व आता अन्न सुरक्षा कायदा इत्यादी. यामध्ये आणखी काही योजना व कार्यक्रम सांगता येतील परंतु सरकारचे दारिद्र्य निर्मूलन कार्यक्रम इत्यादी दिलेल्या योजनांनी लक्षात येईल. प्रश्न असा पडतो की, एवढे सारे शासनाने प्रयत्न करून भारत दारिद्र्य मुक्त का झाला नाही. याचा ऊहापोह आपणाला करावा लागेल.

College of Arts Com... Dongar Kathore

V2m 18-19 ①

६) जून तंत्रज्ञान :-

अनेक शेतकरी पारंपारीक पध्दतीने शेती करतात त्याचा शेती उत्पादनावर परीणाम होतो शेतीची उत्पादकता कमी राहते.

७) दळणवळण साधनाची कमतरता :-

शेतकऱ्याला दळणवळणाच्या साधनाची कमतरता असल्यामुळे स्थानीक बाजारात शेतमालाची विक्री करावी लागते अतिशय कमी दराने शेतमालाची खरेदी व्यापारी करतात त्यामुळे नफा न होता तोटाच होतो.

८) शेती विषयक संशोधनाचा अभाव :-

भारतात कृषी महाविद्यालयाचे कृषी विद्यापीठे, कृषी संशोधन संस्था इत्यादीकडुन शेतीविषयक संशोधन केले जाते पण हे संशोधन प्रत्यक्ष शेती करणाऱ्या शेतकऱ्यापर्यंत कधी पोहचत नाही व जरी पोहचले तरी शेतकरी त्याचा स्वीकार करत नाहीत.

९) व्यापारी दृष्टीकोनाचा अभाव :-

भारतातील अनेक शेतकरी शेती केवळ उपजीविकेचे साधन असे मानतात शेती करुन चांगले उत्पन्न मिळविता येते ही दृष्टीकोन शेतकऱ्यामध्ये रुजला पाहीजे अशी स्थिती दिसत नाही.

१०) बाजार पेठेच्या अपुऱ्या सोयी :-

संघटीत बाजारपेठेच्या अभावामुळे शेतकरी मोठया बाजारपेठेत शेतमालाची विक्री करु शकत नाही यामुळे शेतकऱ्याचे आर्थिक नुकसान मोठया प्रमाणात होते.

संदर्भ ग्रंथ :-
१) कृषी समस्या-मनोहर चन्द्र पाण्डे
२) कृषी अर्थशास्त्र-डॉ.एस.बी.कट मुसरे
३) महाराष्ट्राची अर्थव्यवस्था-प्रा.सौ.जाधव राजेश्री
४) महाराष्ट्राची अर्थव्यवस्था-डॉ.बी.डी.इंगळे
५) महाराष्ट्राची अर्थव्यवस्था-डॉ.आर .एस.सोळुंके
६) भारतीय अर्थव्यवस्था-डॉ.वसुधा पुरोहित
७) भारतीय अर्थव्यवस्था-प्रा.रायखेलकर
८) कृषी विकासाचे अर्थशास्त्र-डॉ.पांचळे ,डॉ.टपले,डॉ.खंदारे
९) समाजशास्त्र-डॉ.भ.कि.खडसे
१०) समाजकार्य प्रोज-डॉ.निलम तारके

□□□

25

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या आर्थिक विचारांचा आढावा

प्रा.डॉ.विनोद झामा मोरे
सहाय्यक प्राध्यापक- अर्थशास्त्र विभाग
कला वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन महिला महाविद्यालय,
डोंगरकठोरे, ता.यावल जि.जळगाव

****

प्रस्तावना-

भारतीय राज्यघटनेचे शिल्पकार म्हणून भारतरत्न डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर सर्वज्ञात आहेतच. त्याच प्रमाणे एक प्रकांड पंडित, एक असामान्य प्रतिभावंत, नामवंत शिक्षणतज्ञ, महान समाजसुधारक आणि दीन दलितांचे कैवारी म्हणून देखील डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची प्रतिमा जनमानसामध्ये रुजली आहे. त्यांच्या बहुरंगी आणि चतुरस्त्र व्यक्तिमत्त्वाचा एक विशेष पैलू सर्व साधारण जनतेला अपरिचित आहे. तो म्हणजे एक अर्थतज्ञ म्हणून त्यांची कामगिरी आहे.

जीवन परिचय-

डॉ.भीमराव रामजी आंबेडकर तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचा जन्म १४ एप्रिल १८९१ मध्ये मध्यप्रदेशातील महू या गावी झाला. त्यांचे वडील रामजी आंबेडकर हे सैन्यात सुभेदार होते. बाबासाहेबांचे प्राथमिक शिक्षण दापोली येथे झाले. त्यानंतर त्यांचे शिक्षण सातारा व मुंबई येथे झाले. मुंबईच्या एल्फिन्स्टन महाविद्यालयातून बी.ए. ची पदवी १९१३ मध्ये प्राप्त केली. बाबासाहेबांनी कोलंबिया विद्यापीठात उच्च शिक्षणासाठी प्रवेश घेतला. 'प्राचीन भारतातील व्यापार' या विषयावर कोलंबिया विद्यापीठात त्यांनी शोधप्रबंध सादर केला.

भारतात परतल्यानंतर १९१८ ते १९२० या दोन वर्षांच्या कालावधीत मुंबई येथील प्रसिध्द सिडनेहॅम महाविद्यालयात त्यांनी अर्थशास्त्राचे प्राध्यापक म्हणून कार्य केले. बाबासाहेबांनी उच्च शिक्षणाचा ध्यास घेतलेला होता. त्यामुळे १९२० मध्ये त्यांनी इंग्लंड मध्ये शिक्षणासाठी जाण्याचा निर्णय घेतला. तेथे लंडन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स या अर्थशास्त्राच्या अध्यापन व संशोधन करणाऱ्या जग

Dongar Kathora

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 183 (B)- Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
April-2019

V2M-18-19
18-19

डॉ. बाबासाहेब आंबडेकरांचे शेती विषयक विचार

प्रा. डॉ. विनोद झागा मोरे
सहाय्यक प्राध्यापक -अर्थशास्त्र विभाग
कला वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन
महिला महाविद्यालय डोंगरकठोरे,
ता.यावल.जि.जळगांव
मो.नंबर-७७०९४१८३८०
Email-vzmore39@gmail.com

प्रास्तावीक -

भारतीय राज्यघटनेचे शिल्पकार म्हणून भारतरत्न डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर सर्वज्ञात आहेतच. त्याच प्रमाणे एक प्रकांड पंडित,नामवंत शिक्षणतज्ञ, महान सुधारक आणि दीन दलितांचे कैवारी म्हणून देखील डॉ. आंबेडकरांची प्रतिमा जनमानसामध्ये रुजली आहे. त्यांच्या बहुरंगी आणि चतुरस्त्र व्यक्तिमत्वाचा एक विशेष पैलु सर्वसाधारण जनतेला अपरिचित आहे. तो म्हणजे एक अर्थतज्ञ म्हणून त्यांची कामगिरी त्यांचा शेतीविषयक विचारांचा परामर्श घेणे व सद्य काळात शेती व्यवस्थेसमोर जी आव्हाने उभी आहेत. ती आव्हाने पेलण्याचे सामार्थ्य डॉ. बाबासाहेबांच्या शेती विषयक विचारात आहेत. का त्यावर प्रकाश टाकणे हाच या लेखाचा उद्देश आहे.

जीवन परिचय -

डॉ.भीमराव रामजी आंबेडकर तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचा जन्म १४ एप्रिल १८९१ मध्ये मध्यप्रदेशातील महू या गावी एक गरीब कुटूंबात झाला. त्यांचे प्राथमिक शिक्षण दापोली येथे झाले. त्यानंतर त्यांचे शिक्षण सातारा व मुंबई येथे झाले. मुंबई एल्फिन्स्टन महाविद्यालयातून बी.ए.ची पदवी १९१३ मध्ये प्राप्त केली. उर्वरित शिक्षण श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड व छत्रपती शाहू महाराज यांनी देवू केलेल्या शिष्यवृत्तीवर त्यांनी पूर्ण केले. त्यानंतर सिडनहॅम महाविद्यालयात अर्थशास्त्राचे प्राध्यापक म्हणून नोकरी केली. बाबासाहेबांनी उच्च शिक्षणाचा ध्यास घेतलेला होता. त्यामुळे १९२० मध्ये त्यांनी इंग्लड मध्ये शिक्षणासाठी जाण्याचा निर्णय घेतला. इंग्लड मधील ब्रिटीश म्युझियम ग्रंथालयात बसून आंबडेकरांनी अगणित ग्रंथाचे वाचन केले. ब्रिटनमध्ये बाबासाहेबांनी कायदयाचा अभ्यास केला. ते बॅरिस्टर झाले. बॅरिस्टर झाल्यानंतर त्यांनी मुंबईच्या गव्हर्नमेंट लॉ कॉलेजमध्ये प्राध्यापक म्हणून कार्य केले. पुढे याच महाविद्यालयाचे प्राचार्य झाले.बाबासाहेबांनी काही नियतकालिके चालावून समाजप्रबोधन करण्याचा यशस्वी प्रयत्न केला. `प्रबुध्द भारत` `बहिष्कृत भारत` `मुक नायक` ही त्यांची शीर्षक अर्थपूर्ण होती. या नियतकालिकांमधील अग्रलेख त्या काळात बहुचर्चित असत. आपले सर्व आयुष्य दीन दलितांच्या उध्दारासाठी घालवले . इंग्लड ,अमेरिका सारख्या देशात मिळवलेल्या ज्ञानाचा उपयोग त्यांनी भारतीय समाजासाठी शेवटपर्यंत केला. बहूजन सुखाय, बहूजन हिताय हे तत्व त्यांच्या प्रत्येक विचाराचा गाभा राहिलेला होता.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकराचे शेतीविषयक विचार -

भारताला १९४७ साली राजकीयदृष्टया स्वातंत्र्य मिळाले. पण भारतीय जनता आर्थिक , सामाजिक दृष्टया मागासलेली होती. गरीबी प्रचंड आर्थिक ,सामाजिक विषमतेत भारत विभागला होता.शेती हा भारतीय अर्थव्यवस्थेचा कणा पण शेती मागासलेली होती. शेतकरी ,शेतमजूर यांना दारिद्रयाने जखडले गेले होते. दीन दलितांच्या व्यथा त्यांनी जवळून पहिल्या होत्या. त्यांच्यतील माणूसपणा जिवंत करुन त्यांच्या आर्थिक, सामाजिक विकासाचा मार्ग त्यांनी दार्खविला . म्हणूनच त्यांना दलितांचे कैवारी म्हणतात. डॉ. बाबासाहेबांनी फक्त दलितांसाठी कार्य केले नाही तर त्यांनी

Dongar Kathore

AKS 18-19

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 134 : Environment and Sustainable Development (ESD 2018) UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

पर्यावरण संरक्षण - जनजागृतीची गरज

आशालता के.आवटे
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, ता.यावल, जि.जळगांव.

पर्यावरण व मानवाचा घनिष्ट संबंध आहे. पर्यावरणाचा मानवावर व मानवाचा पर्यावरणावर सतत परिणाम होतो. इतकेच नव्हे तर मानवाच्या क्रियांचा पर्यावरणावर जो अनिष्ट परिणाम होतो तो उलटून परत मानवालाच भोगावा लागतो. हे सुध्दा मानवाच्या निदर्शनास आले. त्यामुळे मानवाने फार जपून परिणामांचा विचार करुन वागले पाहिजे.नाहीतर मानवाच्या पुढील पिढ्या बरबाद होतील हा नवीन विचार उदयास आला आहे. संपूर्ण जगात पर्यावरणाविषयी व त्याच्या सुधारणाविषयी अभ्यास व चर्चा गंभीरपणे होत आहे. प्रत्येकाचाच पर्यावरणाशी संबंध येत असल्याने प्रत्येकानेच त्याविषयी जागरुकता बाळगणे ही अता काळाची गरज आहे. मानव समाज करुन राहतो. त्यामुळे मानवाच्या पर्यावरणासंबंधी समस्या एकट्या-दुकट्याच्या नसून सामाजिक समस्या होतात व त्या संपूर्ण समाजाला व जागतिक स्तरावर मानवजातीलाच ग्रासून टाकतात. म्हणून पर्यावरणाच्या समस्या दुर्लक्षित करुन चालण्यासारखे नाही यात सरकडी म्हणजे पर्यावरणाच्या बहुतेक समस्या मानवाने निर्माण केलेल्या आहेत. म्हणून त्यावरील उपायही मानवाने शोधायचाचे व मुख्य म्हणजे आचरणात आणावयाचे आहे यासाठी जन-जागृतीची गरज आहे.

पर्यावरण सगळ्यांचेच आहे व ते राखणे सगळ्यांचेच कर्तव्य आहे ही जाणीव सामान्य लोकात जागृत झाली तर पर्यावरण रक्षणाचे काम सोपे होऊन जाईल. कारण पर्यावरणविषयक जागृती हा पर्यावरण सुधारणेचा पाया आहे. राष्ट्रीय पातळीवर सरकार पर्यावरणविषयक धोरणे ठरविते. कायदे तयार करते व त्यांची अंमलबजावणी करते. सामाजिक पातळीवर पर्यावरणप्रेमी संस्था पर्यावरण वाचविण्याचे निरनिराळे कार्यक्रम करीत असतात. अशा माध्यमातून नागरिकांचे कूलिगट तयार करुन पर्यावरणविरोधी प्रकल्पाविरुध्द आंदोलन छेडता येते. उदा. जीवविविधतेने समृध्द केरळमधील सायलेंट व्हॅली या ठिकाणी जलविद्युतकेंद्र निर्मितीचा प्रस्ताव जनआंदोलनाने हाणून पाडला व त्याऐवजी तो प्रदेश अभयारण्य म्हणून घोषित झाला. पर्यावरण रक्षण हे एकट्या दुकट्याचे काम नाही असेही म्हणावयास नको. अगदी वैयक्तिक पातळीवरही प्रत्येकाला लहानसहान बाबीतूनही पर्यावरणाची काळजी घेता येते व इतरांना त्याचे धडे घालून देता येतात. उदा. झाडे लावणे व त्यांची निगा राखणे, प्लॅस्टिकचा वापर कमीत कमी करुन त्याचा कचरा न होऊ देणे, आपल्या वाहनांची व्यवस्थित देखभाल करुन त्याद्वारे होणारे वायुप्रदूषण आटोक्यात ठेवणे, निरनिराळ्या पर्यावरण कार्यक्रमात सक्रिय भाग घेणे वगैरे. मुख्य म्हणजे पर्यावरण संरक्षण ही एक राष्ट्रव्यापी चळवळ व्हावयास हवी.

परंतु ही राष्ट्रव्यापी चळवळ होण्यासाठी अजून काही बरेच काही करावयाचे आहे. विशेषत: पर्यावरण विषयक जनजागृती पुरेशी नाही. त्यामुळे पर्यावरणाचा ऱ्हास सुरुच आहे. जनजागृती हाच या ऱ्हासाविरुध्द प्रभावी उपाय आहे. जनजागृतीसाठी टेलिव्हिजन, रेडिओ, वर्तमानपत्रे, इतर साहित्य इ. माध्यमातून प्रचार करता येतो. जीवविविधतेचा नाश, वनांचा ऱ्हास, लोकसंख्यावाढ, प्रदुषण इ. पर्यावरणविषयक समस्यांची माहिती व त्यांच्या नियंत्रणाचे उपाय प्रसारमाध्यमातून प्रभावीपणे मांडता येतात. विशेषत: तरुणपिढी व लहान मुलांना पर्यावरणाची माहिती पुरविलीच पाहिजे. त्यासाठी त्यांच्या अभ्यासक्रमात अगदी महाविद्यालयीन स्तरावरही पर्यावरणशास्त्राचा अभ्यास नेमून दिला आहे. अभ्यासाशिवाय गटचर्चा, वृत्तसत्रे, परिसंवाद, प्रदर्शन, पथनाट्ये इ. विविध उपक्रमातून पर्यावरणाचा विषय सतत त्यांच्या डोळ्यांसमोर राहिला पाहिजे व त्यांची जाणीव तयार होत गेली पाहिजे. कारण हे पर्यावरण आता या

Women's College of Arts, Com. & Computer ... Dongar Kathore

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor (SJIF) - 6.261 | Special Issue 109 : Role of Social Reformers in Nation Building | February 2019

स्त्री शिक्षण – समाजसुधारक महर्षी कर्वे

– प्रा.डॉ. आशालता के.जावळे
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर अप्लिकेशन महिला महाविद्यालय,
डोंगर कठोरे, ता.यावल, जि.जळगांव.

महर्षी धोंडो केशव कर्वे यांना १०४ पूर्ण वर्षांचे आयुष्य लाभले. आणखी पाच महिने ते जगते तर ते १०५ वर्षांचे झाले असते. एवढे दिर्घ आयुष्य आणि तेही क्रियाशील स्वरुपाचे आयुष्य लाभणे हा भाग्ययोगच म्हणावयास हवा. हे भाग्य जसे कर्वे यांच्या वाट्याला आले त्याचप्रमाणे कर्वे महाराष्ट्रात जन्माला आले आणि त्यांचे कार्यही येथेच घडले हे महाराष्ट्राचे भाग्य होय.

शंभर वर्षाचा रोमहर्षक कालखंड कर्वे यांना अनुभवता आला. ते जन्माला आले तेव्हा १८५७ मधील स्वातंत्र्ययुध्द होऊन, ब्रेमरोम वर्ष होत आले होते. त्यांच्या जन्माला सहा महिने उलटून गेल्यानंतर राणीचा जाहीरनामा प्रसिध्द झाला. राणीच्या जाहीरनाम्यानंतर या देशातील धार्मिक आचार–विचारांत अकारण ढवळाढवळ न करण्याचा व समाजाचा व्यर्थ रोष ओढवून न घेण्याचा पवित्रा घेतला गेला. येथे पक्के पाय रोवल्यानंतर स्वत:चे शिक्षणविषयक धोरण अमलात आणायला इंग्रजांनी सुरुवात केली होती. वुडचा खलिता, मेकॉलेचे शिक्षणविषयक धोरण आणि माउंट स्टुअर्ट एल्फिन्स्टनचे दूरदर्शी वर्तन या सर्वांचा परिणाम घडून महाराष्ट्रात शिक्षणाची नवी पहाडी सुरु झाली होती. १८५७ मध्ये मुंबई विद्यापीठाची स्थापना झाली आणि पदवीधरांची पहिली तुकडी बाहेर पडावयाची होती. मिल, स्पेन्सर, रुसो, लॉक इत्यादिकांच्या तत्वविचारांचा परिचय होऊ लागल्यामुळे वैचारिक कलहाला सुरुवात झाली होती. समाजातील सर्वात उपेक्षित अशा स्त्रीवर्गाची दु:स्थिती हा चर्चेचा विषय होऊ लागली होती. सुशिक्षित तरुण वर्गात समाजसुधारणेचे विचार मुळ धरु लागले होते. लोकहितवादी गोपाळ हरी देशमुख आणि महात्मा ज्योतीराव फुले यांच्या क्रांतिकारक विचारप्रतिपादनामुळे समाजात विचारमंथन सुरु झाले होते. इंग्रजी राज्य, त्याचा कारभार व त्याबरोबर आलेले विभिन्न विचार यांच्या अनुषंगाने महाराष्ट्रात मुख्यत्वे दोन प्रकारच्या प्रतिक्रिया उत्पन्न झाल्या. एक प्रतिक्रिया राजकीय स्वातंत्र्याची मागणी करणारी होती तर दुसरी प्रतिक्रिया येथील समाजात अग्रक्रमाने सामाजिक सुधारणा घडवून आणाव्यात अशा प्रकारची होती. दुसऱ्या प्रतिक्रियेची दिशा संस्थात्मक उभारणीची व सुधारकी विचारांच्या प्रचाराची होती.

सुधारणावाद्यांचा आग्रह आधी सामाजिक सुधारणा केल्या पाहिजेत, असा होता आणि सुधारणांसाठी त्यांना शिक्षणाचे माध्यम हे उपयुक्त वाटत होते. धोंडो केशव कर्वे या विचाराशी पूर्णपणे सहमत होते. शिक्षण हाच सामाजिक सुधारणेचा प्रभावी उपाय आहे हे त्यांना मनोमन पटले होते आणि त्यांनी आपले विचार व दृष्टिकोण संस्थात्मक व वैयक्तिक पातळीवर अंमलात आणायला आरंभ केला. विधवाविवाह आणि स्त्रीशिक्षण या कार्याचे ते संघटक बनले. विधवांना समाजात सन्मानाचे स्थान लाभावे, स्वावलंबी होता यावे व त्यांच्या पुनर्विवाहाचा मार्ग मोकळा व्हावा यासाठी त्यांनी प्रचंड परिश्रम केले. त्यांचे हे प्रयत्न त्यांच्या आयुष्यभराच्या आस्थेत–स्त्रीशिक्षणविषयक विविध उपक्रमांत परिणत झाले. कर्वे स्वत: महाविद्यालयात शिकत असतांना त्यांनी [stamp] वाचन केले, नरहरपंत जोशी या मित्राबरोबर जो विचारविनिमय [stamp] आणि पुढे फर्गसन महाविद्यालयात गेल्यानंतर त्याचा परिणाम त्यांच्या मनातील विचारांना प्रत्यक्ष कार्यान्वित करण्यात झाला. गोपाळ गणेश आगरकर आणि गोपाळ कृष्ण गोखले यांच्या सान्निध्याचा त्यांच्या मनावर खोलवर परिणाम झाला. आगरकर–टिळकांच्या कलहात कर्वे आगरकरांच्या बाजूचे होते. आणि कर्वे यांच्या पुनर्विवाहाच्या प्रकरणात आगरकर त्यांच्या पाठीशी होते. असा हा समसमा संयोग कर्वे यांच्या आयुष्याला वळण लावायला कारणीभूत ठरला.

शिक्षण संपल्यानंतर यथावकाश कर्वे गणिताचे प्रोफेसर झाले, वेगवेगळ्या तत्वज्ञानपर, विज्ञानपर पुस्तकांची भाषांतरे करु लागले. या कामांत ते यशस्वी ठरले. तरीही त्यातच रमावे आणि प्राध्यापकाचे स्वास्थ्यपूर्ण जीवन जगावे असा मोह त्यांना पडला नाही. बुध्दिमत्तेच्या जोरावर संपत्तीची साधना करणे शक्य असतांनाही आणेपैची उठाठेव करून विधवा पुनर्विवाहाच्या कार्यासाठी सरसावून पुढे व्हायचे, दोनचार विद्यार्थीनींपासून आरंभ करुन स्त्रीशिक्षणाच्या कामाला वाहून घ्यायचे, हे वागणं असामान्यच होते. पैसे मिळवून घरदार करावे अगर चैन भोगावी, असा विचार क्षणभरही मला शिवला नाही. अशा प्रकारचा विचार त्या काळी व सर्वकाळी केवळ अपवादात्मक स्वरुपाचा म्हणावा लागतो. वरवर पाहता त्यांनी चिपळूणकर–टिळक–आगरकर यांच्यासारखे असाधारण वर्तन पंचविशी–तिशीपर्यंत केले नाही. ज्याला विशिष्ट ब्राम्हणी म्हणावे असेच त्यांचे वर्तन वाटू शकते परंतु त्यांचे वेगळेपण केवळ काटकसरीने राहाण्यात नाही, समाजकार्य करण्यासाठी आपले पैसे वापरण्यात नाही, स्त्रीशिक्षणाच्या कार्याला पवित्र धर्मकार्य मानण्यात आहे. त्यांची कार्यनिष्ठा इतकी प्रखर की, तीसाठी त्यांनी सगळ्याच गोष्टी त्याज्य मानल्या. नि:स्वार्थ स्त्रीशिक्षणाचा कृतनिश्चय कधी सोडला नाही. १९१६ मध्ये अखिल भारतवर्षीय महिला विद्यापीठाची कर्वे यांनी केलेली स्थापना ही केवळ स्त्रीशिक्षणाच्याच संदर्भात नव्हे तर एकंदर स्त्रियांच्या प्रगतीच्या दृष्टीने महत्वपूर्ण सुरुवात होती.

कर्वे यांच्या दृष्टीने स्त्रियांच्या उन्नतीसाठी ते करीत असलेले प्रयत्न हे राष्ट्रकार्यच होते. स्वराज्यप्राप्तीच्या वेगवेगळ्या आंदोलनांपासून ते तसे अलिप्त होते याचा अर्थ त्यांनी स्वातंत्र्याकडे पाठ फिरविली होती असे नाही. त्यांनी निवडलेले शिक्षणाचे क्षेत्र हे स्वराज्यप्राप्तीच्या विविध प्रयत्नांचे एक अंगच होते. कॉंग्रेसमधील मवाळ व जहाल यांच्यातील संघर्षाचा काळ आणि आधी राजकीय स्वातंत्र्य की आधी [stamp]जिक सुधारणा यांच्यातील प्रखर विरोधाचा काळ हा सगळा काल[stamp] देशाच्या इतिहासातील चित्तथरारक कालखंड होता. या

Dongar Kathore

Special Issue 174 -New Trends in Academic Libraries and Information Literacy
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
UGC Approved Journal
2348-7143
March-2019
ADK-18-19

माहिती साक्षरतेतील कौशल्ये आणि सर्वोत्तम पध्दती

प्रा. अरविंद दशरथ कुरकुरे
ग्रंथपाल
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, ता. यावल, जि. जळगाव, महाराष्ट्र

सार -:

माहिती तंत्रज्ञानाच्या युगात माहिती ही विविध माध्यमांनी विविध स्वरुपात आणि विविध मार्गांनी प्रचंड प्रमाणात उपलब्ध होत आहे. उपलब्ध माहितीपैकी आपणास हवी ती माहिती मिळविण्याकरिता, तीचा योग्य प्रकारे उपयोग करणे करिता विशेष कौशल्याची गरज भासते. या समस्येवर उपाय म्हणून 'माहिती साक्षरता क्षमता' ही नविन संकल्पना उदयास आली. इंटरनेटच्या उपलब्धतेमुळे व प्रसारामुळे माहिती साक्षरतेच जास्त महत्व प्राप्त झाले.

प्रस्तावना -:

२१व्या शतकात माहितीचे महत्व व उपयोग किती आहे याची जाणिव प्रत्येक अभ्यासकाला होत आहे. आपआपल्या क्षेत्रात प्रगती, नविन ज्ञान आत्मसात करण्याकरिता विविध प्रकारची माहिती आवश्यक आहे. डॉक्टर, वकील, इंजिनिअर, शेतकरी, शिक्षक, संशोधक, व्यापारी, व्यावसायिक इ. क्षेत्रात काम करतांना आपल्या व्यवसायातील नविन ज्ञान, बदल, घडामोडी, संकल्पना इ. चा अभ्यास करण्यासाठी माहिती लागते. माहिती हा प्रत्येकाच्या जीवनाचा अविभाज्य घटक बनलेला आहे.

माहिती साक्षरतेचे शैक्षणिक अभ्यासक्रम अमेरिकेत सन १९८० पासुन तयार करण्यात आले. माहिती साक्षरता ही संकल्पना म्हणजे पूर्वी शैक्षणिक ग्रंथालयातून शिकवल्या जाणाऱ्या सुचियुक्त अभ्यासक्रमाचे आधुनिक स्वरुपच म्हणता येईल.

१९८७ सालच्या पदवीपूर्व शिक्षणासंबंधित अमेरिकेत सादर झालेल्या अहवालात विद्यार्थ्यांना तो स्वयम निर्देशित स्वतंत्र शिक्षणार्थी कसे होता होईल\ तसेच, त्याला आयुष्यभर निरंतर शिक्षणार्थी कसे होता येईल\ या बाबतच्या शिक्षणाची गरज स्पष्ट करण्यात आली. ही गरज लक्षात घेवुन अमेरिकन लायब्ररी असोशियनने पायाभूत काम करण्याची जबाबदारी घेवुन तसा अभ्यासक्रमही तयार करुन राबविण्याची योजना अंमलात आणली. या संदर्भात 'असोशियन ऑफ कॉलेज ॲण्ड रिसर्च लायब्ररीज' या शाखेने पाच मानके प्रसृत करुन त्यात प्रत्येक मानकासाठी क्षमता निर्देशक व अपेक्षित परिणाम तयार केले आहेत. इंग्लंड मध्ये स्कोनुल(SCONUL – Standing Conference on National and University Libraries) या संघटनेने माहिती कौशल्या संदर्भात सातस्तंभिय शैक्षणिक कार्यक्रमाचे प्रयोजन केले. ज्यामध्ये आय.टी कौशल्य हा आवश्यक मुद्दा लक्षात घेतला गेला आहे. माहिती साक्षरतेचे कार्यक्रम विविध देशांमध्ये आज प्रामुख्याने राबवले जात आहे. हे कार्यक्रम राबवतांना ग्रंथपाल समुहास भागीदार म्हणून महत्वाचे स्थान देण्यात आलेले आहे. माहिती तंत्रज्ञानाचा वापर सामाजिक संस्था करु लागल्याने माहिती साक्षर नागरिक बनविण्याची जबाबदारी ग्रंथपालांनाच पार पाडावी लागेल यात शंका नाही. त्याकरिता आधी ग्रंथपालांनी या क्षेत्रात पारंगत असणे गरजेचे आहे जेणेकरुन माहिती साक्षरता या विषयाबद्दल विद्यार्थ्यांना सखोल ज्ञान मिळेल.

माहिती साक्षरता संकल्पना व व्याख्या -:

माहिती साक्षरता म्हणजे विविध क्षमतांचा एकत्रित परिणाम, ज्यामध्ये व्यक्ती आपणास हव्या असलेल्या माहितीची गरज ओळखू शकते, तसेच ती शोधण्याची, तीचे मुल्यमापन करण्याची आणि ती परिणामकारकपणे वापरण्याची क्षमता प्राप्त करु शकते.

Dongar Kathore

SBP-19-20

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) – 6.625,
Special Issue 224 (B) : Relevance of Gandhian Thoughts
Peer Reviewed Journal
ISSN : 2348-7143
February-2020

महात्मा गांधीजींचे आर्थिक विचार

डॉ. सुरेश बी. ढाके
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर अॅप्लीकेशन
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, ता. यावल.

प्रस्तावना:

महात्मा गांधी यांचे आर्थिक विचार हे सत्य,अहिंसा, श्रम आणि प्रतिष्ठा व साधेपणा या तत्वावर आधारित आहेत. त्यांच्यामते अर्थशास्त्र आणि नीतिशास्त्र यांना परस्परांपासून वेगळे करण्याचे कारण नाही.त्यांचे विचार हे व्यवहारवादी होते. किमान गरजा आणि साधी राहणी गृहित धरून त्यांनी आपले आर्थिक विचार मांडले. मनुष्याने आपल्या गरजा मर्यादित केल्या,राहणी साधी ठेवली तर मनुष्याला सुख आणि समाधान प्राप्त होईलअसे महात्मा गांधींना वाटत होते. महात्मा गांधी यांनी मांडलेले काही आर्थिक विचार खालिलप्रमाणे आहेत-

१) विशस्त कल्पना :

गांधीच्या आर्थिक विचारात विशस्ताची कल्पना हा एक महत्वाचा भाग आहे.गांधीजींनी सत्य आणि अहिंसा या तत्वाचा पुरस्कार केलाच पण त्यांच्याबरोबर अपरिग्रह या कल्पनेतूनच विशस्ताची कल्पना निर्माण झाली. अरिग्रह म्हणजे संग्रह न करण्याची वृती . महात्मा गांधी च्या मते समाजातील लोकांनी संपत्तीचा मालमत्तेचा संग्रह न करण्याचे ठरविले तर समाजातील आर्थिक विषमता कमी होईल.सर्व प्रकारच्या विषमतेला गांधीजींचा विरोध होता.परंतु खाजगी मालमत्तेच्या विरूध्द ते नव्हते.खजगी मालमत्तेचा दुरूपयोग होऊ नये असे त्यांना वाटत असे.त्यांच्यामते समाजातील लोकांनी स्वत:च्या गरजा पूर्ण होतील एवढी संपत्ती स्वत:जवळ ठेवावी आणि राहिलेली संपत्ती समाजासाठी वापरावी.त्यांच्यामते आदर्श समाजात अपरिग्रह वृती जोपासली पाहीजे. तेव्हा समाजातील विषमता विषमता कमी होई पर्यंत श्रीमंत लोकांनी संपत्तीचे मालक न समजता विशस्त समजावे अशी गांधीजींची अपेक्षा होती. महात्मा गा धी यांच्यामते एखादया व्यापाऱ्याला धंद्यात नफा झाला असेल तर ती सर्व संपती त्यांच्या मालकीची नसून समाजाच्या मालकीची असते.

२) सर्वोदय:

सर्वोदय या कल्पनेचा वापर करणारे , आधुनिक काळातील गांधीजी कदाचीत पहिले विचारवंत असतील. सर्वोदय या संकल्पनेचा अर्थ सर्वांचा उदय किवा सर्वांचे कल्याण असा होतो.समाजातील सर्व घटकांचे कल्याण व्हावे असे गांधीजींना वाटत होते.त्यामुळेच त्यांनी सर्वोदय या कल्पनेचा आधार घेतला .बेथेम यांनी मांडलेली कल्याणाची कल्पना महात्मा गांधी यांना अपुरी वाटली आणि म्हणून गांधी यांनी सर्वोदयाची कल्पना मांडली.कालांतराने सर्वोदय ही कल्पना त्यांच्या जीवनाचा आधार बनली . महात्मा गांधी यांच्यामते सर्व प्रकारच्या राजकीय आणि सामाजिक दु:खावर सर्वोदय रामबाण औषध ठरेल. महात्मा गांधीनी सर्वोदयाची कल्पना मांडताना भिन्न भिन्न विचारसरणीमधील चांगल्या कल्पनांचा स्विकार करण्याची आणि वाईट-कल्पनांकडे दुर्लक्ष करण्याची भुमिका स्विकारली .जसे सर्वोदय कल्पना,भांडवलशाही, समाजवादी आणि लोकशाही समाजवादाच्या विरोधी आहे असे नाही. या कल्पनात चांगल्या गुणांचा स्विकार व वाईटांचा त्याग केलेला आहे. महात्मा गांधी यांना असे वाटत होते की, सध्याची अर्थव्यवस्था मानवी मूल्य,विशास आणि समाजाची वागणूक यामध्ये सर्वोदयाद्वारे आमुलाग्र बदल करता येऊ शकेल. महात्मा गांधीजींच्या मते सर्वोदयामध्ये जीवनाच्या सामाजिक,राजकीय बाजूंचा अभ्यास अपेक्षित आहे. सर्वोदयाची कल्पना भारतीय भारतीय संस्कृती आणि भारतीय जीवनांचे आदर्श या कल्पनावर उभी आहे.सर्वांचे कल्याण साधणे हे सर्वोदयाचे उदिष्ट असल्याने साहजिकच या चळवळीद्वारे प्रत्येकाला काम, पुरेसे अन्नवस्त्र आणि निवारा मिळण्याची खात्री होईल.

३) ग्राम स्वराज्य :

ग्रामीण भागात सुप्त बेकारी , ग्रामीण लोकांची कामासाठी शहरी भागाकडे धाव असे प्रकार त्याकाळात नव्हते. याचाच अर्थ लोकांचे जीवन परिपूर्ण होते.म्हणूनच महात्मा गांधी म्हणत असत की, खरा भारत खेडयात नांदतो,म्हणूनच खेडयाकडे चलो

Dongar Kathore

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625,
Special Issue 224 (A) : Relevance of Gandhian Thoughts
Peer Reviewed Journal
ISSN : 2348-7143
February-2020

महात्मा गांधीजीचे आर्थिक विचार

प्रा. डॉ. विनोद झामा मोरे
सहाय्यक प्राध्यापक -अर्थशास्त्र विभाग
कला वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन
महिला महाविद्यालय डोंगरकठोरे,
ता.यावल.जि.जळगांव
मो.नंबर-७७०९४१८३८०
Email-vzmore39@gmail.com

प्रस्तावना -

मानवतेचे थोर उपासक राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद गांधी यांचा जन्म गुजरात राज्यातील पोरबंदर येथे २ ऑक्टोबर १८६९ रोजी झाला. शालेय शिक्षण पोरबंदर येथे झाले. त्यांचे विद्यार्थिजीवन फारसे चमकदार नव्हते, मात्र पुढे त्यांच्या बंधूंनी गांधीजींना शिक्षणासाठी विदेशात पाठविले .तेथे त्यांनी कायद्याचाअभ्यास केला. कायद्याचे शिक्षण घेतल्यानंतर गांधीजींनी भारतातच वकिली व्यवसायास प्रारंभ केला. एका भारतीय व्यावसायिकाचा खटला चालविण्यासंदर्भात ते दक्षिण आफ्रिकेत गेले व त्यांच्या जीवनाला कलाटणी देणारे प्रसंग घडले. गांधीजींवर टॉलस्टॉय, रस्किन आणि थोरो या तत्वज्ञांच्या विचारांचा विलक्षण प्रभाव पडला. टॉलस्टॉय यांच्या ' किंगडम ऑफ गाड विदिन यू ' या ग्रंथातील संदेशामुळे गांधीजी भारावून गेले होते. ते अहिंसेचे पुजारी व सत्याचे उपासक बनले. अहिंसक युध्द व शांततामय क्रांती या अद्भुत संकल्पनांच्या आधारे गांधीजींनी अभिनव चळवळ भारतातील जनतेसमोर मांडली. सत्य आणि अहिंसा या दोन तत्वांची आयुष्यभर त्यांनी जोपासना केली. त्यांच्या संपूर्ण चळवळीला नीतिशास्त्राचा आधार होता. रचनात्मक कार्यक्रमावर त्यांनी भर दिला. खादी व ग्रामोद्योगास उत्तेजन दिले. सामाजिक भेदाभेद नष्ट करण्यासाठी अहर्निश प्रयत्न गांधीजींनी केले.

गांधीजींच्या प्रेरणेने १९४२ साली ' चले जाव 'आंदोलनास प्रारंभ केला. ब्रिटिशांनी सविनय कायदेभंग , स्वदेशी , सत्याग्रह या शस्त्रासह यशस्वी लढा देऊन साम्राज्याचा पाया खिळखिळा केला. गांधीजींनी ' यंग इंडिया ' आणि ' हरिजन ' ही दोन नियतकालिके चालविली . यात त्यांनी वैचारिक विश्लेषण व विविध प्रश्नांवर चिंतन केले. माझे सत्याचे प्रयोग, सर्वोदय,खादी, आत्मशुध्दी या ग्रंथाचे लेखन त्यांनी केले . १९२० ते १९४८ हा काळ ' गांधीयुग ' म्हणून ओळखला जातो. ३० जानेवारी १९४८ रोजी प्रार्थनेला जात असताना नथुराम गोडसे या माथेफिरु इसमाने त्यांच्यावर बंदुकीने जवळून गोळ्या झाडल्या. त्यातच त्यांना हौतात्म्य प्राप्त झाले.

महात्मा गांधीजी यांचे आर्थिक विचार -

म.गांधी यांचे आर्थिक विचार हे सत्य,अहिंसा,श्रम आणि प्रतिष्ठा व साधेपण या तत्वावर आधारित आहेत. त्यांच्या मते अर्थशास्त्र आणि नीतिशास्त्र यांना परस्परापासून वेगळे करण्याचे कारण नाही. त्यांचे विचार हे व्यवहारवादी होते. किमान गरजा आणि साधी राहणी गृहीत धरुन त्यांनी आपले आर्थिक विचार मांडले. मनुष्याने आपल्या गरजा मर्यादित केल्या , राहणी साधी ठेवली तर मनुष्याला सुख आणि समाधान प्राप्त होईल असे म. गांधीना वाटत होते. महात्मा गांधी यांनी मांडलेले काही आर्थिक विचार पुढीलप्रमाणे आहेत.

१) ग्रामस्वावलंबन (Village Self Sufficiency) :

भारत हा खेड्यांचा देश आहे. खेड्यामधील स्वावलंबी संस्कृतीचा स्वयंपूर्ण खेड्यांचा गांधीजींना अभिमान वाटत असे . त्यांच्या मते, इतिहासकाळात खेडे स्वावलंबी असत तर शहरे परावलंबी असत. आज शहरे स्वावलंबी आणि खेडी परावलंबी होत आहेत. गांधीजींना देशातील प्रत्येक गाव स्वावलंबी व स्वायत्त लोकराज्य व्हावे असे वाटत होते. या गावात त्या गावाच्या सर्व प्रकारच्या गरजा पूर्ण करण्याची क्षमता असावी. गावातील सर्व नागरिकांच्या सर्व प्रकारच्या गरजा तसेच सामाजिक व सांस्कृतिक गरजांची पूर्तता करण्यासाठी लागणाऱ्या वस्तू व सेवांची निर्मिती प्रत्येक गावात झाली पाहिजे. धान्य,कापूस,कापड शाळा, क्रीडांगणे, गुरांसाठी चारा इत्यादीचे पुरेसे उत्पादन गावातच व्हावे. शेतकऱ्यांनी त्यांच्या शेतजमिनीत अन्नधान्य,

Dongar Kathora

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 6.261, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue
ISSN : 2348-7143
December 2019

भारतीय महापुरुषाचे आर्थिक विचार.

प्रा.डॉ. विनोद झामा मोरे
सहाय्यक प्राध्यापक – अर्थशास्त्र विभाग कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर अप्लीकेशन,
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, ता. यावल जि. जळगाव

प्रस्तावना –

अर्थशास्त्राच्या अभ्यासाची सुरुवात व्यापारवादी आणि निसर्गवादी विचारवंतांनी मांडलेल्या विचारापासून झाली असे मानले जाते. परंतु ख–या अर्थाने अर्थशास्त्राच्या अभ्यासाची सुरुवात १७७६ मध्ये 'राष्ट्राची संपत्ती' या ग्रंथाच्या प्रसिद्धीपासून म्हणजेच अठराव्या शतकाच्या उत्तरार्धापासून झाली असेच समजले जाते. १७७६ नंतर युरोपातील आणि अमेरिकेतील अनेक विचारवंतांनी अर्थशास्त्रात महत्त्वपूर्ण भर टाकून अर्थशास्त्राला समृद्ध केले.

अलीकडच्या काळात भारतातील आर्थिक विचारांची ओळख व्हावी म्हणून काही प्राचीन भारतीय अर्थशास्त्रज्ञांच्या विचारांचा अभ्यास करण्यात सुरुवात झालेली आहे. भारतात प्राचीन काळी आर्थिक विचारवंत होते असा उल्लेख आढळतो. परंतु त्यांच्या विचारांवर आर्थिक व नैतिक विचारांचा पगडा पडलेला होता. मध्ययुगीन काळात आर्थिक विचारांना तितकेसे महत्त्व दिले गेलेले नव्हते. कारण ब्रिटिश व मोगलांच्या आक्रमणामुळे भारतीयांचे जीवन विस्कळीत झाले होते. मोगलांच्या काळात आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था नष्ट झाली होती. त्यावेळी कवींच्या व संतांच्या विचारांचे इकडेतिकडे तुटक असे आर्थिक विचार सापडतात त्यांनी आर्थिक समानतेवर अधिक भर दिलेला दिसतो.

ब्रिटिश काळात भारताचा आर्थिक विकास जवळ–जवळ झालाच नाही. त्यावेळी फक्त एकांकी स्वरूपाचा विकास झाला. पण तोही विकास ब्रिटिशांना हितकारक स्वरूपाचा होता. त्यांनी भारतातील लघु उद्योग नष्ट केले. सर्व कच्चामाल इंग्लंडला नेऊन पुन्हा तोच माल पक्क्या स्वरूपात भारतात विकून भारतीयांचे शोषण मोठ्या प्रमाणात केले. त्यांनी शेती उत्पादन क्षेत्रात तेवढाच विकास घडवून आणला जितका की, त्यांच्या हिताचा होता. आपल्या पूर्वजांनी देखील आर्थिक पैलुचा सखोल अभ्यास केला होता. परंतु त्याकाळी अर्थशास्त्राला वेगळे शास्त्र म्हणून समजले जात नव्हते. धर्मशास्त्र नीतिशास्त्र राज्यशास्त्र इत्यादी शास्त्रांचा एक भाग म्हणून या शास्त्राकडे पाहिले जात असे. परिणामी अर्थशास्त्राची व्याख्या, व्याप्ती स्पष्ट करणे शक्य होत नाही. आज उपलब्ध असलेल्या पुरातन साहित्यात सर्वात जास्त महत्त्वाचा संदर्भ ग्रंथ म्हणून कौटिल्य यांच्या 'अर्थशास्त्र' या ग्रंथाचा उल्लेख केला जातो.

कौटिल्य –

कौटिल्य, आर्य चाणक्य विष्णुगुप्त या नावाने ओळखला जातो. कोणत्याही राजाला राज्यकारभार योग्य प्रकारे चालविता यावा, यासाठी कौटिल्य यांनी ''अर्थशास्त्र'' हा मार्गदर्शक ग्रंथ लिहिला. कौटिल्याच्या मते अर्थशास्त्र धर्मशास्त्राहून वेगळे आहे. राज्याचा एकमेव उद्दिष्ट लोककल्याण साधणे हा असावा असे कौटिल्यांचे मत होते.कौटिल्य यांनीआपल्या ग्रंथात गाव आणि खेड्याचे शासन, न्यायदान राजस्व, शेती व्यापार इत्यादी अनेक विषयांची चर्चा केली आहे. कौटिल्य यांनी मांडलेले प्रमुख आर्थिक विचार पुढीलप्रमाणे आहेत.

कौटिल्यांचे आर्थिक विचार –

१) संपत्तीचे स्वरूप आणि उद्देश –

कौटिल्याच्या मते अर्थशास्त्र हे 'अर्थाचे' म्हणजेच संपत्तीचे शास्त्र आहे. संपत्तीच्या कल्पना व्यक्तीच्या गरजा आणि कल्याण यांच्याशी संबंधित होत्या. कौटिल्याच्या मते संपत्ती ही संकल्पना बरीच विस्तृत आहे. एखाद्या वस्तूच्या संपत्तीत समावेश करण्यासाठी त्या वस्तूत काही गुणधर्म वैशिष्ट्ये आवश्यक असतात. संपत्ती म्हणजे वास्तविकता उपभोगक्षमता, हस्तांतरण आणि मालकी हक्क प्रस्थापित करणे हे वैशिष्ट्ये असणा–या कोणत्याही भौतिक वस्तूला संपत्ती म्हणता येते. या वैशिष्ट्यांमुळेच त्यांनी १) पैसा आणि वस्तू २) मिळविता येण्यासारखे धन ३) खासगी आणि

Dongar Kathore

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.625, | February-2020
Special Issue 224 (B) : Relevance of Gandhian Thoughts
Peer Reviewed Journal

महात्मा गांधींचे शैक्षणिक विचार

डॉ . आशालता के. जावळे
कला,वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन,
महिला महाविद्यालय,डोंगर कठोरे,
ता.यावल,जि.जळगाव.
मो.नं.९४२३११००७४

प्रस्तावना

महात्मा गांधी यांना स्वयंभू शिक्षण विचार विकसित करायचा होता.त्यासाठी त्यांनी २२,२३ व २४ ऑक्टोबर १९३७ रोजी वर्धा येथे झालेल्या शैक्षणिक परिषदेतून आपले शिक्षण विषयक विचार मांडले. त्यांच्या शिक्षण पध्दतीला वर्धा योजना , मूलोद्योगी शिक्षण, नई तालीम, बुनीयादी शिक्षण व जीवन शिक्षण इ. नावे दिली आहेत.गांधीजी म्हणत मी हिंदुस्थानला अनेक गोष्टी दिल्या .त्यात मी दिलेली वर्धा शिक्षण योजना व शिक्षण पध्दती ही सर्वात महत्त्वाची गोष्ट आहे . वर्धा शिक्षण योजना ही त्यांच्या जीवनभर चालविलेल्या मंथनातील अमृत आहे. राष्ट्रीय शिक्षण विचार विकसित करतांना त्यांनी भारतातील तत्कालीन परिस्थिती, इंग्रजांचे धोरण आणि भारतीय शिक्षणसंस्था पुढील आव्हाने या सर्व बाबींचा विचार करून नवा विचार विकसित केला. या शिक्षण विचारामध्ये स्वावलंबन, आत्मसन्मान आणि श्रमप्रतिष्ठा ही तीन मूल्ये रुजविण्याचा प्रयत्न केला. शिक्षणाच्या प्रक्रियेत हाताचे सुयोग्य स्थान पहिल्यांदा गांधीजींनीच निर्धारित केले. ही त्यांची शिक्षण क्षेत्रास मिळालेली देणगी होय. गांधीजींची शिक्षण योजना परिपूर्ण होती हे त्यांनी समाजशिक्षण,प्रौढ शिक्षण, स्त्रिशिक्षण, हरिजन शिक्षण व विद्यापीठीय शिक्षण इ. संबंधी केलेल्या विवेचनावरुन दिसते. गांधीजींचा शैक्षणिक विचार शिक्षण आणि राष्ट्रजीवन यांना जोडणारा आहे. तसेच व्यक्तीमत्वाच्या विकासातील बौध्दिक विकास, आध्यात्मिक विकास आणि शारीरिक विकास या तिनही दृष्टीने व्यक्तिमत्वाच्या सकल अंगांना स्पर्श करणारा आहे.मी पक्षा आम्ही महत्वाचा आहे.आपण सर्वांनी मिळून राष्ट्रजीवन बदलावयाचे आहे असा त्यांच्या स्वच्छ, सुस्पष्ट आणि पारदर्शी विचार होता.

स्वावलंबन, स्वयंपूर्णता व चरित्र संवर्धन ही गांधीप्रणित शिक्षण विचारांची उद्दिष्टये आहेत. गांधीजींनी शिक्षण प्रक्रियेत श्रमास अधिक महत्त्व दिले. शिक्षणामुळे बुध्दी, कृती व भावना यांचा समप्रमाणात विकास व्हावा असे त्यांचे मत होते. शिक्षणाच्या माध्यमातून क्षमता, सहिष्णुता व सहकार्य निर्मिती झाली पाहीजे. संस्कृती हा शिक्षणाचा पाया आहे. विद्येचा उपयोग विद्यार्थ्यांमध्ये नैतिकवृत्ती दृढ करण्यासाठी झाला पाहिजे. असे त्यांचे मत होते.

शिक्षणाच्या माध्यमासंबंधी विचार

मातृभाषा किंवा प्रादेशिक भाषा हे शिक्षणाचे माध्यम असले पाहिजे. इंग्रजी माध्यम असणारी शिक्षण पध्दती चुकीची आहे. असे गांधीजींचे मत होते. सर्व शिक्षण विद्यार्थ्यांना प्रादेशिक भाषेतून दिले जावे कारण भारतीय परंपरा, संस्कृती, साहित्य व कला यांपैकी कोणत्याही गोष्टीशी इंग्रजी भाषेचा मेळ बसत नाही म्हणून प्रांतिय भाषेचा दर्जा व व्यावहारिक महत्व वाढावे अशी गांधीजींची इच्छा होती. इंग्रजी ही आमच्या गुलामगिरीची व अधःपतनाची स्पष्ट निशाणी आहे असे गांधीजींना वाटत असे. विज्ञान, व्यापार व आंतरराष्ट्रीय व्यवहार या क्षेत्रातील इंग्रजीचे महत्व गांधीजीना मान्य होते. मात्र इंग्रजी भाषेची सक्ती असु नये. असे त्यांचे मत होते.

शिक्षकासंबंधी विचार

शिक्षकाचे कार्य केवळ ज्ञानदान नसून विद्यार्थ्यांमध्ये सत्य, सहिष्णुता व सहानुभूती निर्माण करणे हे ही आहे. असे त्यांचे मत होते. शिक्षकच विद्यार्थ्यांचे खरेखुरे पाठ्य पुस्तक आहे असे गांधीजींना वाटत असे. शिक्षक हा उत्साही, कल्पक, चारित्र्यसंपन्न व श्रध्दावान असला पाहिजे. स्वतःच्या विषयाचे त्याला पूर्ण ज्ञान असले पाहिजे. चारित्र्यहिन शिक्षक हा रुचीहीन मिठासारखा होय असे गांधीजींना वाटत असे.

Dongar Kathore

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Vol. 7, Issue 1
Peer Reviewed Referred & Indexed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. Feb. March. 2020

प्रसार माध्यमे व सामाजिक विकास

डॉ. आशालता के. जावळे
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन, महिला महाविद्यालय,
डों. कठोरे, ता.यावल, जि.जळगाव.
Gmail- mahajanashalata@gmail.com
मो.नं. ९४२३' ...०७४

प्रस्तावना :-

प्रसार माध्यमे ही समाज बदलाची साधने आहेत. लोकजागृतीसाठी विविध प्रसार माध्यमांचे मोठे योगदान लाभले आहे. माहिती देणे, लोकशिक्षण, मनोरंजन या वैशिष्ट्यांमुळे समाजमनावर त्यांचा प्रभाव दिसून येतो. प्रसार माध्यमांचे क्षेत्र दिवसागणिक विस्तारत आहे. माहिती देणे, शिक्षण देणे, मनोरंजन करणे व प्रबोधन करणे ही चतुःसूत्री प्रसार माध्यमांचा आत्मा आहे. वृत्तपत्रे, वृत्तवाहिन्या, ऑनलाईन पत्रकारिता या माध्यमातून पत्रकारिता सामाजिक कार्य करीत असते. काळानुरुप पत्रकारितेच्या क्षेत्रात आमुलाग्र बदल झालेले आहेत. माध्यमांचे क्षेत्र तर विस्तारले आहे त्यासोबत कार्यपध्दतीही बदलत आहे. बदलती कार्यपध्दती चांगले व वाईट परिणाम देणारी आहे. प्रसारमाध्यमे ही समाजाचा आरसा आहेत. समाजात घडलेली प्रत्येक घडामोड टिपून तिला घराघरात पोहचविण्याचा व्यवसाय ते करत असतात. आज वेगवेगळी माध्यमे नकळतपणे आपल्या जीवनव्यवहाराला जोडली गेली आहेत. प्रसारमाध्यमांनी आपल्याला इतके घट्ट कवेत घेतले आहे की आपण कितीही प्रयत्न केले तरीही मिठी सैल करणे शक्य नाही. आकाशवाणी, दुरदर्शन, वृत्तपत्रे, इंटरनेट, फोन, चित्रपट , नाटक आणि लेखनग्रंथ ही सर्व प्रसारमाध्यमे आपल्या रोजच्या जीवनाशी प्रत्यक्ष संबंध प्रस्थापित करतात. आपल्या विचाराला आणि कृतीला ती जोडली जातात. एकुणच माहितीसाठी व्यक्ती पर्यायाने समाज प्रसार माध्यमांवर अवलंबून आहे. सामाजिक बदल घडवून आणण्यासाठी प्रसारमाध्यमे ही आवश्यक झाली आहेत.

प्रसारमाध्यमांची समाजव्यवस्थेतील भूमिका :-

विकास वाढीसाठी परिवर्तनाचा विचार आणि विस्तार करण्यासाठी प्रसारमाध्यमे फार मोठे अनुकूल साधने ठरतात. विकास विषयक प्रतिमानांचा विचार करीत असतांना केवळ भौतिक विकासासोबत जनतेचा मानसिक विकास होणे, त्यांचे वर्तन परिवर्तन महत्वाचे असते कारण विकासाची सर्व साधने उपलब्ध असूनही समाजाची मानसिकता बदलत नसेल तर खऱ्या अर्थाने विकास घडून येणे अवघड असते. मनाच्या विकासातून माणसाची मनोभूमिका प्रगल्भ होणे गरजेचे असते. शिक्षणाची सतत ही धडपड असते. माध्यमे अशा प्रकारचे शिक्षण विविध संदेशाच्या मार्फत देत असतात. विकासात्मक प्रक्रिया साधत असतांना समाजाला विविध समस्यांमधून जावे लागत असते. या सर्व समस्या आणि अडचणींचे निराकरण करण्यासाठी वैचारिक भूमिका प्रगल्भ करण्याचे, लोकशाही जीवनपध्दती रुजविण्याचे महत्वाचे कार्य प्रसारमाध्यमे करीत असतात. समाज व्यवस्था टिकवून ठेवणे, त्यासाठी स्थैर्य, समता व शांततेचे वातावरण निर्माण करणे आज फार मोठी समस्या होऊन बसली आहे. "समाज व्यवस्था टिकवून ठेवणे व तिच्यात निरोगी विचारप्रवाह सातत्याने गतिमान ठेवणे ही माध्यमांची प्रमुख कामगिरी असते."१ आपल्या देशात विविध जाती धर्मांचे लोक राहतात. त्या सर्वांमध्ये एकात्मता आणि समरसता आणण्याचा प्रयत्न केवळ शिक्षणातून होणे संभवनीय नाही. समाजात एक दुसऱ्याबद्दलचा द्वेष धुमसत असतो. त्यामुळे अनेक जातीय दंगे वेळोवेळी भडकतात अशावेळी समाजातील कटुत्वाची भावना कमी करण्याचे आव्हान माध्यमांना पेलावे लागते. सामाजिक परिवर्तन आणि विकासाच्या माध्यमातून नवा समाज घडविण्यासाठी शिक्षणाची जेवढी आवश्यकता आहे तेवढी प्रसारमाध्यमांची देखील आवश्यकता

Dongar Kathore
Scanned with CamScanner

SMD-1920

Power of Knowledge Peer Review Journal,Volume : III, Issue :III Oct. to Dec. 2019 ISSN 2320-4494 Impact factor 2.7286

भास्कर चंदनशीव यांच्या ग्रामीण कथासाहित्यात चित्रित झालेले वंचिताचे प्रश्न

प्रा.डॉ.शकुंतला एम.भारंबे

कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन महिला महाविद्यालय,

डोंगरे कठोरा, ता.यावल जि.जळगांव

कथा हा काव्याइतकाच प्राचीन प्रकार आहे. महाकाव्यादि काव्यातून अनेक कथा [illegible] झाल्या आहेत. आंग्ल संपर्काने आधुनिक मराठी साहित्यावर फार मोठा परिणाम झाला. मध्यवर्ती [illegible]जले जाणारे मराठी साहित्य मध्यमवर्गीय नागर अभिरुचीतून निर्माण होऊ लागले. मात्र म. फुले व सत्यशोधक समाजाने श्रमिक, वंचित शेतकऱ्यांच्या प्रश्नांना वाचा फोडली. शेतकरी हा देशाचा नायक आहे हे सत्य प्रथम ठोसपणे वाचकांपुढे प्रतिपादले. खेडेगावातील हा अफाट ग्रामसमुदाय म्हणजेच खरा भारत देश आहे अशी त्यांची भुमिका होती. म. फुले यांच्या 'शेतकऱ्यांच्या आसूड' पासूनच खरे शेतकऱ्यांच्या प्रश्नांना वाचा फुटलेली आहे. ग्रामीण कथा साहित्य हे दलित कथा साहित्याइतकेच विद्रोही नसेल पण प्रस्थापित विषमताधिष्ठित शोषक समाजव्यवस्थेच्या विरुध्द त्याने बंडाचे निशाण उभारलेले दिसून येते म्हणूनच ग्रामीण कथासाहित्याला सर्व शोपितांचे, वंचितांचे खुले व्यासपीठ म्हटले जाते. स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर शेती क्षेत्रात आमुलाग्र बदल झाले. सहकार औदयागिकीकरण आणि राजकारण यांनी हातात हात गुंफले आणि पुन्हा शोषणव्यवस्थेचा चेहरा बदलला. स्वातंत्र्यप्राप्तीआधीही शेतकरी वंचित घटक होता आणि आताही तो वंचितच आहे. त्याच्यापुढे जीवन जगण्याच्या वेगवेगळया संदर्भात प्रश्नांची मालिकाच उभी राहते.

भास्कर चंदनशीव हे ग्रामीण कथाकार असून त्यांची कथा ग्रामीण संवेदना केंद्रस्थानी घेऊन आकारास आली. ती ग्रामीण समकालीन वास्तवाला थेट सामोरी जाणारी आहे. या ग्रामीण भागातील जनसमुदाय म्हणजेच भारत देश आहे. हा शेतकरी जगाचा पोशिंदा आहे हे ओळखूनच त्यांच्या काही कथांचा नायक शेतकरी आहे. या नायकाला कोणत्या ना कोणत्या प्रश्नांना सामोरे जावे लागते. त्यांची 'बिरडं' ही कथा कर्जबाजारी झालेल्या शेतकऱ्याच्या होरपळीची कर्मकहाणीच आहे. संबंध गामजीवन प्रचंड दारिद्रय आणि भयावह उदध्वस्तपणाने भरलेले आहे. शेतकऱ्याची सुगी पिकली की त्याच्यातील दानशूर कर्ण जागा होतो. पण दुष्काळाचे संकट आले की तो पार कोसळून जातो, कोलमोडून पडतो, ढसढसून रडतो. कायमस्वरुपी कवाडाचे धनी होऊन जगणारा शेतकरी किती दुःखी-कष्टी असतो याची जाणीव करुन देणारी, कारुण्याच्या सहवेदनेवर नेऊन सोडणारी ही कथा आहे. दारिद्रयाने त्रस्त झालेल्या गणाभाऊची व्यथा या कथेत चित्रित झालेली आहे. बैल गहाण ठेऊन आर्थिक नड भागविणाऱ्या सामान्य शेतकऱ्याच्या दुःखाची तीव्रता वाचकांना अस्वस्थ करणारी आहे. शोषित शेतकरी सावकाराच्या पाशात अडकतो त्याची जगण्यासाठी जीवघेणी धडपड परिणामकाररितीने या कथेत व्यक्त झालेली आहे.

'काळइळा' या कथेत बहुजन समाजातील शेतकऱ्याच्या शापित पिढयांचा इतिहासच दृष्टीस पडतो. ग्रामीण भागातील शेतकरी दारिद्री अवस्थेत जगत असला तरी आपला मुलगा खूप शिकून चांगल्या नोकरीला लागेल अशी आशा बाळगणारा आहे. आपल्याला जे सुख मिळाले नाही ते सुख आपल्या मुलाला मिळाले पाहिजे असे त्यांना वाटते. यासाठी माय-बाप खुप खस्ता खातात. मराठा-पाटील कुटुंबातील असूनही बलुतेदारांच्या घरी उसने पैसे मागायला जाते पण तिला पैसे मिळत नाही ही खंत व्यक्त करतांना ती म्हणते, "काय करावं? कुठं जावं? माणसाची दानतबी आटत चाललीया, अ[illegible]टावर सुध्दा कुणी फुकट मुतायचं

Dongar Kathora

SMB-19-20

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Vol. 6, Issue 4 (B)
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Oct.-Nov.-Dec. 2019

संत चोखोबा : भक्ती आणि कवित्व

प्रा. डॉ. शकुंतला एम.भारंबे
कला,वाणिज्य व कॉम्प्युटर अॅप्लीकेशन
महिला महाविदयालय,डोंगर कठोरे
Mob.No.9423279734
smbharambe37@gmail.com

नामदेवकालीन संत चोखोबा यांच्या जन्मस्थळाविषयी वेगवेगळी मते आढळून येतात. चोखोबांचे जन्मगाव पंढरपूरपासून काही अंतरावर असलेले मंगळवेढा हे होत. परंतु काहींच्या मते त्यांचा जन्म विदर्भातील बुलढाणा जिल्हयात वसलेले मेहूणपूरी किंवा 'मेहूण' या गावी झाला. तर संत नामदेवांच्या अभंगात कोरेगावचा उल्लेख आहे. त्यांचे आई-वडिल हे पांडुरंगाचे भक्त होते. त्यांच्या आई-वडिलांची पांडुरंगावर निष्ठा होती. या भक्तीचा संस्कार चोखोबावर झाला. त्यांची राहणी फार स्वच्छतेची होती. आपल्या नेहमीच्या कार्याबरोबर पांडुरंगाचे ध्यान करीत असत. चोखोबा महार जातीचे असल्यामुळे त्या काळात समाजाकडून अनेक हीन दर्जाची कामे करुन घेतली जात होती. समाजाकडून प्राप्त झालेली जी ती कामे असतील ती मोठ्या निष्ठेने स्वीकारुन ती पूर्ण करणे हेच या समाजाचे काम होते. त्यांच्या जवळ प्रामाणिकपणा, विश्वासूवृत्ती, शूरपणा व पैराक्रमीवृत्ती हे गुण असूनही या समाजात अस्पृश्य म्हणून मानहानीचे व हीनतेचे जीवन जगावे लागत होते. ते महार जातीचे असले तरी आचरणाने ब्रम्ह जाणणारे होते. बंका महार आपल्या अभंगात म्हणतात -

"चोखा चोखट निर्मळ | त्या अंगी नाही मळ
चोखा सुखाचा सागर | चोखा भक्तीचा आगर"१

महार जातीतील अनेक भावीक या भक्तीमार्गाकडे वळले. चोखामेळा हे यात प्रमुख होते. सामाजिक प्रतिष्ठेच्या दृष्टीने अतिशुद्र गावाबाहेर नांदणारे, दुःख आणि दैन्य यांचा वारसा वागवणाऱ्या कुळातले आणि गाव सांगेल ते सष्ट करणारे, गाव देईल ते खाऊन जगणारे होते. त्यांना त्या जीवनात अनंत अशा मरणप्राय वेदना सहन कराव्या लागत होत्या. ज्ञानदेवांनी चोखेबा व अनेक दीनदलित संतांना परमार्थाची वाट मोकळी करुन दिली. ज्ञानदेवांनी सांगितलेला भक्ती मार्गाचा अवलंब चोखेबांनी मोठ्या निष्ठेने उरी बाळगून त्यानुसार आपला जीवनमार्ग स्वीकारला. त्यांचे सर्व कुटुंबच विठ्ठल भक्तीत रंगून गेले होते. त्यांची पत्नी सोयरा, बहिण निर्मला, मेहूणा बंका व मुलगा कर्ममेळा असे सर्व कबाडकष्ट करीत असतांनाच नित्यनियमाने व मोठ्या भक्ती भावाने पांडुरंगाचे नामस्मरण करीत असत. पांडुरंगाच्या भक्तीने त्यांच्या सर्वांचा शीण नाहीसा होत होता. त्यात त्यांना समाधान लाभत होते.

"सुखाशी मिराशी | आमुची हे पंढरीशी |"२|

असे त्या सर्वांचे मत होते. संत नामदेवांची कृपादृष्टी आपल्यावर झाली तरी सुध्दा विठ्ठलाचे दर्शन आपल्याला दुरुनच का घ्यावे लागते? इतरांसारखेच आपण असूनही आपल्याला मंदिरात प्रवेश का नाही? ही संत चोखोबांच्या मनात होती पण कधी कधी स्वतःच स्वतःचे समाधान करीत असत की लांबून का होईना आपल्याला परमेश्वराची भक्ती करता येते अशी श्रध्दा चोखोबांची होती.

संत. चोखामेळा यांच्या चरित्रात त्यांच्याविषयी अनेक चमत्कार नोंदविले आहेत. ज्याप्रमाणे जनाबाईच्या दळणकांडणात मदत म्हणून प्रत्यक्ष पांडुरंगाने सेवा केली त्याप्रमाणे संत चोखामेळाबरोबर पांडुरंगाने मेलेली गुरे ओढण्याचे काम केले. महारांना देवळात जाऊन दर्शन घेण्यास मनाई होती पण तरीही चोखोबा दुरुनच देवाचे दर्शन घेत असे पण मनात खूप व्यथित होत असे. अशा या भक्तासाठी पांडुरंगाने प्रत्यक्ष देवळात नेऊन दर्शन दिले व आपला रत्नहार, तुळशीची माळ चोखोबांच्या गळ्यात घालून कपाळी बुक्का लावला. तसेच त्यांच्या पुत्रप्राप्तीबद्दल चमत्कार

Dongar Kathora

SMB-19-20

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625,
Special Issue 224 (A) : Relevance of Gandhian Thoughts
Peer Reviewed Journal
ISSN : 2348-7143
February-2020

गांधी विचारांचा बारोमास मधील एकनाथवर पडलेला प्रभाव

प्रा. डॉ. शकुंतला एम. भारंबे
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन महिला महाविद्यालय,
डोंगर कठोरे, ता. यावल, जि. जळगांव.

आधुनिक भारताच्या इतिहासात महात्मा गांधीजींचे स्थान अत्यंत महत्त्वाचे आहे. आंदोलनातील भारतीयांच्या कृतींचा आधार गांधी तत्वज्ञानात होता. महात्मा गांधींनी स्वातंत्र्य आंदोलनाच्या काळात केवळ ब्रिटिशांशी असहकार केलेला नव्हता तर त्यांनी विधायक कार्यक्रमावरही भर दिला होता. भारतीय इतिहासातील १९२० ते १९४७ पर्यंतचा कालखंड गांधीयुग म्हणून ओळखला जातो. या काळात महात्मा गांधी हे राष्ट्रीय ऐक्याचे प्रतिक बनून राहिले होते त्यांच्या शब्दासाठी हजारो देशभक्त आपल्या देशासाठी प्राणाची आहुती देण्यास तत्पर होते म्हणूनच स्वातंत्र्य आंदोलनातील हा कालखंड गांधीयुग या नावाने ओळखला जातो. सामाजिक, राजकीय व शैक्षणिक चळवळीचे नेतृत्व गांधींनी केले होते. सत्य, अहिंसा आणि प्रेम ही त्रीसुत्री त्यांनी अंगीकारलेली होती.

महात्मा गांधी हे श्रेष्ठ मानवतावादी होते. भारताच्या राष्ट्रीय स्वातंत्र्याच्या आंदोलनाला त्यांनी नेतृत्व दिले आणि त्यांच्या नेतृत्वाचे वैशिष्टय असे की त्यांनी सामान्य जनतेचा विश्वास संपादन करुन निःशस्त्र प्रतिकाराचा नवामंत्र दिला. त्यांच्या विधायक कार्यात खादी व ग्रामोदयाग यांचा प्रसार, स्वदेशी संकल्पना, जातीय ऐक्य ,स्त्री जागृत, प्रौढ शिक्षण इ. चा समावेश होतो. महात्मा गांधीजींच्या कार्याचा, चळवळींचा समाजमनावर फार मोठा प्रभाव पडलेला दिसून येतो.पर्यायाने ' खेडयाकडे चला ' या मंत्राने अनेक साहित्यिकांचे लक्ष खेडयाकडे ग्रामीण जीवनाकडे गेले. त्यांनी ग्रामीण जीवन शब्दबध्द केले. ज्यांना समाजातील शोषण, दारिद्रय, परपीडा, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, ढोंग, बदमाशी, गुंडप्रवृत्ती, माणसांचे संपलेपण, त्यांची तडफड, भोळेपण, शोषिकता जाणवली त्यांनी लेखनाच्या, साहित्याच्या माध्यमातून मांडण्याचा प्रयत्न केला. गांधी विचारांचा मराठी कादंबरीवर जास्त प्रभाव पडलेला जाणवतो. त्यामुळेच खऱ्या भारताचे म्हणजे पर्यायाने खेडयाचे खरे स्वरुप जाणून घेण्यास मोठी मदत होत असते.

सदानंद देशमुख यांची ' बारोमास ' ही शेतकऱ्यांच्या जीवनावरील वास्तववादी कादंबरी आहे. शेतीप्रधानता हे मुख्य वैशिष्टय असलेल्या भारतातील गरीब शेतकऱ्यांच्या जीवनातील दुःखाचे चित्रण सदानंद देशमुख यांनी कादंबरीतून केले आहे. ' बारोमास ' या नावातच ही कादंबरी शेतकऱ्यांचे सततचे दुःख अभिव्यक्त करणारी असल्याचे जाणवते. बाराही महिने म्हणजेच संपूर्ण आयुष्यभर दुःखाचा डोंगर झेलणारा कष्टकरी वर्ग म्हणजे शेतकरी तिथी, वार, ऋतु, महिने, कामाचे स्वरुप वगैरे सर्वकाही बदलत असते परंतु दुःख मात्र त्यांचा पीछा सोडत नाही. ऐंशीनंतरचा बदलता ग्रामीण पट या कादंबरीत आलेला आहे " ग्रामीण वास्तव या कादंबरीत पहिल्यांदाच इतक्या धरदारपणे व्यक्त होते. त्यातील व्यक्ती, प्रसंग, वातावरणनिर्मिती, निसर्गाची रुपे आणि गावगाड्याची झालेली वाताहत याचे चित्रण आजपर्यंतच्या ग्रामीण कादंबरीत इतक्या प्रभावीपणे फार क्वचितच झाले असावे." असे प्रल्हाद वडेर यांनी कादंबरीचे परिक्षण करतांना आपले मत नोंदवलेले आहे.

एकनाथ हा ' बारोमास ' कादंबरीचा नायक. तो त्याच्या पिढीचे, समाजाचे प्रतिनिधित्व करतो. शांत, संयमी, संवेदनशील, कवी मनाचा, वाचन-लेखन करणारा, मनस्वी, दुसऱ्याला समजून घेणारा आणि समाजशील असा आहे. अतिशय प्रतिकुल परिस्थितीत शिक्षण घेऊन एम . ए. बी. एड. शिकलेला असून अनेक ठिकाणी मुलाखती देऊन शेवटी त्याच्या वाट्याला निराशा आलेली असते. त्यामुळे तो म्हणतो, "पात्रतेनुसार सगळ्यांना समान पातळीवर कमाई करता येईल. राहणीमान सारखे ठेवता येईल अशी समाजव्यवस्था म्हणजे खरी समाजव्यवस्था" चांगल्यापैकी शिकुन देखील नोकरी मिळत नाही म्हणून शेतीमध्ये काम करण्यास कमीपणा वाटत नाही. म. गांधींनीही कोणत्याही प्रकारच्या कामाला कमी प्रतीचे समजले नाही . त्यांच्या मते काम किंवा श्रम हे कोणत्याही प्रकारच्या संपत्ती किंवा भांडवलापेक्षा कमी नाही. श्रम किंवा कामाची पूजा करावी असे ते म्हणत.असा हा शेतात राबणारा एकनाथ आपल्याला आपल्यापैकीच एक वाटतो आणि आहे त्या परिस्थितीत जीवन जगण्याचा प्रयत्न करतो.

Dongar Kathore

ISSN : 2348-7143
February 2021
RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.625 | Special Issue 238 : प्रसार माध्यमे आणि समाज

SMB-1920

वृत्तपत्र या प्रसारमाध्यमाचा इतिहास

प्रा. डॉ. शकुंतला एम. भारंबे
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर अॅप्लीकेशन
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, ता. यावल, जि. जळगांव.

जागतिक आणि भारतीय स्तरावरील वृत्तपत्रांचा इतिहास हा सुमारे २० वर्षाच्या आसपासचा आहे. मराठी वृत्तपत्रांचा विचार करीत असतांना दोन कालखंड पाडून करावा लागेल. पहिला कालखंड स्वातंत्र्यपूर्व व दुसरा कालखंड स्वातंत्र्योत्तर असा विभागला गेला आहे. पंधराव्या शतकात जर्मनमध्ये गटनबर्गने मुद्रणकलेचा शोध लावला आणि पहिला छापखाना सुरु केला. ही घटना माहिती क्षेत्रात क्रांतीकारक ठरली व माहिती क्रांतीचा पाया रचला गेला. ह्याच मुद्रणक्रांतीतून पुढे वृत्तपत्रांचा जन्म झाला.

भारतीय वृत्तपत्रांचा विचार करीत असतांना वृत्तपत्रांच्या जनकत्वाचा मान भारतीय चळवळीचे उद्गाते राजा राममोहन रॉय यांच्याकडे जातो. याचे कारण म्हणजे वृत्तपत्राच्या इतिहासात बंगालमधील घडामोडींना महत्वाचे स्थान आहे. एक तर ब्रिटीश आमदानीतील सर्वात महत्वाचा टापू त्यावेळी कलकत्ता येथेच होता. व्हाईसरॉयचा मुक्कामही बंगभूमीतच असायचा. त्यामुळे तिथे जे काही घडे त्याचे पडसाद देशभरात उमटत असत. अनेक ख्रिस्ती मिशनरी या भागात येऊन राहिले होते. त्यांची धार्मिक कार्येही सुरु झाली होती. भारताच्या पश्चिम किनाऱ्यावर गोवा येथे आणि इकडे पूर्व किनाऱ्यावर बंगालमध्ये ब्रिटीश आमदानीच्या आश्रयाने मिशनऱ्यांचे कार्य चालू होते. सनातनी जीवनपध्दती कठोरपणे स्वीकारणारा आणि त्यानुसार रुढी-परंपरा अवलंबणारा भारतीय हिंदू समाज आणि नव्या जाणिवा, नवी दृष्टी घेऊन आलेले इंग्रजी राज्यकर्ते यांचा संघर्ष अपरिहार्य आणि अटळ होता. जुन्या रुढी-परंपरा यांनी कुंठीत केलेल्या समाजात बदल करण्याची आकांक्षा येथील काही देशी सुधारक व्यक्त करीत होते पण त्यांना मोठा विरोध होता. यावेळी त्यांना सहकार्य करण्यासाठी इंग्रजी राज्यकर्त्यांनी अनुकूल भूमिका घेतली आणि याच दरम्यान वृत्तपत्रांच्या जगाचेही महाव्दार खुले झाले.

वृत्तपत्रांच्या भारतीय भूमीतील इतिहासात 'हिकीज गॅझेट' ह्या वृत्तपत्राचा उल्लेख आरंभी केला जातो. ह्या इंग्रजी साप्ताहिकाचा पहिला अंक २९ जाने.१७८० साली प्रसिध्द झाला. हिकीच्या या अंकातून काही शिवराळ टीका आणि बदनामीकारक मजकुरामुळे त्याला तुरुंगवास घडला. त्यानंतर हे साप्ताहीक बंद पडले. तुरुंगवासाची शिक्षा मिळाल्यानंतर हिकीने समाजात मुद्रण स्वातंत्र्य असले पाहिजे अशीही टिप्पणी केली. ती लक्षणीय आहे असे रा. के. लेले यांनी मत नोंदविलेले आहे. याच दरम्यान बंगालमध्ये अनेक इंग्रजी वृत्तपत्रे सुरु झाली. भारतीय भूमीत सुरु झालेले 'हिकीज गॅझेट' हे पहिले वृत्तपत्र मात्र भारतीय वृत्तपत्रांनी केलेली कामगिरी, प्रबोधन आणि स्वातंत्र्याच्या चळवळीतील त्यांचे योगदान विचारात घेता भारतीय जाणिवेचे वृत्तपत्र सुरु करण्याचा मान राजा राममोहन रॉय यांच्याकडे जातो. 'पीटीआय स्टोरीचे' लेखक राघवन यांनी राजा राममोहन रॉय यांचा उल्लेख Father of India Press (भारतीय वृत्तपत्राचे जनक) या शब्दांत केला आहे. तर मराठी वृत्तपत्राचा पाया 'दर्पण' कार बाळशास्त्री जांभेकर यांनी घातला. ४ डिसेंबर १८२१ रोजी 'संवाद कौमुदी' हे बंगाली आणि 'मिरात-अल-अखबार' हे पार्शियन भाषेत अशी वृत्तपत्रे त्यांनी सुरु केली. भारतीय भाषांमधून प्रसिध्द होणारी वृत्तपत्रे आणि धर्माच्या आधारे सुरु असलेल्या दुष्ट रुढींना, पुराणपंथांना विरोध करणारे प्रबोधनपर असे विचार असा व्यापक दृष्टीकोन राजा राममोहन रॉय यांच्या एकूण भूमिकेत होता. सामाजिक प्रबोधनाचा विचार मांडणाऱ्या राजा राममोहन रॉय यांना बंगालच्या सनातनी वळणाच्या भूमीत हे फार मोठे काम करता आले. इंग्रजी शिक्षणाचाही त्यांनी पुरस्कार केला. कायद्यासमोर सगळे समान आणि न्यायदान व्यवस्थेचे स्वातंत्र्य या दोन गोष्टींचा त्यांनी पहिल्यांदा उच्चार केला. त्यांची हीच भूमिका पुढे स्वातंत्र्याच्या चळवळीत अनेक नेत्यांनी उचलून धरली व पुढे नेली. नव्या जाणिवा, नव्या ज्ञानाची आस आणि लोक जागृतीचे साधन अशी भूमिका त्यांनी घेतली होती. १८३२ ते १९४७ हा स्वातंत्र्यपूर्व कालखंड राजकीय चळवळ आणि सामाजिक भूमिका यांचा संघर्ष असलेला कालखंड होता.

१८८२ साली 'मुंबईना समाचार' हे गुजराती भाषेतील साप्ताहिक मुंबईतून सुरु झाले. देवनागरी लिपीतले पहिले हिंदी वृत्तपत्र 'उदन्त मार्तंड' हे कलकत्याहून ३० मे १८२६ रोजी सुरु झाले. केरळ, तामिळनाडू, कर्नाटक या दक्षिण भारताच्या विविध भागात ख्रिश्चन मिशनऱ्यांच्या पुढाकारामुळे काही पत्रे निघाली पण ती मुख्यत: धार्मिक शिकवणूक देणारी होती. १८३१ साली ख्रिश्चन रिलीजस ट्रॅक्ट सोसायटीने 'तामिळ मॅगेझिन' मद्रासमधून सुरु केले. १८१२ साली ख्रिश्चन मिशनऱ्यांनी बेल्लारी येथे 'कन्नड समाचार' हे कन्नड भाषेतील पत्र सुरु केले. १८५० साली पंजाबात लाहोर येथे 'कोहिनूर' हे उर्दु भाषेतील साप्ताहिक सुरु झाले. देशातील महत्वाच्या भाषांमधील वृत्तपत्रांचे जग या दरम्यान म्हणजे १८२० ते १८५०च्या दरम्यान सुरु झाले. व्यापक अर्थाने लोकशिक्षण आणि प्रबोधन हेच मुख्य हेतू समोर ठेवून ही वाटचाल सुरु झाली. लोकशिक्षणापासून सुरु झालेली ही वाटचाल लोकांच्या हक्कांपर्यंत येऊन पोहोचली. १८३२ साली बाळशास्त्री जांभेकरांनी 'दर्पण' या मराठी पत्राची सुरुवात केली. मराठीखेरीज बंगाली आणि इंग्रजी भाषा अवगत असणारे जांभेकर कोकणातून मुंबईत आले आणि वयाच्या अवघ्या विसाव्या वर्षी मराठी-इंग्रजी या दोन्ही भाषांमधून हे पत्र सुरु केले. आरंभी पाक्षिक असणारे दर्पणकारांनी आपल्या पहिल्या अंकात म्हटले होते, 'स्वदेशी लोकांमध्ये विलायतेतील विद्यांचा अभ्यास अधिक व्हावा आणि या देशाची समृध्दी व येथील लोकांचे कल्याण याविषयी स्वतंत्रतेने व उघडरितीने विचार करावयास हवा. या इच्छेने मुंबईत राणाऱ्या कित्येक

Dongar Kathora

SMB-19-20

VOLUME - IX, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

२७. समाजनिरीक्षक संत कवी - तुकडोजी महाराज

प्रा. डॉ. शकुंतला मिठाराम भारंबे
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन, डोंगर कठोरे. ता. यावल, जि. जळगांव.

महाराष्ट्राला संतांची एक दीर्घ परंपरा लाभली आहे. संतांनी अध्यात्माचा मार्ग सांगत समाजसुधारणेचा – समाजप्रबोधनाचा मार्ग सांगितला. संत ज्ञानेश्वर, तुकाराम, नामदेव, मुक्ताबाई, जनाबाई, सावतामाळी, चोखामेळा, तुकडोजी महाराज या सर्वांनी आपापल्या परीने समाजसुधारणेचे मार्ग दाखविले. समाजाला उदबोधित करण्याचा प्रयत्न केला. समाजाला परिवर्तनसन्मुख करण्याचा प्रयत्न केला. संत विशिष्ट काळात जन्माला येत असेल तरी त्यांचे विचार कालजयी असतात. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजही याला अपवाद नाहीत. राष्ट्राच्या व राष्ट्रातील जनमानसाच्या सुधारणेच्या अतीव तळमळीतून हे विचार प्रकट झाले आहेत.

विसाव्या शतकातील संत तुकडोजी महाराज यांचे साहित्य हे भारतीयांचे अमोल असे संस्कार-धन आहे. तसेच ते प्रेरणास्त्रोतही आहे. त्यांनी जीवनाच्या सर्वच अंगाचा विचार करून समाजप्रबोधनाची पताका उंच उंच फडकवित नेलेली आहे. राष्ट्रसंत तुकडोजींनी भजन, कीर्तन, प्रबोधन शिबीरे आणि ग्रामगीतेद्वारा जनप्रबोधनाचे कार्य हाती घेऊन जनसमुहाला वळण लावण्याचे महत्वपूर्ण कार्य केले. ग्रामगीता ही विचारांना दिशा देणारी रसाळ अशी काव्यधारा आहे 'ग्रामगीता' विशुद्ध मानवतेचे स्वप्न पाहाते. माणसातील माणुसकी जागरणाचे काव्य आहे. मनुष्याला वळण लावणारी व चिरंतन मूल्यांच्या पूजनाला प्राधान्य देणारी महान रचना आहे. आपल्या अंतर्यानात विवेकवादी मूल्यांची पेरणी करणारी आहे.

संत तुकडोजींच्या अभंगगाठोतून भक्तीमार्गात आड येणाऱ्या षडरिपूंच्या उच्चाटनाचा उल्लेख केलेला आहे यातून होणारी मुक्ती केवळ व्यक्तिगत उन्नतीला कारक ठरत नाही तर यातूनच एका सात्विक समाजपुरूषाची घडण होते हे अन्य संतांप्रमाणे तुकडोजी जाण होते, पण हे त्यांनी सांगितले ते सर्व समाजालाही लागू होणारे आहे. जीवनात अपत्मोन्नती हा व्यक्तिगत भाग वाटत असला तरी सामाजिक सामंजस्यपूर्ण जीवनासाठीही या विकारांवर मात करण्याची गरज आहेच. तुकडोजींनी एका अभंगात म्हटले आहे.

तनु मने धने सदा करी सेवा ।
अंतरीच्या देवा दृढवोनी तुकड्यास म्हणे असोनी संसारी ।
जीवभाव दूर करूनी राहे ॥

तुकडोजींची ही भूमिका संतपरंपरेशी जुळणारी तर आहेच पण त्याचवेळी ती समाजसन्मुखही आहे. आपल्या अभंगातून त्यांनी सदभक्तीची लक्षणे सांगितली, भक्तीची आचारताचे मांडली. त्यांनी परोपकार हेच पुण्य, जनसेवा हीच खरी ईश्वर सेवा, जीवदया आदी समाजधारणार्थ आवश्यक अशा गोष्टींना प्राधान्य दिले तुकडोजींची अभंगगाथा अप्रत्यक्षपणे भारतीय

Dongar Kathore

SMB-19-20

 ISSN - 2229-4929

दलित साहित्यातील विषमतेचे चित्रण

प्रा. डॉ. शकुंतला एम. भारंबे
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन महिला महाविद्यालय,
डोंगर कठोरे, ता. यावल, जि. जळगांव

भारतीय स्वातंत्र्यानंतर प्रजासत्ताक लोकशाही राज्याची स्थापना झाली. सर्वांनाच मोफत व सक्तीचे शैक्षणिक धोरण ठरविण्यात येवून शिक्षणाचा प्रचार व प्रसार करण्यात आला. बहुजन व दलित समाजातील तरुणांनाही शिक्षणाची संधी मिळाल्याने नव्या जाणिवा घेऊन समाजाच्या सर्व क्षेत्रात ती आत्मविश्वासाने मुक्तपणे वावरु लागले. भारतीय राज्यघटनेने स्वातंत्र्य, बंधुता व न्यायाचे अर्थही त्यांना कळू लागल्याने त्यांच्या साहित्यातून हजारो वर्षांची धूसमट ऐकायला येऊ लागली. आजपर्यंत मध्यमवर्गापुरते जे साहित्य मर्यादित होते ते आता तळागाळातील पिडीत, बहुजन समाजापर्यंत पोहचू लागले. त्यामुळे त्या त्या प्रदेशातील खेडे व खेड्यातील जाती-जमातीतील प्रश्न साहित्यातून मांडले जावू लागले. आजपर्यंत कर्मठ परंपरेच्या नादाखाली जी बहुजन जनता जीवन जगत होती ती विषमताधिष्ठित समाजरचना साहित्याच्याद्वारा व्यक्त होवू लागली. डॉ. सुमनोहर असे म्हणतात की, ''सामाजिक प्रश्नांचं हे साहित्य आहे. हे साहित्य वास्तववादी आहे. माणसांवरील अन्यायाविरुध्द त्याचबरोबर प्रदेशाचं दैन्य दारिद्र्य हे वास्तव या साहित्यप्रवाहांतून व्यक्त झाले आहे.'' या साहित्याला सामाजिक बदलाची पार्श्वभूमी लाभलेली आहे. बहुसंख्य जाती-जमातीच्या वाट्याला लाजिरवाणे, किळसवाणे जीवन का आले ? या प्रश्नांची उत्तरे आपल्याला येथील समाजरचनेत सापडतात. असा हा समाज सर्वच थरावर नागवला गेला. अज्ञानाच्या गर्तेत गटांगळ्या खाणारा, लाचार-दुबळा समाज शेकडो वर्षापासून पिळून निघत होता. माणसा-माणसात, जाती-जातीत, धर्मा-धर्मात दुरावा निर्माण झाला.

या दलित, बहुजन समाजाकडे उपेक्षित समाज म्हणून न बघता एक माणूस म्हणून पाहिले पाहिजे अशी अपेक्षा उत्तम बंडू तुपे यांची होती. त्यामुळेच त्यांनी आपल्या कथांमधून दलितांची भीषण वास्तवता रेखाटलेली आहे. त्यांचे साहित्य सामाजिक जाणिवेने ओथंबलेले आहे. या समाजाला येथील प्रस्थापित व्यवस्थेने आपल्या सोयीनुसार हजारो वर्ष धर्मव्यवस्थेच्या व जातीव्यवस्थेच्या नावाखाली बेमालूमपणे अज्ञानात व गुलामीत जखडून ठेवलेले आहे. 'जयवंत' ही कथा पाथरवट या भटक्या जमातीच्या जीवनावर आधारित आहे. भारताला स्वातंत्र्य मिळून आज सुमारे ५० वर्षे होवून गेली तरीही या जमातीच्या साथी 'चोर जमात' हा शिक्का घेवून गावोगाव भटकंती करणारी ही जमात वाताहतीचे, अधांतरीचे जीवन जगत गावोगावी लागणारे जाते--वरवंटे, पाटे, देवाच्या मूर्ती, उखळ, खलबत्ते वगैरे दगडी वस्तू विकत असून आपला उदरनिर्वाह करत असते यासाठी सतत भटकंती करावी लागत असते. एखाद्या गावात त्यांना थांबायचे असेल तर गाव कारभाऱ्याची अथवा पाटलांची मर्जी सांभाळण्यांसाठी प्रसंगी कोंबडीचाही बंदोबस्त करावा लागतो. हे सगळे करुनही गावात कुठेही चोरी झाली तर याच जमातीला जबाबदार धरले जाते. पोट पाठीवर घेऊन आणि संसार गाढवावर लादून सतत भटकंती करणारा गोविंद आपले दुःख जयवंत जवळ बोलून दाखवितो, ''दिवस उगवायला तराळ येईल तवा परपंचा बांधून ठिवला पायजी. आक्षी सुगीच्या तोंडवर उठणकळा आलीय ... हे दिवस कधी सरयचं ? कितीबी दमानदारीनं वागलं तरी सरकारच्या नदरंत आमी गुन्हेगार ! काग घडलं की पयली हाजरी आमाला ... करा ईक्षास दियाचं ?''

गावकऱ्यांच्या मर्जीवर अवलंबून असणारी ही जमात गावात कुठेही चोरी झाली की पहिला आळ यांच्यावरच येतो. त्यामुळे पोलीसांचाही अत्यंत छळ सहन करावा लागतो. सन्मानाने त्यांना जगताच येत नाही. भटक्या जमातीचे एक अनोखे भावविश्व या कथेत लेखकाने चित्रित केले आहे.

'भस्म' ही कथा स्मशानात राहणाऱ्या मेलेल्या माणसांच्या हाडांची राख अंगाला फासून दारोदार भीक मागणाऱ्या शंकर मसणजोग्याची आणि त्याच्या कुटुंबाची कहाणी. समाजव्यवस्थेने निर्माण केलेली जातीपातीनुरूप व्यवसायाची आणि पोट भरण्यातील गुंतागुंत स्पष्ट करणारी ही कथा. मसणजोगी ही भटकी जमात. या जमातीने गावात राहू नये हा जणू दंडकच असल्याने ही जमात स्मशानातच राहत असते. ही मसणजोगी जादू-टोणा करतात असा लोकांचा समज असतो.

Dongar Kathora

RKK-19-20
'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Vol. 6, Issue 4 (B)
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Oct.-Nov.-Dec. 2019

हिमांशु जोशी के कहानियों में विविध आयाम

प्रा. डॉ. रविंद्र खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एवं कम्प्युटर ॲप्लीकेशन
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरा,
ता. यावल, जि. जलगाँव (महाराष्ट्र)
Email-ravindrakhare78@gmail.com
Mo-9422462800

प्रस्तावना :-

हिमांशु जोशी हिंदी कथा-साहित्य में व्यक्ति एवं समाज को केंद्र में यथार्थवादी दृष्टिकोण व्यक्त करनेवाले कहानीकार के रूप चर्चित रहे है। समकालीन कहानीकारों की अधिकांश प्रतिनिधि रचनाओं में जो नयापन हैं, उसमें सामान्य मानवीय जीवन के बदलते संदर्भो को रेखांकित किया गया है। आज के कथाकारों ने शहरी जीवन के साथ-साथ ग्रामीण जीवन के विविध आयामों को अपनी कहानियों में स्थान दिया है और भाषा के इतने रूप निखरे है कि मात्र कहानी की दृष्टि में साहित्यिक उपलब्धियों को रेखांकित किया जा सकता है। उन्होंने कहानी का लेखन सन् १९५६ में आरंभ किया था। कथ्य के संदर्भ में लिखते हैं कि, ``अनावश्यक विस्तार लेखन को कोई गति नहीं देता। परिवेश का उतना ही चित्रण उचित है, जितना अत्यावश्यक हो। मूर्तिकार जिस तरह उतना ही हिस्सा रखता है, जितना मूर्ति के लिए आवश्यक समझता है, शेष तराशकर फेंक देता हैं, वही स्थिति किसी लेखक की भी होनी चाहिए।''[१] स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि कहानीकार ने अपनी पत्रकारिता के जीवन में दिल्ली जैसे महानगरीयों के समाज का कोना-कोना छानकर समाज में फैली विषमता का दृश्य अपनी कहानियों में चित्रित किया है। समांतर कहानी के दौर में बहुत सी कहानियाँ आम आदमी को केंद्र में रखकर लिखी गई। समान्तर कहानी सीधे-सीधे आम आदमी के जीवन से अपने को जोड़ती है। हालाँकि हिमांशु जोशी का नाम भी समान्तर कहानीकारों में बराबर लिया गया। परंतु उस आंदोलन में आम आदमी के संघर्ष को अभिव्यक्ति मिली है। उनकी कहानियाँ आज भी मील का पत्थर साबित होती है। प्रस्तुत विषय के अंतर्गत कहानियों के कथ्य को निम्न मुद्दों में विभाजित किया जा सकता है - सामाजिकता, राजनीतिकता, आर्थिकता, धार्मिकता,आदि विविधआयामों से उनकी कहानियों का विश्लेषण किया जा सकता है।

१) सामाजिकता:-

सामाजिक कहानियाँ मानवीय जीवन के विभिन्न अंगों से जुड़ी होती है। विविध प्रकार से कहानीकार जीवन की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का रेखांकन करता है। सामाजिक कहानी का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक यथार्थ की दृष्टि से मानवीय जीवन का चित्रण करना है। हिमांशु जोशी के सामाजिक परिवेश संबंधी कहानियों में विभिन्न समस्याओं को अभिव्यक्ति मिली है जिसका चित्रण उन्होंने निम्नलिखित रूप में किया है।

`अंततः तथा अन्य कहानियाँ' संग्रह की `एक पारमिता' उषा प्रियंवदा की कहानी `रीढ़ की हड्डी' की याद दिलाती है। विवेच्य कहानी द्वारा हिमांशु जोशी ने महानगरों में मध्यमवर्गीय परिवार में पढ़ी-लिखी लड़कियों का विवाह करना भी कितना मुश्किल हो रहा हैं, इसका बखूबी चित्रण किया है। विवाह-बंधन जैसे पवित्र प्रथाओं में भी आ गयी है। एक समय था जब माता-पिता की इच्छानुसार विवाह तय किये जाते थे। अब समय बदल गया है, जिसमें विवाह के लिए लड़की पसंद करना मज़ाक बन गया है। लड़की के अतीत एवं वर्तमान जीवन संबंधी इतने सवाल पूछे जाते है कि, लड़की मानो बाज़ार की कोई सजावटी वस्तु हो, जिसकी नुमाइश में उसे सभी प्रश्नों का उत्तर देना होता था। विवेच्य कहानी की पारो विवाह के पहले इसे देखने आए लड़कों को उत्तर देते-देते परेशान है, उसके साथ-साथ पूरे परिवार को

Dongar Kathora

RRK 19-20

ISSN : 2348-7143 Jan. 2020 RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.625 | Special Issue 214 (C) : हिंदी साहित्य में चित्रित हाशिए का समाज

हिंदी भीम काव्य में व्यक्त दलित विमर्श

प्रा. डॉ. रविंद्र आर. खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष, कला, वाणिज्य एवं कम्प्युटर अॅप्लीकेशन,
डोंगर-कठोरा, ता. यावल जि. जळगाव (महाराष्ट्र)

आधुनिक काल में सामाजिक धार्मिक और आर्थिक सुधार आंदोलनों की तरह मानवतावादी विचार धारा भी साहित्य के क्षेत्र में एक आंदोलन बन कर भी उभरने लगी है। इस प्रस्तावित विचारधारा के अनुसार मनुष्य को इस जगत् का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राणी माना गया है। मनुष्य को सभी प्रकार के बंधनों से मुक्ति की कामना भी होने लगी। जिस प्रकार साहित्य को समाज का आईना कहा जाता है, परंतु स्वतंत्रतापूर्व के साहित्य में समग्र समाज के चित्रण का अभाव दिखाई देता है। सामान्य मनुष्य साहित्य के केंद्र में न के बराबर था। दलित, शोषित व पीड़ितों का जीवन साहित्य में कोसों दूर था। मानव की गुम हुई मानवता कभी साहित्य का विषय नहीं बन पाई थी । फिर ऐसे साहित्य को समाज का आइना कैसे कहा जा सकता है ? इतिहास इस बात का साक्षी है कि दलितों को सामाजिक, राजनीतिक अधिकार एक दीर्घ संघर्ष के बाद प्राप्त हुआ।

''लगभग पांच हजार साल से तथाकथित शुद्र और अस्पृश्य जातियां हिंदू समाज में व्याप्त जाति-व्यवस्था और अस्पृश्यता की घृणित कुप्रथा का शिकार थी। वे सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक से वंचित थी। अब उनके विकास के अवरुद्ध पथ खुल चुके हैं। उन्हें सामाजिक और राजनीतिक अधिकार मिल गए थे । शिक्षा, आर्थिक और रोजगार से क्षेत्र में प्राथमिकता और संरक्षण भी प्राप्त हो गया था। सामाजिक न्याय और समता का संवैधानिक एवं शांति प्रिय मार्ग प्रशस्त हो गया था।''[१]

इस प्रकार दलित-शोषित एवं पीड़ित समाज अपना विभिन्न विद्रोह माध्यमों से व्यक्त करने लगा। विवेचित हिंदी भीम काव्यों में कवियों ने सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक चिंतन पर प्रकाश डाला गया है।

१. सामाजिकता :

भारतीय समाज व्यवस्था ने मनुष्य के विभिन्न जाति, धर्म, पंथ तथा उपजाति में विभाजित कर मनुष्य को मनुष्य से दूर किया। स्पष्ट रूप से कहा जाए तो भारतीय व्यवस्था ने ही मनुष्य को गुलाम बनाया है। पीड़ितों, शोषितों को गुलामी से मुक्त होना हो तो इस व्यवस्था को ठूकराना पड़ेगा, तब कहीं वह गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ पाएगा। डॉ. आंबेडकर का मानना है कि, शोषित और पीड़ितों की गुलामी से मुक्ति, उच्च शिक्षा, सरकारी नौकरियाँ और अच्छी आजीविका के साधनों से ही हो सकती है। डॉ. आंबेडकर ने पूरे विश्व में अपने विचारों द्वारा समस्त मानव जाति को इस दासता से मुक्त किया। अन्याय के प्रति लड़ने की शक्ति दी। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचार हिंदी में भीम कवियों ने आत्मसात करके अपनी कलाकृतियों के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।

भारतीय समाज व्यवस्था में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने दलित एवं अछूत समाज को समता का मार्ग दिखाया। आछूतों को मनुष्य के रूप में जीने का अवसर प्रदान किया। इन विचारों को व्यक्त करते हुए-

ऊँचा कौन कौन नीचा
प्रकृति ने सबको सींचा
अन्यायी अत्याचारी का सब तिरस्कार करो
जातिधर्म भाषायी भेदों का बहिष्कार करो
मानव होकर हर मन का साकार करो।[२]

भारतीय समाज व्यवस्था में शोषितों को अपनी उन्नति करनी हो तो वे अपने आप में स्वाभिमान की भावना निर्माण करें। हमें तो अछूतों का उद्धार करना है तो सामाजिक ढाँचे में उनको पूरी स्वतंत्रता और समानता देनी होगी। वे अपनी प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। परिवर्तनवादी विचारधारा के डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर वर्णविहीन एवं जातिविहीन समाज का निर्माण करना उनका लक्ष्य रहा है। इन विचारों पर अपना मत कविता में व्यक्त करते हुए लक्ष्मीनारायण सुधाकर लिखते हैं-

वर्ग विहीन समाज का निर्माण करने के लिए
संघर्ष वह करता रहा इस देश में आंबेडकर
जाति-विहीन समाज का निर्माण करने के लिए
संघर्ष करता रहा इस देश में आंबेडकर।[३]

भारतीय समाज व्यवस्था में जाति भेद और अस्पृश्यता के एक भारतीय सामाजिक धब्बा है । जो किसी भी देश में देश के सर्वांगीण विकास में बाधाएं उत्पन्न करते हैं। सदियों से चली आ रही वर्ण व्यवस्था ने मानव की प्रगति में रुकावट पैदा की है। इस मानव निर्मित वर्णव्यवस्था को तोड़ने में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का योगदान सर्वश्रेष्ठ रहा है। जिससे सवर्ण वर्ग ने बहुजन समाज को सदियों से मानसिक गुलामी में जकड़ के रखा था। इस पक्ष में कवि रामदास निमेश अपनी कविता में व्यक्त करते हुए-

समाज व्यवस्था का विश्लेषण । मानव से मानव का शोषण
मानव कृत है वर्ण व्यवस्था। नहीं ईश्वर कृत वर्ण व्यवस्था
शिक्षित वर्ग को श्रेष्ठ मानकर। दिया अशिक्षित नीच बनाकर
तीन वर्ग में बाँटा उनको। क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र कर उनको।[४]

२. धार्मिकता :

डॉ बाबासाहेब आंबेडकर एक धर्म चिकित्सक एवं धर्म पंडित रहे हैं। डॉ. आंबेडकर द्वारा बौध्द धम्म पुनर्जीवित हो गया है, उनका धर्म का प्रचार-प्रसार का कार्य उल्लेखनीय है। हिंदू धर्म व्यवस्था ने आछूतों के मानवीय अधिकार छीनकर उनको नारकिय जीवन जीने के लिए मजबूर किया था। जिस 'मनुस्मृति' के कारण मनुश्य को पशुवत्

RRK- 19-20

ISSN : 2348-7143
February 2020

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.625 | Special Issue 232 : २१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य

'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास में अभिव्यक्त नारी संघर्ष

प्रा. डॉ. रविंद्र आर. खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एवं कम्प्यूटर अॅप्लीकेशन महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरा, ता. यावल जि. जलगाँव.

२१वीं सदी के हिंदी उपन्यास साहित्य में सन २०११ में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित लेखिका मैत्रेयी पुष्पा का 'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास हिंदी कथा साहित्य जगत में अपनी अमिट छाप डालता है। ग्रामांचल के जन-जीवन को केंद्र में रखकर मैत्रेयी पुष्पा ने बुंदेलखंड की देहाती नारी को महिला सबलीकरण के दौर में निर्णायक रूप में लाकर खड़ा किया। इस विषय से हटकर मैत्रेयी पुष्पा शिक्षित एवं घर की देहरी को लाँघती नारी की वेदना तथा यातनाओं को वाणी दी है। 'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास पुलिस व्यवस्था की नारी सुरक्षा के प्रति खोखली मानसिकता, शाब्दिक, बलात्कार और अत्याचार का पर्दाफाश किया है। भारतीय समाज में समाज को नियंत्रित रखने के लिए या उस पर अंकुश लगाने के लिए एक शक्ति की आवश्यकता है। और वह है पुलिस। कोई भी भारतीय जब कानून कहता है, तब भी और जब सरकार कहता है तब भी, उसकी आँखों के सामने कुछ खाकी वर्दी की जरब दिखता है। इसके बावजूद थाने की दीवारों के पीछे क्या होता है, यह आम आदमी नहीं जानता। किंतु प्रस्तुत उपन्यास हमें इसी दीवार के उस तरफ ले जाता है, और उस रहस्यमय दुनिया के कुछ दहशतनाक दृश्य दिखाता है। वह भी एक स्त्री पुलिसकर्मी की दृष्टि से।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में परिवर्तित समय की बदलती हुई नारी का आख्यान है। जो नारी घर के चार दीवारों से निकलकर अपने सपने देखती है। पुरुष संस्कृति के कटघरे में उसके व्यक्तित्व को विकास से सीमित करते हैं। नारी देह की नोच-खसोट बचपन में घर के अंदर से शुरू होकर कामकाजी जीवन एवं अच्छे करियर के मार्ग विस्तृत है। यही अनुभव उपन्यास की मुख्य पात्र इला चौधरी को जन्म-जन्मांत तक मिलते रहे हैं। इला जो अपने नारी अस्मिता एवं अस्तित्व को अर्थ देने और समाज के लिए कुछ कर गुजरने का जुनून लेकर खाकी वर्दी पहनती है। जब वह इस व्यवस्था को अपनाती है, तब वहाँ देखती है कि धोखेबाजी, चालाक, कुटिल लेकिन डरपोक पुरुषों की दुनिया से निकल कर कुछ ऐसे पुरुषों की दुनिया में आ गई है जो और भी ज्यादा क्रूर, हिंसालोलुप, और स्त्रीभक्षक है। ऐसे मर्द जिनके पास खाकी वर्दी की शक्ति भी है, अपनी अपढ़ मर्दाना कुंठाओं का परिणाम देने की निरंकुश, निर्लज्जता भी और लोकतंत्र की अनुकूलता से भयभीत समाज की आँखों से दूर थाने की अँधेरी कोठरियों में मिलनेवाले रोज-रोज के मौके भी । यह उपन्यास हमें बताता है कि मानवता के विरोध में सबसे वीभत्स दृश्य कहीं दूर युद्धों के मोर्चों और परमाणु हमलों में नहीं यहीं हमारे घरों से कुछ ही दूर हमारे रक्षक ही भक्षक बन कर थानों में अंजाम दे रहे हैं। उन दृश्यों की साक्षी है, २१वीं सदी में पैदा हुई वह भारतीय नारी जिसमें अपने समाज के दयनीय पिछड़ेपन के बावजूद मानवता के उज्वल सपने देखने की दृष्टि रखी है ।

'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास का नारी जीवन का संघर्ष विभिन्न आयामों में प्रस्तुत हुआ है, जिसे निम्न रूप में उद्घाटित किया जा सकता है ।

नारी जीवन का सामाजिक संघर्ष

मैत्रेय पुष्पा मूल रूप से हमारी सामाजिक संरचना पर ही सवाल उठाती है। बेटी पैदा होते ही बोझ के रूप में देखने वाला समाज अपने सिर पर से बोझ हल्का करना चाहता है । विवेच्य उपन्यास की इला चौधरी शिक्षित लड़की है, जिसने नारी अस्मिता को पुरुष समाज के सामने कभी झुकने नहीं दिया। वह अपनी पहचान बनाना चाहती है। अपने साथ-साथ तमाम नारी जाति की अस्मिता के लिए लड़ना चाहती है। उसने कुछ सपने सजोंए थे। जिन्हें पूरा करने में पुरुष अहं आड़े आ रहा था। जिसे इला, समीना ने तार-तार कर दिया । अपनी पहचान बनाने के लिए इला रातों-रात भाग जाती है। ''हरियाणा की औरतों का ज्ञान कोष पराधीनता का लोकतंत्र ऐसे ही माहौल में पैदा होकर बड़ी हुई है। औरत का जिंदगी का भेद पता ही चल गया। हाँ, नहीं तो अपनी दादी के साथ अपने भी मंडप की बात सुनकर घर से भाग जाती ? भागने के मूल में क्या था ? माँ जानती है, वह थी लड़की की लालसा । लालसा अच्छा पाने की नहीं, रेशमी कपड़ों की नहीं, गहने जेवर की नहीं, मौज मस्ती की नहीं, साधन सुविधा कि नहीं, प्रियतम पति की नहीं, संरक्षण और सुविधा कि नहीं, बस यह थी अपने बूते सम्मानपूर्वक जीने की लालसा। बस इतना कि अपने जीवन के प्रति खुद ही जिम्मेदार होकर जिंदगी का सफर तय करें।''[१]

स्पष्ट है कि नौकरी करने वाली नारी को सहकर्मियों की अवमानना सहनी पड़ती है । इला चौधरी को कॉन्स्टेबल की नौकरी करती है। कई बार सहकर्मी वरिष्ठों से भी लड़ना पड़ता है। वह जानती है कि पुरुष हर बार कोई न कोई साजिश कर नारी को जाल में फाँसने का षड़यंत्र करता है। जब इला कोई साहसी काम करती तो परिणाम बुरा होता। पर इला ने कभी साहस नहीं खोया, हालांकि उसका तबादला मेवात जैसे और मुजफ्फरनगर में किया गया। जहाँ जाने से लोग डरते हैं पर इला इस तबादले को कुछ कर दिखाने का अवसर मानती है।

विवेच्य उपन्यास के पात्र इला, चौधरी, प्रिया अग्रवाल और समिना की लड़ाई जितनी व्यक्तिगत उत्थान के लिए है उतनी ही सामाजिक उत्थान के लिए भी। उपन्यास के प्रारंभ में तो यह लड़कियाँ व्यक्तिगत करियर बनाने के लिए घर छोड़कर भाग आई है। पुलिस कॉन्स्टेबल होने के बावजूद यह तमाम महिलाओं पर होनेवाले अत्याचारों से दहल उठती है । सुरक्षा की माँग लेकर आयी नारियों की हालत कितनी भयावह थी, यह उन्होंने अपनी आँखों से देखा था।

Dongar Kathora

RRK-19-20

VOLUME - IX, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

५. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नवयुवकों के लिए प्रेरणास्त्रोत

प्रा. डॉ. रवीन्द्र आर. खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष, कला, वाणिज्य एवं कम्प्युटर ॲप्लीकेशन महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, ता. यावल, जि. जलगाँव.

प्रस्तावना

समाज की दिन-ब-दिन बिगड़ती दुर्दशा देख परिस्थितिनुरूप राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का काव्य ईश्वर आराधना से ऊपर उठकर परिवर्तित होता गया। जिससे अपनेपन की संकुचित भावना हटाकर समाज, राष्ट्र तथा विश्वकल्याण की भावना उनके काव्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। मानवतावादी दृष्टि होने के कारण किसी भी धर्म को, व्यक्ति को, समुदाय-समाज को होनेवाली पीड़ा से तुकडोजी पीड़ित होते हैं। तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों का गहन अध्ययन कर उन्होंने निम्नलिखित तत्त्वों को अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है। इस कारण आरंभ में शिक्षा प्रणाली, युवकों में आत्मनिर्भरता, बेरोजगारी की समस्या, युवकों के मन में राष्ट्रीय भावना आदि प्रगतिशील चिन्तन के आधुनातन आयामों को संक्षेप में स्पष्ट करना प्रस्तुत आलेख का मुख्य उद्देश्य है।

1) शिक्षा प्रणाली

भारत में शिक्षा प्रणाली को लेकर अनेक सुधार हुए फिर भी बेकारी, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार जैसे अनेक कुप्रवृत्तियाँ क्यों पनपती है ? यह सवाल सदैव उभरकर आता है। शिक्षा तो मिल रही है, परंतु उसमें नैतिक बल नहीं रहा, राष्ट्रभक्ति नहीं रही, लोककल्याण की भावना नहीं रही है, जो राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाएँ। इसी कारण सभी संतों ने शिक्षा प्रणाली को सुधारने की अपेक्षा रखी है। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज भी इसकी आवश्यकता का प्रतिपादन करते हुए वर्तमान स्थिति की शिक्षा प्रणाली के संबंध में लिखते हैं -

``शिक्षण है भक्षण का सभी, रक्षण नही एक पल भी।
संस्कार जो नष्ट होंगें, है यही शिक्षण अभी।।
कारण है इसका धर्म से राजाहि तो निरपेक्ष है।
नेता पीछे गट-पक्ष है, सब वोट का ही लक्ष्य है।।''[1]

स्पष्ट है कि वर्तमान समय की शिक्षा प्रणाली केवल भक्षण करना सिखा रही हैं, जिसमें कोई संस्कार ही नहीं हैं, बल्कि मानवीय संस्कार नष्ट हो रहे है। जिसकी रक्षा करना मनुष्य भूल रहा है। नेताओं ने केवल वोटो की राजनीति शुरू की है। अपने स्वार्थ हेतु शिक्षा प्रणाली को 'जैसे थे' अवस्था में रखकर स्वार्थनीति की राजनीति खेली जा रही है। अत: नीतिविहीन शिक्षा के चरित्र का पालन हो रहा हैं -

Women's College Of Arts, Commerce & Computer Application, Dongar Kathora

Power of Knowledge Peer Review Journal,Volume:I, Issue:III Oct. to Dec. 2020 ISSN 2320-4494 Impact factor 2.7286

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में अभिव्यक्त आंबेडकरवादी चिंतन

प्रा.डॉ.रविंद्र आर. खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एवं कॉम्प्युटर अप्लीकेशन,
महिला महाविद्यालय, डोंगरकठोर, ता.यावल जि.जळगांव (महाराष्ट्र)

हिंदी दलित कवियों और कथाकारों में ओमप्रकाश वाल्मीकि का स्थान प्रतिभा संपन्न साहित्यकार के रूप में हैं। वर्तमान हिंदी साहित्य में दलित साहित्य के रूप में विशेष पहचान रखनेवाले ओमप्रकाश वाल्मीकि ने उत्तरशती के हिंदी दलित साहित्य को समृद्ध करने में उल्लेखनीय योगदान किया हैं। हिंदी दलित कविता के इस प्रतिष्ठित कवि के कविता की खास विशेषता यह हैं,कि वाल्मीकि के मुख से जब कविता स्वयं प्रस्फुटित हो उठती हैं। उन्होंनें आपने भोगे हुए जीवन में जिन परिस्थितियों का सामना किया था, वे पीडाजण्य अनुभूति के उत्पीडन को, दलित शोषण को अभिव्यक्त किया और वर्णवादी व्यवस्था पर कडा प्रहार कर उसके प्रति आक्रोश, चीड और विद्रोह को आपने काव्य में व्यक्त किया हैं। हिंदी साहित्य में एक नयी परिवर्तनवादी चर्चा को निर्माण करनेवाले वाद-विवाद-संवाद में विश्वास रखनेवाले ओमप्रकाश वाल्मीकि ने आपनी साहित्यिक यात्रा 'कविता' से आरंभ की जिसके बाद यह सिलसिला कहानी,नाटक, आत्मकथा और अनुवाद तक जारी रहा हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि का साहित्य-सर्जन कहानी संग्रह-;सलाम -सन 2000,घुसपैठिये-सन 2003,(छतरी , अम्मा एंड अदर स्टोरीज), आत्मकथा -(जूठन -सन 1997 दो भागो में),(आलोचना - दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र -सन 2001,मुख्यधारा और दलित साहित्य , दलित साहित्य :अनुभव ; संघर्ष एवं यथार्थ),अनुसंधान परक ग्रंथ-सफाई देवता -सन 2008; नाटक -दो चेहरे , उसे वीर चक्र मिला था आदि में साहित्य सर्जन किया। मुख्य रूप से हम यहाँ ओमप्रकाश वाल्मीकि के कवि कर्म और कविताओं पर चिंतन करेंगे। उनका काव्य संग्रह -' सदियों का संताप'-सन -1989; 'बस्स! बहुत हो चुका -सन 1997 तथा ' अब और नहीं -सन 2009 इन तीन काव्य संग्रह की कविताओं के माध्यम से जीवन की सच्चाई, कटू भोगे हुए यथार्थ, जिसमें सामान्य मनुष्य की चेतना और उसकी विचार शक्ति पर चोट करके जागृत करने का प्रयास किया हैं।

हिंदी दलित कविता वर्तमान समय की पीडा प्रस्तुत कर दलित आन्दोलन को गति प्रदान करती हैं। दलित कविता तत्कालीन वर्णव्यवस्था की सामाजिक,संस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक वर्चस्व के खिलाफ का प्रतिशोधात्मक संघर्ष को निर्माण करती हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि का मानना हैं कि, व्यवस्था का शिकार बनकर रहने से उसका विरोध करना होगा। यह अहसास केवल दलित कवि को ही हो सकता हैं। जिसे उसने स्वयं भोगा हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि के ' कहन' और ' लेखन ' के मूल में जहाँ एक ओर ' बुद्ध का दर्शन ' , ' ज्योतिबा फुले ' , ' सावित्रीबाई

Women's College Of Arts, Commerce & Computer Application, Dongar Kathora

SBD-2021
'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Special Issue - 252
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
August 2020

जळगांव जिहयातील घटले स्त्री-पुरुष प्रमाण- रावेर तालुक्याचा क्षेत्रिय अभ्यास

डॉ. सुरेश भास्कर ढाके
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख
सहयोगी प्राध्यापक
कला,वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन
महिला महाविद्यालय,डोंगर कठोरे,
ता. यावल,जि.जळगांव (महा.)
मो.९४२०९३९५४४

प्रस्तावना:-

रावेर तालुका हा जळगांव जिल्हयातील विकसित तालुक्यापैकी एक तालुका म्हणून ओळखला जातो. रावेर तालुका हा क्षेत्रफळाच्या दृष्टीने मोठा तालुका आहे. या तालुक्यात सिंचनाच्या सुविधा जास्त प्रमाणात आहेत. रावेर हे तालुक्याचे ठिकाण असून रावेर तालुक्याचे क्षेत्रफळ ६६९.०६ चौ. कि.मी. एवढे आहे. २०११ च्या जनगणनेनुसार ३,१२,०८२ असून नागरी लोकसंख्या ४७,६२३ आहे तर ग्रामीण भागातील लोकसंख्या २,६४,४५९ अशी होती. त्यापैकी १,६१,१४९ पुरुष व १,५०,९३३ स्त्रिया आहेत. एकुण लोकसंख्येमध्ये हिंदुंची लोकसंख्या २,२०,०१२ (७०.५०%), मुसलमानांची लोकसंख्या ६२,६३० (२०.०७%), बौध्द १६,७१४ (५.३६%), जैन ८३९(०.२७%), ख्रिश्चन २८२ (०.०९%) तर शिख ९० (०.०३%) अशी आहे. शेती हाच एकमेव व्यवसाय असल्यामुळे संशोधनासाठी निवड केलेल्या सर्व कुटुंबे हे शेतकरी किंवा शेतमजुर आहेत. २०११ च्या जनगणनेनुसार रावेर तालुक्यात एकूण ११७ गावे आहेत. यापैकी २५ गावांची क्षेत्रिय संशोधनासाठी यादृच्छिक (Ramdom) नुमुना निवड पध्दतीने निवड केली. क्षेत्रिय संशोधनासाठी निवड केलेल्या २० गावांमधून प्रत्येकी ५ असे एकूण १०० कुटुंबांची निवड नमुना म्हणून केली. ही निवड करीत असतांना सुध्दा यादृच्छिक नमुना निवड पध्दतीचा वापर केला.

प्रस्तुत शोध निबंधातील बहुतांशी माहिती ही प्रश्नावलीच्या आधारे गोळा करण्यात आलेली असून अशा माहितीला व आकडेवारीला प्रश्नावलीचा आधार आहे. काही तक्त्यांमध्ये गटागटाने माहिती दिलेली आहे. या प्रत्येक गटाची कमाल मर्यादा त्या त्या गटात समाविष्ट केलेली आहे.

तक्ता क्रमांक १

निवड केलेल्या कुटुंबातील स्त्री-पुरुष प्रमाणाचा आकृतीबंध

अ.क्र.	लिंग	संख्या	शेकडा प्रमाण	दर हजार पुरुषांमागे स्त्रियांचे प्रमाण
१	पुरुष	३१५	५५.२६	८०३
२	स्त्री	२५५	४४.७४	
	एकुण	५७०		

(आधार - प्रश्नावलीवरून पूर्ण) ---२

(२)

वरील तक्ता क्र. १ मध्ये क्षेत्रिय संशोधनासाठी निवड केलेल्या कुटुंबातील स्त्री व पुरुषांची संख्या दिलेली आहे. या माहितीवरुन पुढील गोष्टी लक्षात येतात.

क्षेत्रिय संशोधनासाठी निवड केलेल्या कुटुंबातील एकूण सभासद संख्या ५७० असून त्यापैकी ३१५ (५५.२६ %) पुरूष, तर २५५ (४४.७४ %) स्त्रिया आहेत. म्हणजेच पुरुषांच्या तुलनेत स्त्रियांची संख्या १९ % कमी आहे.

SBD 20-21

Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019), Special Issue - 253 (B) Multidisciplinary Issue Peer Reviewed Journal | 2348-7143 October-2020

कोविड-१९ चा महाराष्ट्राच्या अर्थव्यवस्थेवर झालेला परिणाम- एक चिकित्सक अभ्यास

डॉ. सुरेश भास्कर ढाके
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख
सहयोगी प्राध्यापक
कला,वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन
महिला महाविद्यालय,डोंगर कठोरे,
ता. यावल,जि.जळगांव (महा.)
मो.९४२०९३९५४४
Email.sbdhake33@gmail.com

प्रस्तावना -

कोविड-१९ या संसर्गजन्य आजारामुळे संपूर्ण जगाचे अर्थशास्त्र कोलमडले आहे. हा आजार संसर्गजन्य असल्यामुळे अनेक देशांनी संचार बंदीचा अवलंब केल्यामुळे सर्वच क्षेत्रात उद्योग ठप्प झाले आहे. उद्योग व्यवसाय ठप्प झाल्यामुळे अनेकांपुढे कुटुंबाचा उदर निर्वाह चालविण्याचा प्रश्न निर्माण झालेला आहे. देशातील अनेक कामगार गावी परतले आहेत.अशा परिस्थितीमुळे देशातील सर्वच लोकांना याचा आर्थिक फटका बसला आहे. कृषी, उद्योग आणि सेवा या तिन्ही क्षेत्रावर कोविड-१९ चा आर्थिक फटका बसल्यामुळे GDP चा दर मागील ४५ वर्षांपेक्षा खाली गेला आहे. बेरोजगारीच्या दराने मागील ६० वर्षातील पातळी गाठली आहे.उद्योग क्षेत्रातील GDP चा दर दिवसेंदिवस घटत आहे.म्हणून देशातील आर्थिक स्थिती डबघाईला आलेली आहे. सेवा क्षेत्रातील अनेक व्यक्तींच्या नोकऱ्या गेल्यामुळे सेवा क्षेत्राच्या विकासाला अंकुश लागला आहे. थोडक्यात कोविड-१९ मुळे भारत देश मागील ५० वर्ष मागे गेला आहे. देशातील लागू केलेल्या संचारबंदीमुळे सर्वसामान्यांचे कंबरडे मोडले गेले आहे. उत्पन्नाचे मार्ग बंद झाल्यामुळे खेळत्या पैशाचा अभाव मोठ्या प्रमाणात दिसून आला आहे. जिवनावश्यक वस्तू वगळता इतर वस्तूंच्या विक्रीमध्ये मोठ्या प्रमाणात घसरण झालेली आहे. महाराष्ट्र राज्याची आर्थिक स्थिती इतर राज्यांपेक्षा चांगली असली तरी राज्य आज या कोविड-१९ च्या परिस्थिती हतबल झालेले आहे. महाराष्ट्रात सर्वात जास्त फटका मध्यम, लघु व कृषी क्षेत्राशी निगडीत असणाऱ्या उद्योग धंद्यांना बसला आहे. मार्च महिन्यानंतर शेतकऱ्यांचा शेतमाल विक्री करण्याचा काळ असतो अशा परिस्थितीमध्ये लॉक डाऊन झाल्यामुळे शेतकऱ्यांच्या शेतमालाची विक्री करण्यास अनेक समस्या निर्माण झाल्यामुळे शेतकऱ्यांचे आर्थिक नुकसान झालेले आहे. विविध राष्ट्रीयकृत बँका, व्यापारी बँका,सहकारी बँका,पतसंस्था आणि सावकार इ.कडून घेतलेल्या कर्जाची परत फेड करणे शक्य झाले नाही. शेतकरी वर्गाला सतत अनेक समस्यांचा सामना करावा लागतो यात तीळ मात्र शंका नाही.कारण २०१९-२० या खरीप व रब्बी हंगामात पाऊस चांगल्याप्रकारे असल्यामुळे पीके पण चांगली होती. शेवटी शेतमालाची विक्री करण्याच्या वेळेत जगात लॉक डाऊन झाल्यामुळे सर्वच व्यवहार ठप्प झाल्यामुळे खरेदी-विक्रीच्या अभावामुळे शेतमालाची विक्री न झाल्यामुळे शेतमालाची नासाडी झालेली आहे. यामध्ये कांदा, टरबूज, खरबूज, द्राक्ष, आंबा,पेरु,डाळिंब, केळी, कापूस,गहू, तांदूळ अशा महत्वाच्या व्यापारी पिकांचे मोठ्या प्रमाणात लाखोंचे नुकसान झालेले आहे. थोडक्यात कोविड-१९ च्या परिस्थिमुळे देशातील सर्वच राज्यातील कृषी, उद्योग आणि सेवा या तिन्ही क्षेत्रांचे अतोनात नुकसान झालेले आहे.यावरच या क्षेत्रांना पुर्नःजिवीत करण्यासाठी विविध सवलती देणे गरजेचे आहे.

SBD-20-21

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal

Oct. To Dec. 2020
Issue-36, Vol-20

0156

33

जळगाव जिल्ह्यातील खादी व ग्रामोद्योग मंडळाचे कार्यात्मक मूल्यमापन

मार्गदर्शक
डॉ. सुरेश भा. ढाके
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर अप्लिकेशन महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, जि.जळगाव

संशोधक
अर्जुन तु. पाटील
मु.पो.ता. बोदवड (कुंभारवाडया जवळ)
जि. जळगाव.

****

प्रस्तावना :

मंडळाची स्थापना महाराष्ट्रात खादी व ग्रामोद्योगाना प्रोत्साहन देऊन त्यांचे संघटन विकास व विनियमन करण्यासाठी महाराष्ट्र शासनाने महाराष्ट्र राज्य खादी व ग्रामोद्योग मंडळाची स्थापना मुंबई खादी व ग्रामोद्योग अधिनियम १९६० (सन १९६० चा मुंबई अधिनियम क्रमांक १९ नुसार) करण्यांत आली आहे .

ग्रामीण भागातील गरजू लोकांना रोजगार पुरविणे, कारगिर उद्योजक बलुतेदार यांच्या उद्योगाचे स्थैर्य स्वयंरोजगारांच्या क्षेत्राची व्यापक प्रमाणात वृध्दी कारागिरांना कच्चा माल पुरवठा कारागिरांचे तांत्रिक कौशल्य वाढविणे यासाठी निवडक ग्रामोद्योगांचे प्रशिक्षण, खादी ग्रामोद्योगाच्या विकासास पोषक असे धोरण ठरविण्याबाबत शासनाशी प्रभावी संपर्क स्थापन करणे व स्थानिक साधन संपत्तीचा वापर करुन ग्रामीण भागातील उद्योजक सुशिक्षित बेरोजगार कारागिर यांना स्थानिक ठिकाणी रोजगार उपलब्ध करुन देणे हा मंडळाचा उद्देश आहे.

भारतीय शेती हा राष्ट्र विकासाच्या पाठीचा कणा म्हणून संबोधला जातो. कारण उद्योगासाठी आवश्यक तो कच्चा माल शेतीमध्येच तयार होतो. खेडेगावातून तालुक्का व जिल्ह्याच्या ठिकाणी विक्री करुन लघु उद्योग व मोठे उद्योगापर्यंत पोहचविला जातो. त्याचप्रमाणे वनसंपत्ती व भूगर्भातील खनिज संपत्ती बाहेर काढून त्यापासूनही तर अनेक यंत्रे तंत्रे यांच्या माध्यमातून ग्रामीण उद्योग चालविले जात आहेत. सध्या वाढविण्यात आलेल्या १३४ ग्रामीण उद्योगामध्ये अनेक सेवा उद्योगाच्या समावेश झाल्याचे दिसते. अशा भरगच्च यादीतील ग्रामीण उद्योगांच्या माध्यमातून महाराष्ट्रातील प्रत्येक जिल्ह्यांमधील ग्रामीण कारागिरांना रोजगार उपलब्ध झालेला आहे.

ग्रामोद्योगातील कारागिरांना व्यवसायासाठी देण्यात आलेल्या कर्जाची परतफेड रोख रक्कमेशिवाय त्यांनी तयार केलेल्या वस्तुच्या स्वरुपात वित्तीय संस्था कर्जाच्या परतावयाच्या रक्कमे एवढी स्विकारतात. अशावेळी बहुधा तालुक्याच्या ठिकाणी बलुतेदार सहकारी संस्थामार्फत त्यांच्या भासदांना कर्ज वाटप केले असल्यास सभासदांकडून पूर्णपणे वसूली व्हावी म्हणून कारागिरांकडून वस्तुच्या स्वरुपात त्यांचा माल खरेदी केला जातो. असा तयार केलेला वा उत्पादीत वस्तुंना विकण्यासाठी बलुतेदार सहकारी संस्थाची दुकाने असतात. या दुकानांमार्फत कारागिरांकडून खरेदी केलेल्या वस्तुंवर अल्प नफा घेवून येणारी रक्कम संबंधीत कारागिरांच्या कर्ज खात्यात जमा केली जाते बरेचदा तर पावसाळ्याच्या दिवसात ग्रामोद्योग उत्पादीत वस्तुंना भरपूर मागणी नसल्याने किंवा बाजारपेठेतही वस्तुंना उठाव नसल्यामुळे कारागिरांना कच्चा माल खरेदी करण्यासाठी कर्जाची परतफेड करण्यासाठी जवळ पैसा नसतो. अशावेळी कारागीरांच्या बलुतेदार सहकारी संस्था महत्वाची भूमिका पार पाडतात आणि वस्तुच्या स्वरुपात कर्जाच्या रक्कमेचा परतावा करणे सोईचे होते. त्यामुळे वित्तीय संस्था व्यक्तीगत कर्जपुरवठा करण्यापेक्षा बलुतेदार सहकारी संस्थाच्या मध्यस्थीने कर्जपुरवठा करण्यातांना प्राधान्य देतात यामुळे वसूली कार्यवाहीसाठी त्यांना खर्च करावा लागत नाही . तसेच कर्जाची रक्कम (मुद्दल) बुडण्याची भिती राहत नाही.

शोध निबंधाचे उद्दिष्टे :

१) जळगाव जिल्ह्यातील खादी व ग्रामोद्योग मंडळाची रचना व कार्यपद्धतीचा अभ्यास करणे.
२) जळगाव जिल्ह्यातील खादी व ग्रामोद्योग मंडळाचे महत्त्व विशद करणे.
३) जळगाव जिल्ह्यातील खादी व ग्रामोद्योग मंडळाची भूमिका विशद करणे.

गृहीतके :

Women's College Of Arts Commerce & Computer Application Dongar Kathora

SBD-2021

८) मानवी जीवन आणि विज्ञानाचा अतिशय जवळचा संबंध असून, विज्ञान तंत्रज्ञानाचे महत्त्वही या कादंबरीतून विशद केले आहे.

संदर्भ :-

१) जयंत नारळीकर : 'प्रेषित (विज्ञान कादंबरी)', मौज प्रकाशन गृह, मुंबई, पहिली आवृत्ती, ऑगस्ट १९८३

२) विलास खोले (संपादक) : 'गेल्या अर्धशतकातील मराठी कादंबरी', लोकवाङ्मय गृह, मुंबई, दुसरी आवृत्ती, जुलै २००७.

३) शरद गायकवाड (संपादक) : 'जागतिकीकरण आणि मराठी साहित्य', स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे, पहिली आवृत्ती, ऑक्टोबर २००९

४) शंकर विभुते : 'स्वातंत्र्योत्तर मराठी कादंबरीची वाटचाल', स्वरुप प्रकाशन, औरंगाबाद, पहिली आवृत्ती, जानेवारी २०१०.

५) शंकर विभुते : 'आधुनिक मराठी कादंबरीतील सामाजिकता', सूर्यमुद्रा प्रकाशन, नांदेड, पहिली आवृत्ती, फेब्रुवारी २०१५.

६) संभाजी पाटील (संपादक) : 'एकविसावे शतक आणि मराठी साहित्य', अरुणा प्रकाशन, लातूर, पहिली आवृत्ती, एप्रिल २०१७.

□□□

17

महाराष्ट्र राज्य खादी व ग्रामोद्योग मंडळ : एक चिकित्सक अध्ययन

अर्जुन तु. पाटील
संशोधक,
जि. जळगाव

डॉ. सुरेश भा. ढाके
मार्गदर्शक, अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर अप्लिकेशन महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, जि.जळगाव

****

प्रस्तावना : Introduction

ग्रामोद्योग ग्रामीण भागातील दुर्बल घटकांतील तसेच मागासवर्गीय लोकांना आणि ग्रामोद्योगातील कारागिराना खादी व ग्रामोद्योगाच्या कार्यक्रमान्दारे रोजगार उपलब्ध करुन देऊन दारीद्रय रेषेच्या वर आणण्यासाठी राज्य शासनाने १९६२ मध्ये महाराष्ट्र राज्य खादी व ग्रामोद्योग मंडळाची स्थापना केली. खादी व ग्रामोद्योगांच्या कार्यक्षेत्रात अर्थात मार्च २०१० पर्यंत एकूण १३४ ग्रामोद्योगांचा समावेश करण्यात आला आहे.

१. ग्रामोद्योगाची व्याख्या: Definition of Village Industry

उच्चाधिकार समितीने केलेल्या शिफारसीप्रमाणे ''विस हजार (२०,०००) लोकासंख्यच्या आतील गावामध्ये प्रती कारागीरापोटी भांडवली कर्जाची रुपये ५०,०००/ — (पन्नास हजार) पर्यंत गुंतवणूक करण्यात येणारा उद्योग म्हणजे ग्रामोद्योग हाय. ''महाराष्ट्र राज्य खादी व ग्रामोद्योग मंडळाने आपल्या प्रकाशित पुस्तकात (''आपले हात आमची साथ'' — मंडळ प्रकाशन)'' ग्रामोद्योग म्हणजे गृहउद्योग, कुटीर उद्योग, पारंपारीक उद्योग. घरगुती उद्योग किंवा ग्रामोद्योग यामधील कारागिर हा घटक सामाईक असल्यामुळे वरिल सर्व उद्योगासाठी

Women's College Of Arts Commerce & Computer Application Dongar Kathora

SBD-20-21

37

भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोरील समस्या- एक चिकित्सक अभ्यास

डॉ. सुरेश भास्कर झांबे
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख
कला वाणिज्य व कॉम्प्युटर अॅप्लीकेशन
महिला महाविद्यालय डोंगरकठोरे, ता.यावल.जि.जळगांव

****

प्रस्तावना :-

भारतातील इंग्रज राजवटीनंतर ही भारत देश कृषी अर्थव्यवस्था म्हणून गणला जात आहे.स्वातंत्र्यानंतर आर्थिक विकास साध्य करण्यासाठी नियोजन मंडळाची स्थापना करण्यात आली. ब्रिटिश राजवटीत भारतीय अर्थव्यवस्थेचे मोठ्या प्रमाणात केल्या गेलेल्या शोषणामुळे भारतीय अर्थव्यवस्थेचे मोठ्या प्रमाणात आर्थिक नुकसान झालेले आहे.कुटिरउद्योग व लघु उद्योगाचा ऱ्हास ब्रिटीश कालखंडात झाला होता.भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोर रोजगार निर्मिती ,दारिद्र निर्मुलन ,औद्योगिक विकास, कृषी क्षेत्राचा विकास , सेवा आणि पायाभूत सोयींचा विकास इ.समस्या निर्माण झाल्या होत्या.भारताने गेल्या साठ वर्षात नेत्रदिपक म्हणावी अशी प्रगती केली आहे.कारण देश स्वातंत्र झाला तेव्हा आपल्या भारताकडे स्वत:साठी पुरेल एवढे अन्नधान्य उपलब्ध नव्हते. १९६० नंतर डॉ.स्वामीनाथन यांच्या नेतृत्वाखाली हरित क्रांती घडून आली .आज भारत देश अन्नधान्याच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण झाला असून पुढील काही वर्ष शेतीतून कोणत्याच प्रकारे उत्पादन झाले नाही तरी अन्नधान्याची टंचाई निर्माण होणार नाही .भारताने अनेक समस्यावर मात करत देशाच्या आर्थिक विकास साध्य करण्याचा प्रयत्न केला आहे.पंचवार्षिक योजनांच्या माध्यमातून विविध विकास कामे पूर्णत्वाकडे नेण्यात आले.औद्योगिक विकास ,पायाभूत सोयींचा विकास, सुरक्षा क्षेत्रातील विकास ,शिक्षण, बेरोजगारी,दारिद्रय , नैसर्गिक आपत्ती व आर्थिक विषमता अशा बाबतीत योजना राबविल्या आहेत.आतापर्यंत १२ पंचवार्षिक योजना राबविल्या आहेत.अलिकडच्या काळात मोदी सरकारने पंचवार्षिक योजनांऐवजी निती आयोगाची स्थापना केलेली आहे. भारताच्या मागील पाच वर्षांच्या GDP वृध्दी दरामध्ये चढ-उतार झालेला असल्याचे दिसून येते. जुले २०१५ मध्ये GDP वृध्दीदर ८.४ टक्के होता,तर जुले २०१६ मध्ये GDP वृध्दीदर ८.१ टक्के ,जुले २०१७ मध्ये GDP वृध्दीदर ५.६ टक्के आणि जुले २०१८ मध्ये GDP वृध्दीदर ८.२ टक्के होता. सध्य स्थितीत भारताला GDP वृध्दीदरामध्ये सातत्य राखण्यात अपयश आलेले आहे याचे प्रमुख कारण आहे भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोर असणाऱ्या विविध समस्या होय. विकास ही सातत्याने व अविरत चालणारी एक प्रक्रिया आहे. एका राज्याचा विकास साध्य करणे म्हणजे सर्व राज्यांचा किंवा विभागांचा विकास नव्हे तर सर्व राज्यांचा किंवा विभागांचा विकास साधणे म्हणजे समतोल आर्थिक विकास साध्य करणे. आजमितीला भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोर आर्थिक विषमता, दारिद्रय, बेरोजगारी, लोकसंख्या वाढ, लिंग गुणोत्तर प्रमाण, शेतीची अल्प उत्पादकता, नैसर्गिक आपत्ती, बालरोजगार, असमान विकास औद्योगिक विकास , अशांतता, आंतरराष्ट्रीय व्यापारतोल, चलनवाढ, तुटीचा अर्थभरणा, प्रादेशिक अर्थसमतोल व आर्थिक शोषण इ. समस्या निर्माण झालेल्या आहेत.

आजपर्यंत राबविलेल्या विविध पंचवार्षिक योजना व विविध विकास योजनांतून देशातील भेडसावणाऱ्या सर्व आर्थिक समस्या सुटल्या नाहीत. जागतिकिकरणाच्या काळानंतर भारतीय अर्थव्यवस्थेला चांगले दिवस आले असले तरी अंतर्गत आव्हाने किंवा समस्यांबाबत ठोस उपाययोजनांचा अभाव दिसून येत आहे. सध्य स्थितीला भारतात मोठ्या प्रमाणात बेरोजगारीची समस्या निर्माण झालेली आहे. त्याचबरोबर वाढत्या लोकसंख्येमुळे वाढत्या दारिद्रयाचे प्रमाणही वाढतच आहे. दारिद्रयाच्या बाबतीत विविध योजना राबविल्या असल्या तरी या योजनांची अंमलबजावणी सर्व भारतात समान झालेली नाही. स्वातंत्र्यपूर्व काळात इंग्रजांनी भारतीयांचे आर्थिक शोषण केले होते ते आजही भारतीय व्यापारी, उद्योगपती, श्रीमंत व्यक्ती व राजकीय नेते करीत आहे. थोडक्यात आजमितीला भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोर अनेक समस्या आहेत. त्या समस्यांचे उच्चाटन करणे भारतीय अर्थव्यवस्थेला शक्य आहे यासाठी प्रबळ इच्छाशक्ती हवी आहे व इच्छेला पैशांचे पाठबळ हवे आहे. आर्थिक व सामाजिक समस्या सोडविणे प्रत्येक देशाचे कर्तव्य आहे यासाठी भारत सरकारने विविध विकास कामे हाती घेतली पाहीजे. जेणेकरुन आर्थिक विकास साध्य करणे शक्य होईल.

शोधनिबंधाचे महत्व:-

भारतीय अर्थव्यवस्था जगातील प्रमुख देशांमध्ये चौथ्या क्रमांकाची अर्थव्यवस्था म्हणून गणली जात आहे. वाढत्या उत्पन्नामुळे लोकांच्या वाढत्या गरजा पूर्ण करणे प्रत्येक अर्थव्यवस्थेचे प्रमुख कार्य आहे. म्हणून दळणवळण, पायाभूत सुविधा , आरोग्य शिक्षण, स्वच्छता, किमान वेतन, जन्मदर अशा विविध क्षेत्रांकडे लक्ष देण्याची आवश्यकता

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Vol.-VIII, Issue-I (B)
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan.-March 2021

टाळेबंदी (लॉक डाऊन) नंतरची ग्रामीण अर्थव्यवस्था - एक विशेष अभ्यास

डॉ. सुरेश भास्कर ढाके
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख
कला वाणिज्य व कॉम्पयुटर अॅप्लीकेशन महिला महाविद्यालय,
डोंगरकठोरे, ता.यावल.जि.जळगांव.
मो.नंबर-९४२०९३९५४४
Email-sbdhake33@gmail.com

प्रस्तावना :-

कोरोना महामारीचा प्रादुर्भाव शहरासह ग्रामीण भागातही दिवसेंदिवस वाढल्यामुळे ग्रामीण भागातील आठवडे बाजार सात महिन्यापासून बंद होते. टाळेबंदीमुळे (लॉक डाऊन) आठवडे बाजारातील होणारी मोठी उलाढाल यामुळे ठप्प झालेली होती मात्र कोरोनाच्या केलेल्या उपाययोजनांमुळे रुग्णांची संख्या हळूहळू कमी होऊन रुग्ण बरे होण्याच्या प्रमाणातील वाढीमुळे भारतासह सर्व राज्यांनी टाळेबंदीचे (लॉक डाऊन) सर्व नियम हळूहळू शिथिल केले. ग्रामीण भागातील लहान, मध्यम खास करुन आठवडे बाजार पुन्हा सुरळीत चालू होत आहे.कारण देशाच्या कान्याकोपऱ्यात कोठेही आठवडे बाजार शहरासह ग्रामीण भागातही मोठया प्रमाणात सुरु असतात या सर्व बाजाराची उलाढाल मोठया प्रमाणात होत असते. काही ठिकाणच्या आठवडे बाजारांना अनेक वर्षांची परंपराही आहे.उदा.दिल्लीतील मिना बाजार, गोरखपुरमधील मंडीचा बाजार अशा ग्रामीण भागातील आठवडे बाजारामध्ये फळे,भाजीपाला,शेती अवजारे,खेळणी,कपडे, किराणा,भांडी, भजी,भेळ,शालेय साहित्य, मिठाईची दुकाने ,चहाची दुकाने ,चप्पल व बुटची दुकाने ,वडापाव,मनोरंजन करणारे विविध कलाकार आदिंचा समावेश यात होतो.

ग्रामीण भागातील आठवडे बाजाराच्या आर्थिक उलाढालीचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढत आहे. ग्रामीण भागातील ५३ टक्के लोक ग्रामीण बाजारातील वस्तूंची खरेदी करतात म्हणून भारतीय अर्थव्यवस्थेमध्ये ग्रामीण आठवडे बाजारातील उलाढालीचा १७-२५ टक्के हिस्साआहे. इको इंडिया फायनान्सशियल सर्व्हिसच्या मते, भारतात घरगुती पैशांची देवाणघेवाण वार्षिक उलाढाल साधारणतः दोन लाख कोटी रुपयांच्या वर आहे. सुरुवातीला दरमहा पाच हजार कोटी रु. शहरातून ग्रामीण भागामध्ये पाठविण्यात येत होते मात्र टाळेबंदीमुळे (लॉक डाऊन) ८० टक्के घसरण झाली होती. पण सध्याची परिस्थिती पाहता यामध्ये बदल होऊन ती पूर्व पदावर येत आहे अशा पार्श्वभूमीवर केंद्र सरकारने गरीबांसाठी कल्याणकारी योजना सुरु करुन त्या अंतर्गत जनधन योजनेतील महिलांच्या खात्यावर पुढील तीन महिने प्रत्येकी ५०० रु. दिले गेले आहे.[१]

देशामध्ये २५ मार्च पासून लागू झालेल्या टाळेबंदीमुळे (लॉक डाऊन) ग्रामीण अर्थव्यवस्थेवर विपरित परिणाम झालेले आहे. देशातील ग्रामीण भागातील दैनंदिन कामावर जाणाऱ्या कामगारांवर उपासमारीची वेळ आली होती. शेतकऱ्यांचे मोठया प्रमाणात नुकसान झालेले आहे. देशातील ८५ टक्के शेतकऱ्यांकडे २.५ हेक्टरपेक्षाही कमी जमीन आहे ते यावरच कुटुंबाचा उदरनिर्वाह चालवितात. टाळेबंदीमुळे (लॉक डाऊन) सर्व व्यवहार ठप्प झाले होते. त्यामध्ये हातातोंडाशी आलेले रब्बी चे पिक काढण्यासाठी मजूर मिळणे कठिण झाले होते. तसेच काळी मिरी, कॉफी, टरबूज, खरबूज, मिरची व भेंडी या पिकांच्या लागवडीचा हा हंगाम होता. मात्र टाळेबंदीमुळे (लॉक डाऊन) या सर्व पिकांचा हंगाम वाया गेल्यामुळे शेतकऱ्यांना मोठया प्रमाणात आर्थिक नुकसान सहन करावे लागले आहे. भाजीपाला आणि फुले या सारख्या नाशवंत पिकांचे उत्पादन तर तोटयात गेले आहे. कोरोनाच्या प्रभावामुळे

टाळेबंदीमुळे (लॉकडाऊन) परिस्थितीचा फायदा दलाल व अडते यांना झालेला असल्याचे दिसून आले आहे. उन्हाळी हंगाम हा लग्न समारंभासाठीचा हंगाम असतो. म्हणून या हंगामात फुलांसाठी मोठया प्रमाणात मागणी असते.

N2B-20-21

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Special Issue - 258 (B)
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
January 2021

दीपनगर औष्णिक विद्युत केंद्राच्या परिसरातील शेतकऱ्यांची आर्थिक व सामाजिक स्थिती

डॉ. विनोद झामा मोरे
सहाय्यक प्राध्यापक -अर्थशास्त्र विभाग
कला वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन महिला महाविद्यालय, डोंगरकठोरे,
ता. यावल, जि.जळगांव
मो.नंबर-७७०९४१८३८०
Email-vzmore39@gmail.com

प्रस्तावना -

आधारभूत संरचनात्मक सोयींना देशाच्या अर्थव्यवस्थेत फार महत्वाचे स्थान असते. कृषी व औद्योगिक क्षेत्राच्या विकासावर अर्थव्यवस्थेचा विकास प्रत्यक्षपणे अवलंबून असतो, मात्र त्या क्षेत्राचा विकास हा त्या देशातील सेवाक्षेत्र म्हणजे पाणीपुरवठा , ऊर्जा , वीजपुरवठा , वाहतूक व दळणवळण , व्यापार , विज्ञान व तंत्रज्ञान, शिक्षण व आरोग्य आदी सेवा किती विकसित आहेत , यावर अवलंबून असतो. नियोजनबध्द विकासाच्या प्रयत्नात पहिल्या योजनेपासूनच आधारभूत संरचनेचे विकासातील महत्व लक्षात घेऊन त्या सर्व सोयींचा जलदगतीने विकास करण्यावर भर देण्यात आला. जवळ-जवळ प्रत्येक योजनेत ५० टक्क्यापेक्षा जास्त खर्च आधारभूत संरचनेवर केलेला आहे. त्यामुळे संरचनात्मक सोयींमध्ये मोठया प्रमाणावर वाढ झालेली आहे.

शेती व औद्योगिक विकासासाठी प्रामुख्याने ऊर्जा महत्वाची आहे. उपलब्ध स्त्रोतांत वीज ही अत्यंत महत्वाचा स्त्रोत आहे. कारण विजेशिवाय शेतीच्या उत्पादनात वेगाने वाढ होऊ शकत नाही. कारखानदारी क्षेत्राच्या विकासासाठी देखील वीज हा अत्यंत महत्वाचा घटक आहे. त्याचबरोबर मानवाच्या राहणीमान व जीवनमानात वाढ करण्यासाठी वीज हा घटक महत्वाचा आहे. एकंदरीत आर्थिक विकासाच्या प्रक्रियेत विजेला अत्यंत महत्वाचे स्थान आहे.

आर्थिक विकासाच्या दृष्टीने शेती, उद्योग, सेवा क्षेत्रात विद्युत निर्मितीला अतिशय महत्वाचे स्थान आहे.विकासाच्या दृष्टीने ऊर्जा ही एक अत्यंत महत्वापूर्ण पायाभूत शक्ती आहे. जगातील विकसित देशांच्या विकासात ऊर्जा स्त्रोतांचे योगदान खूप मोठे आहे. या उलट ज्या देशांकडे ऊर्जा स्त्रोतांचा अभाव आहे. त्या देशांच्या आर्थिक विकासाचा वेग मंद आहे. देशाचा जलद गतीने विकास होण्यासाठी ऊर्जेच्या स्त्रोतांचा पर्याप्त वापर होणे आवश्यक असते. विद्युत शक्तीचा उपयोग उद्योग, कृषी आणि वाहतूक या क्षेत्रांमध्ये व्यापारी दृष्टीने होतो , तर व्यापारेत्तर उपयोगामध्ये घरगुती दिवाबत्ती , स्वयंपाक पाणी , रेफिजरेटर , वातानुकूलित उपकरणे यांसारखी यांत्रिक साधने यांचा अंतर्भाव होतो. लोकसंख्येची वाढ आणि रोजच्या जीवनात आधुनिक साधनांचा वाढता उपयोग यामुळे दिवसेंदिवस घरगुती उपयोगासाठी विजेची मागणी वाढत आहे. विजेची वाढती मागणी पुर्ण करण्यासाठी भारतात औष्णिक विद्युत प्रकल्प, अणु ऊर्जा प्रकल्प व अक्षय ऊर्जा या स्त्रोतांच्या माध्यमातून वीजनिर्मिती केली जाते. महाराष्ट्रात मोठया प्रमाणात औष्णिक विद्युत प्रकल्पांतून वीज निर्मिती होत आहे.

खान्देश भूषण म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या जळगांव जिल्ह्यातील भुसावळ तालुक्यातील दीपनगर येथील वीजनिर्मिती केंद्राने वीजनिर्मितीत उच्चांक प्रस्थापित करुन या भागावर आपली वेगळी मुद्रा उमटविली आहे. प्रगती, विस्तार, रोजगार, शेतीचा विकास असा चौफेर ठसा या प्रकल्पाने उमटविला. आहे. दीपनगर हे सूर्यकन्या म्हणून परिचित असून ते तापी नदी काठावरील गर्द वनराईत बसले आहे.आशियाई महामार्ग क्र.४६ ला लागून व भुसावळ शहरापासून ८ कि.मी. वर सुमारे ७२९ हेक्टर जमिनीवर हे बीज केंद्र विस्तारले आहे.

केंद्रातील संच क्रमांक १ ची स्थापना १७ जुलै १९६८ मध्ये करण्यात आली आहे. या संचाची स्थापित क्षमता ६२.५ मेगावॅट (सध्या हा संच बंद स्थितीत) आणि संचासाठी ६८.९७ कोटी रुपये गुंतवणुक झाली आहे.

V 2m 20-21

आत्मनिर्भर भारत आणि महिला उद्योजकता महिला सक्षमीकरण

डॉ. विनोद झामा मोरे

सहायक प्राध्यापक – अर्थशास्त्र विभाग, कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर एप्लीकेशन, महिला महाविद्यालय.

डोंगर कठोरे ता. यावल जि. जळगांव मो.नं. ७७०१४९८३८०

प्रस्तावना :–

आपल्या देशात उद्योजकता हा पुरुषांचाच प्रांत आहे असे आजही मानले जाते. पुरुषांच्या कर्तृत्वासाठी राखीव क्षेत्र म्हणजे उद्योजकता असे म्हटल्यास फारसे वावगे होणार नाही. मात्र असे असले तरी महिला उद्योजकांनाही उद्योजकता क्षेत्रात खारीचा का असेना वाटा आहे हे नाकारता येणार नाही. खरं तर खारीचा वाटा म्हणणे हे महिलांच्या कर्तृत्वाला नाकारण्यासारखे आहे. पण पुरुषांच्या तुलनेत महिलांचे उद्योजकता क्षेत्रातील प्रमाण कमी असल्याने आम्ही खारिचा वाटा म्हणतो हा वाटा खारिचा असला तरी खुप महत्वाचा आहे.

''बायोटेक'' या जैवतंत्रज्ञानातील उद्योगात महिला उद्योजक किरण मुजूमदार शॉ यांचा सिंहाचा वाटा आहे. टेल्कोच्या पहिल्या महिला इंजिनीअर सुधा मुर्ती यांनी तर आपल्या कार्याने हे सिध्द केले की महिला कोणत्याही क्षेत्रात उतरली तरी स्वत:ला सिध्द करु शकते.

महिलांनाही उद्योजकतेची निकोप वाढ व्हावी म्हणून प्रत्यक्षात किंवा अप्रत्यक्षपणे आपआपल्या परीने योगदान केले आहे. महिला महत्वाकांक्षा पुरुषांना उद्योग बनविण्यासाठी प्रवृत्त करतात. मोठमोठी आवाहने स्विकारण्यासाठी प्रोत्साहन देतात. आता तर स्वत:च पुढाकार घेऊन उद्योजकांची भूमिका पार पाडण्यासाठी सिध्द झाल्या आहेत. उद्योजक बनण्यासाठी आवश्यक असलेले कौशल्य आत्मसात करतात. शिक्षण प्रशिक्षण घेत आहेत. महिला उद्योजकांची नेमकी व्याख्या करणे कठीण आहे.

जेव्हा एखादी महत्वाकांक्षी आणि अभिप्रेरीत महिला पुढाकार घेऊन उद्योजकांची भुमीका स्विकारते आणि ती भुमिका पार पाडण्यासाठी आवश्यक ते प्रयत्न करते, तेव्हा अशा महिलेला महिला उद्योजक म्हणता येईल.

महिला उद्योजकता संकल्पना (Concent of Women Enterprenuers)

महिला उद्योजकता म्हणजे महिलांनी स्थापन केलेले किंवा महिलांकडून ज्यांचा कारभार संचालित होतो असे उद्योग होय. आपल्या देशाच्या दृष्टीकोनातून विचार केल्यास महिला उद्योजकता हे महिलांच्या कर्तृत्वासाठी नव्याने उपलब्ध झालेले क्षेत्र आहे. महिला उद्योजकता आणि पुरुष उद्योजकता यात मुलभुत फरक नसला तरी महिला उद्योजकांना उद्योजकतेच्या क्षेत्रात प्रवेश घेण्यासाठी प्रवृत्त करणे. त्यांना प्रोत्साहन देणे आवश्यक आहे. महिलांचे काही वेगळे प्रश्न आहेत. त्यासाठी सरकारी दरबारातून काही वेगळया मदतीची अपेक्षा आहे. महिला उद्योजकांसाठी सर्व स्तरांवर स्वतंत्रपणे विचार होण्याची फार गरज आहे. असे झाल्यास आर्थिक विकासाच्या प्रक्रियेत महिला उद्योजकांचे महत्त्वपुर्ण योगदान दिसेल. महिला उद्योजकांसाठी विशेष सवलती जाहीर करण्याची आवश्यकता आजही आहे.

१९९१ ला औद्योगिक धोरणाविषयक ठरावात महिला उद्योजकतेबाबत प्रथमच विचार करण्यात आला, त्यानुसार महिला उद्योजकांच्या व्याख्या पुढील प्रमाणे करण्यात आली.

"A women enterprise is an enterprise owned and controlled by a women and having a minimum financial interest of 51 Per cent of the capital and giving of least 51 percent of employmnt generated in the enterprise to women"

Women's College Of Arts Commerce & Computer Application
Dongar Kathora

SMB -20-21
ISSN 2582-5429(online)
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2020 VOL.02. ISSUE II (A)

www.aimrj.com
Email ID. aimrj18@gmail.com

मृत्यूनंतर त्यांचे यजमान डॉक्टर चंद्रचूड यांनी प्रसिद्ध केला. त्यांनी 'मालेची समाधी' या खंड काव्याची ही निर्मिती केली. इंद्राबाई तेलंग यांचा 'भावना तरंग' हा संग्रह 1920 ते 193६ या काळात त्यांना स्फुरलेल्या व त्यांनी समकालीन नियतकालिकांमधून व वृत्तपत्रातून प्रसिद्ध केलेल्या कवितांचा संग्रह आहे. त्यांनी आपल्या कवितासंग्रहाच्या प्रास्ताविकात म्हटले आहे , सध्या साहित्यदरबाराच्या दाराशी कवी किंवा काव्य यांना मिळत असलेला उपहासाचा आहेर पाहून पहिल्याच प्रवेशास नजराना नेण्यास मन कचरले तर ते सहाजिकच नव्हे का? पण मी रसिकांचे हृदय टीकाकारांच्या मापाने मापले याबद्दल मला क्षमा असावी" त्यांची कविता प्रवाही, सहज वा लयमधुर अशा प्रकारची आहे. बालकवी आणि गोविंदाग्रज यांच्या परंपरेतील एक महत्वपूर्ण कवयित्री म्हणून इंदिराबाईची नोंद इतिहासकारांनी केलेली आहे.

1920 ते 1945 या कालखंडात आपल्या आगळ्यावेगळ्या काव्य कार्यकर्तृत्वाने ओळखली जाणारी कवयित्री बहिणाबाई चौधरी यांनी अहिराणी बोलीभाषेतून काव्यनिर्मिती केलेली आहे. माणसाला परखडपणे 'मानसा मानसा कधी होशील मानूस, असे विचारणारी बहिणाबाई यांनी संसार, मानवी मन, शेती, भविष्य अशा विषयांवर काव्य केलेले आहे. स्वतः निरक्षर असून त्यांनी आपल्या काव्यातून उच्चकोटीचे तत्व ज्ञान व्यक्त केलेले आहे. नकळतपणे त्यांनी मानवी नीतिमूल्यांची शिकवण आपल्या काव्यातून दिलेली आहे. त्यामुळेच प्र के अत्रे यांनी त्यांच्या काव्याचा गौरव केलेला आहे. त्या काव्याला त्यांनी 'बावनकशी सोने' असे म्हटलेले आहे. याच काळात इंदिरा संत, पद्मावती गोळे, संजीवनी मराठे या कवयित्री होऊन गेल्या. शांता शेळके यांनी 'हायकू' नावाचा एक नवीन काव्यप्रकार हाताळला. या कालखंडात लेखन करणाऱ्या एक महत्त्वपूर्ण लेखिका असून त्यांच्या काव्याचे हे बदलते आयाम हे लक्षात येते.

1950 नंतर चा कालखंड हा सामाजिक जीवनात काही नव्या जाणिवांचा उदय अधोरेखित करणारा कालखंड आहे. रविकिरण मंडळाच्या परंपरेतील कविता या काळातही मुळ धरूनच होती. विमलाबाई देशपांडे यांच्या कवितेतील स्त्री सुशिक्षित मनाचे भाव प्रदर्शन करणारी आहे. इंदिरा संतांचीही कविता प्रियकराच्या विरहाच्या दुःखातून प्रस्फुरित झालेली आहे. स्त्रीमनाचे भावपूर्ण जीवन चित्रित केलेले आहे. या कालखंडात काही मोजक्याच कवयित्रींनी लेखन केलेले दिसून येते.

स्वातंत्र्यप्राप्तीच्या कालखंडात स्थित्यंतरे होत गेली, समाज बदल होत गेला त्याचे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष परिणाम त्या काळातल्या कवितेत दिसून येतात. स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर चा कालखंड हा स्त्रियांच्या प्रश्नांचा गांभीर्याने विचार करणारा आहे. या कालखंडात स्त्री ही स्वकर्तृत्वाने काव्यक्षेत्रात उठून दिसणारी आहे. अनेक स्त्रियांनी या काळात काव्यलेखन केलेले दिसून येते. वृंदा लिमये, अनुराधा पोतदार, पद्मा लोकूर, अंजली ठाकर, अनुराधा पाटील, प्रभा गणोरकर, अरुणा ढेरे सरिता पदकी अशा अनेक कवयित्रींनी काव्यलेखन केलेले आहे. 1975 हे वर्ष आंतरराष्ट्रीय स्त्रीवर्ष जाहीर

©Copyright 2020 AMRJ. All Rights Reserved
Women's College Of Arts Commerce & Computer Application Dongar Kathora

SMB20-4

VOLUME - X, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2021
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com) AP-4

२२. संत तुकारामांच्या अभंगातील मानवतावाद

डॉ. शकुंतला एम. भारंबे
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, ता. यावल जि. जळगाव.

महाराष्ट्र ही संतांची भूमी आहे. संपूर्ण मानवजातीचा उद्धार करण्याचे सामर्थ्य असलेल्या या संतांमध्येच संत सावता-नामदेव ज्ञानेश्वरांपासून तुकाराम-रामदासांमपर्यंत अनेक संतांची गणना होते. संतवाङ्मयातील लोकजीवनाशी अतिशय जवळचे नाते सांगणारे अभंग म्हणून संत तुकारामांचे अभंग प्रसिध्द आहेत. त्यांनी आपल्या अभंगात माणूस केंद्रबिंदू ठेवून समाजाला एक नवी दिशा देण्याचा प्रयत्न केला. त्यांनी ईश्वराच्याभक्तीतून सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षणिक कार्य करुन आपले वेगळे स्थान निर्माण केले. संत तुकाराम महाराजांचे अभंग समाजमनाशी संवाद साधतात. लोकांनी कसे वागावे? मानवताधर्म कसा पाळावा? समाजात समानता कशी पाळावी? माणसाने माणसाशी माणसाप्रमाणे कसे वागावे? या बाबी सांगून त्यांनी समाजातील मूल्यरचना मांडलेली आहे. निर्मळ आचार, विचार, जीवन जगून अगदी त्याचप्रमाणे समाजाने वागावे अशी विचारसरणी आपल्या प्रत्यक्ष वागणुकीतून समाजाला मार्गदर्शन करणारे संत तुकाराम महाराज म्हणजे एक संस्कृती विस्तारकच होय. संत तुकारामांच्या अभंगांमधून समाजाचे प्रतिबिंब उमटलेले दिसते. सामाजिक मुल्यांचे चित्रण अभंग करतात. सामाजिक दृष्टीने त्यांच्या अभंगांचा विचार केला असता मानवता आणि लोकजीवन हेच त्यांच्या अभंगात ठायी ठायी चित्रित झालेले आहेत.

तुकारामांची अभंगवाणी म्हणजेअनुभूतीची खाणी. जीवनानुभवाचे सार त्यांच्या अभंगवाणीतून अभिव्यक्त झालेले आहे. समाजात शांतता नांदावी, एकमेकांविषयी व्देष नसून चांगला भाव असावा हाच उद्देश मनात बाळगून तुकारामांनी अभंगवाणी लिहिली. ते म्हणतात, परद्रव्य व परनारी यांचा विचारच करायला नको. जर जन्माला येऊन पुण्य करायचे असेल तरत्यांनी विठ्ठल भक्तीचा महिमा सांगून नामसंकिर्तनाची महती सांगितली

नामसंकिर्तन साधन पै सोपे|जळतील पापे जन्मांतरे||
न लगे सायास जावे वनांतरा | सुखे येतो घरा नारायणा ||
ठायीच बैसोनि करा एकचित्त | आवडी अनंत ओळखावा ||

देवाचे दर्शन घेण्यासाठी वनामध्ये किंवा एकांतात जायची गरज नाही. तुम्ही एकमेकांमध्येच देव पहावा हाच खरा मानवतावाद आहे. विश्व आणि विश्वंभर म्हणजेच देव दोन्हीही सारखेच आहे. तुकाराम महाराज म्हणतात-

अवघे सम ब्रम्ह पाहे| सर्वाभूती विठ्ठल आहे||
रिता नाही कोणी ठाव | सर्वांभूती वासुदेव ||

RRK 20-21

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Special Issue - 258 (A)
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
January 2021

सूरजपाल चौहान की कहानियों में आंबेडकरवादी संवेदना

प्रा. डॉ. रविंद्र खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एवं कम्प्युटर ॲप्लीकेशन महिला महाविद्यालय,
डोंगर कठोरा, ता. यावल, जि. जलगाँव
Mo.९४२२४६२८००

भारतीय समाज व्यवस्था में सदियों से दलित अपनी असिमता एवं अस्तित्व को लेकर संघर्षरत है। महात्मा ज्योतिबा फुले और डॉ.बाबासाहब आंबेडकर की जागृत चेतना ने दलितों को एक नयी दृष्टि प्रदान कि हैं।आधुनिक दलित साहित्य के प्रेरक डॉ.बाबासाहब आंबेडकर ही हैं। वह निर्विवादित सत्य हैं। ' शिक्षा-संगठन-संघर्ष' दलित साहित्य का मुल हैं। भगवान बुध्द से लेकर विषमतावादी समाज व्यवस्था का विरोध नाथों, बौध्दों,कबीर,रैदास,तथा संततुकाराम महाराज आदि संतो के साथ ही साथ उन्नीसवी शताब्दी में महात्मा ज्योतिबा फुले,सावित्रीबाई फुले, शाहु महाराज तथा डॉ.बाबासाहब आंबेडकर आदी ने किया।आज इसी विचारधारा को आगे बढाने का कार्य दलित साहित्यकार कर रहे हैं। "अपनी साहित्य की रचनाओं में उदात्त जीवन मुल्यों और सांस्कृतिक मुल्यों को परिष्कृत कीजिए। अपना लक्ष्य सीमीत मत रखिए। अपनी कलम की रोशनी को इस तरह से परिवर्तीत कीजिए कि देश में दलितों और उपेक्षितों की दुनिया बहुत बडी हैं। उनकी पीडा और व्यथा को भली-भाँति जान लीजिए और अपने साहित्य द्वारा उनके जीवन को उन्नत करने का प्रयास कीजिए। इसमें सच्ची मानवता निहित हैं।" १

अत: सूरजपाल चौहान पर डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के विचारों का प्रभाव होना स्वाभाविक हैं,क्योंकि वे भी एक दलित जाति से संबंधित हैं। स्वयं लेखक को जो अनुभव हुए हैं,उन्होंने जो देखा ,भोगा हैं,झेला हैं,उन्हें कलमबध्द करने का प्रयास किया हैं। सूरजपाल चौहान का समग्र साहित्य यथार्थवादी हैं। दलित साहित्य के प्रति लेखक की यह विचारधारा रही है कि,दलित साहित्य मानवता का साहित्य हैं । यह मानवीय दृष्टि से उनकी भलाई सोचनेवाला साहित्य डॉ.बाबासाहब आंबेडकर की शिक्षा और बौध्द धर्म के दर्शन को लेकर लिखा जानेवाला साहित्य ही दलित साहित्य हैं। दलित साहित्य दर्पन नही,यह जलते हुए दीपक के समान हैं, जिसकी रोशनी में मार्ग से भटका हुआ व्यक्ति अपने उचित मार्ग पर चल पडता हैं। सूरजपाल चौहान का वैचारिक आधार आंबेडकरवादी संवेदना हैं। वह दलित एकता के समर्पित लेखक हैं।

दलित कृतिया आत्मकथानात्मक शैली में होती हैं। वर्णित समस्याएँ हर दलित को अपनी या अपने परिचित परिवेश की लगती हैं। सूरजपाल चौहान की अधिकतर कहानियों में आत्मकथानात्मक शैली का प्रयोग मिलता हैं। कई वर्षों से कहानियाँ लिख रहे हैं,और कई आच्छी कहानियाँ उन्होंनें हिंदी साहित्य जगत को दी हैं। कुल कहानी संग्रह उनके तीन हैं। 'हैरी कब आएगा?' (१९९९), 'नया ब्राह्मण' (२००९), 'धोखा' (२०११) यह तिनो कहानी संग्रह की कहानियाँ आंबेडकरवादी चेतना की यथार्थ अभिव्यक्ति हैं। कहानिकार ने विवेच्चित कहानियों में दलित जीवन के विभिन्न दृश्य इसमें उपस्थित किये हैं।

हिंदी दलित साहित्य में लेखक सूरजपाल चौहान आंबेडकरवादी विचारधारा से प्रभावित साहित्यकार हैं। उनके संपूर्ण कहानी साहित्य में दलित जीवन,अन्याय,अत्याचार,उत्पीडन,संघर्ष चेतना तथा शोषण के साथ आंबेडकरी संवेदना हैं। उनकी सभी कहानियों का कथ्य आंबेडकरी संवेदना के संवाहक हैं। 'हैरी कब आएगा?' कहानी संग्रह की 'परिवर्तन की बात' कहानी डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के सुधार आंदोलन का परिचायक हैं। डॉ.बाबासाहब आंबेडकर अपने दलित समाज को यह आव्हान करते हैं कि, स्वाभिमान और सन्मान से जीवन जीना हैं,तो गाँव के मरे हुए जानवर उठाना तथा उनका माँस खाना बंद करना होगा। यह घिनौने काम छोडने होंगे [stamp] संदेश के अनुसार दलित समाज ने यह काम

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV.

31

हिंदी दलित साहित्य में मूल्य संघर्ष

प्रा.डॉ.रविंद्र आर.खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला,वाणिज्य एवं कॉम्प्युटर अप्लीकेशन,महिला महाविद्यालय,डोंगर कठोरे जि.जळगाव (महाराष्ट्र)
मो.9422462800 Email- ravindrakhare78@gmail.com

' दलित ' शब्द हिंदी साहित्य में दो दशको से लगातार प्रयोग हो रहा हैं । ' दलित ' शब्द की व्युत्पत्ती को लेकर अनेक विद्वानो में मतभेद बने हैं। इसलिए इसकी संज्ञा जितनी विवादास्पद हैं , उतनी साहित्यिक भी हैं । ' दलित ' शब्द कि व्युत्पत्ती को संस्कृत धातु ' दल ' से हुई , ' दल ' शब्द का अर्थ -विकसना, खंडित होना, फटना , बिदारना, टुकड़े करना आदि ।

" दलित हृदयं गादोद्योग द्विधा तु न विद्यते " (अर्थात -वेदनाओ के कारण हृदय के टुकडे होते हैं , नाश नहीं) डॉ.भोलानाथ तिवारी के अनुसार - ' दलित' -कुचला हुआ मर्दित, मसला हुआ , रौंदा हुआ ! -पस्त हिम्मत, हतोत्सहित-अछूत, जनजाति, डिप्रेस्ड क्लास ! " 1

प्रस्तुत अनेक साहित्यकारों ने ' दलित ' धारना के प्रति अपने अभिमत दिए हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि - दलित की पहचान को एक सरल और त सामान्यीकरण परिभाषा में बांधने का प्रयास करते हैं -"दलित शब्द का अर्थ हैं जिसका दलन और दमन किया गया हैं, दबाया गया हैं, उत्पिडित, शोषित, सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणीत, रौंदा हुआ, मसला हुआ, विनिष्ट, मर्दित, पस्त-हिम्मत हातोत्सहित वंचित आदि। "2

प्रेमकुमार मणि -"दलित शब्द का जन समुदाय के लिए हैं जो संस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक स्तर पर कुचले गये या किये जा रहे हैं और इस शब्द का साहित्य से जुड़ना इस पुरे वर्ग के साहित्य से जुडने की बात कहता हैं ।"3

डॉ.प्रेमशंकर -" दलित शब्द को अनुसूचित जाति, जनजाति, घूमक्कड जाति , बौद्ध कामगार , मजदूर , निर्धन, किसान, भूमिहीन एवं नारी समाज से जोडकर देखते हैं ।"4

उपर्युक्त ' दलित ' धारणा के अभिमतों से ' दलित' के मूल का अर्थ उत्पन्न होता हैं । इनके मतों से दलित साहित्य में भेदमुलकता और सामाजिक व्यवहार का निर्मूल करने का प्रयास हो रहा हैं। इन्ही वर्ग के लेखकों द्वारा लिखे गये साहित्य को दलित साहित्य कहते हैं । दलितों द्वारा दलितों के लिए लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य हैं । दलित साहित्य में दलितों के तमाम कष्टों, यातनाओ, उपेक्षाओ, प्रताडनाओ को भोगे हुए यथार्थ के आधार पर प्रामाणिक एवं मार्मिक अभिव्यक्ति मिली हैं। दलित साहित्य में जो भी लेखन हुआ हैं , वह भोगा हुआ हैं , प्रामाणिक धधकता दस्तावेज हैं, अनुभव की आँच पर तपकर निकला हुआ सत्य हैं । दलित साहित्य यह अहसास जगाना चहाता हैं कि दलित समाज ने जो दर्द-नाक नारकिय जीवन भोगा हैं , उनकी यह उत्पीडन, शोषण, कई सालो से अपमानित होनेवालो को बराबरी का दर्जा दे । मानवीय धरातल पर इन्सानियत के नाते उन्हें समजे। दलित साहित्य केवल प्रतिशोध का प्रतिशोध नहीं हैं, नकार या निषेध नहीं हैं। वह

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal | E-ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019), Special Issue - 267 (B) : Multidisciplinary Issue | May- 2021
Peer Reviewed Journal

जामनेर तालुक्यातील सीमांत शेतकऱ्यांच्या आर्थिक स्थितीचा तौलनिक अभ्यास

डॉ. सुरेश भास्कर ढाके
कला वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन
महिला महाविद्यालय डोंगरकठोरे,
ता.यावल.जि.जळगांव.
मो.नंबर-९४२०९३९५४४
Email-sbdhake33@gmail.com

प्रस्तावना :-

जामनेर तालुका हा जळगांव जिल्ह्यातील मागासलेल्या तालुक्यांपैकी एक तालुका म्हणून ओळखला जातो. जामनेर तालुका हा क्षेत्रफळाच्या दृष्टीने मोठा तालुका आहे. या तालुक्यात सिंचनाच्या सुविधा खूप कमी प्रमाणात उपलब्ध आहे. सीमांत शेतकरी कुटुंबाकडे थोड्या फार प्रमाणात जमीन असते. पण या जमीनीतून बारमाही रोजगार मिळत नाही. तसेच शेतीचा हंगामाचा काळ वगळता वर्षाचे बाकी दिवस या कुटुंबांना बेकारीत काढावे लागतात. बारमाही रोजगार नसल्यामुळे कुटुंबांना मिळणारे उत्पन्न जेमतेम असते. उत्पन्न कमी असल्यामुळे कुटुंबांच्या जिवनावश्यक गरजा ही पूर्णपणे भागविल्या जात नाही. प्रस्तुत शोध निबंधात जामनेर तालुक्यातील सीमांत शेतकऱ्यांच्या आर्थिक स्थितीचा तौलनिक अभ्यास केलेला आहे.

भारतीय अर्थव्यवस्था कृषी प्रधान असून भारतीय अर्थव्यवस्थेत शेतीला अत्यंत महत्वाचे स्थान आहे.भारतातील सर्वात जुना आणि परंपरागत व्यवसाय म्हणजे शेती होय कोणत्याही देशातील शेती ही मानवी जिवनाची पोषक आहे,उद्योगाची जननी आहे.अशा शेतीमध्ये काम करणाऱ्या शेतमजुराला आज मोठ्या प्रमाणावर मागणी आहे.शेती क्षेत्राव्यतिरिक्त इतर बऱ्याच व्यवसायामध्ये श्रमिकांच्या संघटना स्थापन झालेल्या आहेत. परंतु शेती क्षेत्राचे आकारमान बघता नाहीत. शेती व्यवसायामध्ये आजपर्यंत संघटना स्थापन झालेल्या नाहीत. सीमांत शेतकरी असंघटीत असल्यामुळे त्यांची सौदाशक्ती ही कमी आहे त्यामुळे त्यांची आर्थिक व सामाजिक स्थिती अत्यंत हलाखीची असल्याचे दिसून येते.

संशोधन पध्दती :-

जामनेर तालुक्यातील एकुण १५२ गावांपैकी २५ गावांची क्षेत्रिय संशोधनासाठी यादृच्छिक (Ramdom) नमूना निवड पध्दतीने निवड केली. क्षेत्रिय संशोधनासाठी निवड केलेल्या २५ गावांतून प्रत्येकी ६ असे एकुण १५० शेतमजुर कुटुंबांची यादृच्छिक पध्दतीने नमूना म्हणून निवड केली.ही निवड करीत असतांना सुध्दा यादृच्छिक नमूना निवड तंत्राचा वापर केला गेला.निवड केलेल्या लोकांमध्ये सीमांत शेतकऱ्यांचा समावेश आहे यात पुरुष ७४ , स्त्री ६० व मुले १६ अशी आहेत. प्रस्तुत शोध निबंधातील बहुतांशी माहिती प्रश्नावलीच्या आधारे गोळा करण्यात आलेली असून अशा माहितीला व आकडेवारीला प्रश्नावलीचा आधार आहे.

उपजिविकेचे साधन म्हणून दुसऱ्याच्या जमिनीवर राबविणाऱ्या मजुराला शेतमजूर असे म्हणतात. जामनेर तालूका हा जळगांव जिल्हयातील कृषीप्रधान तालुका असून अविकसित तालुका म्हणून ओळखला जाता. या तालुक्यात वाघुर धरणाचे काम पूर्ण झाल्यानंतर सिंचनाच्या सुविधेत बऱ्याच प्रमाणात भर पडली आहे. सीमांत शेतकऱ्यांच्या जमिनीतून बारमाही रोजगार मिळत नसला तरी वर्षातील भरपूर दिवस काम मिळते. जामनेर तालुक्यातील सिंचनाच्या सोयीमध्ये बऱ्याच प्रमाणात वाढ झाल्यामुळे कायापालट होतआहे. बागायती क्षेत्रात वाढ झाल्यामुळे व या तालुक्यात शेतीला आधुनिकतेची जोड मिळाल्यामुळे शेतीच्या उत्पादन क्षमतेत मोठ्या प्रमाणात वाढ होतांना दिसत आहे. शेतमजुरांना वर्षभर रोजगार मिळून त्यांच्याही उत्पन्नात वाढ झालेली दिसते. परंतु असे असले तरी अलिकडे एका बाजूला शेतमजुरांच्या उत्पन्नात वाढ झालेली दिसते, तर दुसऱ्या बाजुला त्यांना अनेक आर्थिक समस्या भेडसावतांना

SBD-21-22

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal | E-ISSN : 2348-7143
Special Issue - 270 : Multidisciplinary Issue | July- 2021
Peer Reviewed Journal

अनुसूचित जातीच्या कल्याणसाठी शासनाने केलेल्या खर्चाचे मुल्यांकन

डॉ. सुरेश बी. ढाके.
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख
कला वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन,
महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे,
ता यावल जि जळगांव.

राजरत्न भिमराव पोहेकर
संशोधक विद्यार्थी
उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ जळगांव.

प्रस्तावना :

जगातील इतर राष्ट्रा प्रमाणेच भारताचे सुद्धा प्रगत अशा २१व्या शतकाकडे घोडदौड सुरू आहे. परंतु सर्व प्रकारचे सुख समृद्धी भारतात नांदत असताना काही वंचित घटक आजही उपाशी, अर्धपोटी राहून कसे तरी आपले जीवन जगण्याचा केविलवाना प्रयत्न करीत आहे. हा समाज, वर्ण आणि जातीवादाच्या दुष्परिणामांमुळे आर्थिक, औद्योगिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासकीय आणि राजकीय इत्यादी महत्त्वाच्या सर्व क्षेत्रात मागासलेला आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या अथक प्रयत्नांमुळे आणि शैक्षणिक व ध्येयनिष्ठ समाजकारणामुळे वंचित समाज शिक्षणाच्या प्रवाहात दिसून येत आहे. एवढे असतानासुद्धा भारतासारख्या अविकसित देशांमध्ये आढळणाऱ्या सामाजिक संस्था या आर्थिक नियोजनाच्या कार्यप्रणालीला व देशाच्या विकासाला सहाय्यक ठरत नाहीत. भारत देशाने २६ जानेवारी १९५० पासून सार्वभौम प्रजासत्ताक अशी लोकशासन प्रणालीचा स्वीकार केला. व देशात राज्यघटनेतील प्रस्तावनेत असे नमूद केले आहे की नागरिकांच्या सर्वांगीण विकासासाठी व त्यांच्या अधिकारासाठी शासन कटिबद्ध आहे. तसेच त्यांच्या मुलभूत अधिकारांचे संरक्षण करेल असे मार्गदर्शक तत्वाद्वारे स्पष्ट असे दिसून येते. देशातील नागरिकांना समानता आणि त्यांचे हक्क अधिकार प्राप्त मिळवून देणे हे शासनाचे कर्तव्य आहे. अनुसूचित जाती/जमातीला विकासाच्या प्रवाहात आणणे व त्यांचा सर्वांगीण विकास करणे ही सुद्धा केंद्र आणि राज्याची जबाबदारी आहे. ही जबाबदारी ओळखून शासनाने कल्याणकारी योजनांची सुरुवात केली आहे. त्यामध्ये वेगवेगळ्या कल्याणकारी योजनांची निर्मिती व त्यांच्यावर केला जाणारा खर्च ही एक महत्त्वाची बाब आहे. गरीब व वंचित घटकातील लोकांना वेगवेगळ्या संस्थांद्वारे शासन अर्थसाहाय्य करीत असते परंतु त्यांच्यासाठी जो काही निधी ठरलेला असतो तो निधी परिपूर्ण खर्च होतच नाही म्हणूनच त्यामध्ये गरिबी, कुपोषण, निरक्षरता, उच्च शिक्षणाची कमतरता व अपुऱ्या रोजगाराच्या संधी इत्यादी घटकांमुळे आर्थिक प्रगतीमध्ये कमतरता दिसून येत.

उद्दिष्टे :

१. अनुसूचित जातीसाठी असलेल्या कल्याणकारी निधीच्या खर्चाचा अभ्यास करणे.

संशोधन प्रध्दती:

प्रस्तुत शोध निबंध हा द्वितीय साधन सामग्रीवर आधारीत आहे. यामध्ये विविध शासनाचे अहवाल, मासीके वृत्तपत्र, साप्ताहीक, विविध संशोधकाचे लेख,व इंटरनेट इत्यादीचा वापर करण्यात आला.

अनुसूचित जातीच्या कल्याणासाठी क्षेत्रनिहाय प्रस्ताविक निधी व खर्च:

दरवर्षी भारत सरकारच्या वार्षिक कार्यक्रमाच्या एकुण निधीपैकी अनुसूचित जातीच्या कल्याणाकरिता त्यांच्या लोकसंख्येच्या प्रमाणात ११.८ टक्के निधी उपलब्ध करून दिला

Dongar Kathore

आधारित उद्योगांचा विकास करणे, कृषीकर्ज आणि एमएसएमई कर्जावरील व्याजाला स्थगिती देणे, ग्रामीण अर्थव्यवस्था विकसित करणे, स्थानिक रोजगार उपलब्ध करुन देणे, शेती पूरक उद्योगांना उत्तेजन देणे, स्वयंरोजगाराला प्रोत्साहन देणे व शिक्षण प्रणालीत बदल करणे, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार हमी योजनेंतर्गत अनेक कामे काढून अधिकाधिक लोकांना रोजगार मिळेल, शेतमजुरांना शेतात काम करण्यासाठी प्रोत्साहित करणे इ. उपाययोजना करुन ग्रामीण अर्थव्यवस्थेला उभारी देण्याचे काम केंद्र व राज्य सरकारांना करावे लागेल. भारतीय अर्थव्यवस्थेतील संघटीत, असंघटीत, कृषी, बिगर कृषी, कुशल व अकुशल या सर्व घटकांचा विकास करण्यासाठी समग्र व व्यापक दृष्टीकोनाची गरज आहे. त्याचबरोबर अकुशल कामगारांना प्रशिक्षण देऊन कुशल करुन असंघटीत क्षेत्रातील कामगारांना संघटीत क्षेत्रात समाविष्ट करुन घेणे आवश्यक आहे; कारण कृषी क्षेत्रातून सर्वात अधिक रोजगार निर्मिती होते.

संदर्भ ग्रंथ

1) CMIE (2020), Reports on Employment and Unemployment, Mumbai

2) Dasgupta & Rajeev (2020), Paradox of a supply constrained Keynesian equilibrium the COVID-19 case, Economic Political Weekly, May 30, 2020 Vol LV no 22, Mumbai, pp20-27

3) Ghosh, Sangeeta (2020), Examining the COVID-19 Relief Package for MSMEs, Economic Political Weekly, May 30, 2020 Vol LV no 22, Mumbai, pp10-13

4) Government of India (2019), Economic Survey Reports, New Delhi.

५) दैनिक वर्तमानपत्रे-सकाळ, लोकसत्ता, द इकॉनॉमिक्स टाईम्स

□□□

20

अनुसूचित जातीसाठी राबविलेल्या कल्याणकारी योजनांचा अभ्यास

राजरत्न भिमराव पोहेकर
संशोधक विद्यार्थी,
कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव

डॉ.सुरेश बी. ढाके
विभाग प्रमुख अर्थशास्त्र,
कला वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन, महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, ता यावल, जि जळगांव

****

प्रस्तावना:

भारतीय संविधानाने देशाला लोकशाही आणि गणतांत्रीक घोषीत केलेले आहे. त्यामुळे प्रत्येक नागरिकाला सामाजिक आणि राजकीय अधिकार आहेत. भारतीय संविधानाच्या कलम १४ ते ३२ च्या नुसार प्रत्येक नागरिकाला मुलभूत अधिकार बहाल केलेले आहेत. मागील ६५ वर्षांचा अभ्यास केल्यास आपल्या असे लक्षात येते की, अनुसूचित जाती हा समाजघटक अधिकारांपासून वंचित राहिलेला आहे. भारतामध्ये जास्तीत जास्त वंचित आणि उपेक्षीत अनुसूचित जातीची लोकसंख्या आहे. ती जवळपास १३८ मिलियन येवढी आहे. हा समाज भारतीय समाजव्यवस्थेमध्ये सामाजिक आणि राजकिय स्तरावर तळात गणला गेला आहे. जातीव्यवस्थेमध्ये असलेल्या या स्थानामुळे अनुसूचित जाती विषमतेला बळी ठरल्या आहेत. त्यामुळे जिवनाच्या प्रत्येक स्तरामधून शतकानुशतके त्यांचे अध:पतन झालेले दिसते. अनुसूचित जातीला व्यवस्थेने समान संधी, समानता आणि विकास यांच्यापासून वंचित ठेवले आहे. ज्यामुळे सामाजिक विषमता आणि अन्यायच वाढत चाललेला आहे. समाजामध्ये असलेल्या अशा

Dongar Kathore

SBD-21-22

क्षमतावृद्धी करण्याचे काम मागासक्षेत्र अनुदाननिधी योजनेच्या माध्यमातून करण्यात आले.

संदर्भ ग्रंथ

१) पंचायतराज क्षमतावृध्दी. औरंगाबाद : श्रृंखला नवनिर्माण प्रकाशन

२) मागासक्षेत्र अनुदाननिधी कार्यक्रम मार्गदर्शिका. पंचायतराज मंत्रालय. भारत सरकार. नई दिल्ली.

३) मागासक्षेत्र अनुदाननिधी वाचन साहित्य. पुणे : यशदा

४) मुलभूत कार्यात्मक प्रशिक्षण वाचनसाहित्य — जलसंधारण विभाग महाराष्ट्र शासन मंत्रालय

५) शिरसाठ, शाम व वैनाडे, भगवानसिंग. भारतीय स्थानिक स्वराज्य संस्था. औरंगाबाद : विद्या पब्लिशर्स

□□□

19

जळगाव जिल्ह्यातील केळी उत्पादनाचे अर्थशास्त्र— एक विशेष अभ्यास

डॉ. सुरेश ढाके
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
कला वाणिज्य व कॉम्प्युटर अप्लिकेशन महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, जि.जळगाव

****

प्रस्तावना :

भारताच्या आर्थिक विकासात शेतीचे गौरव पूर्ण स्थान आहे.शेती हा देशातील सर्वात मोठा व्यवसाय आहे.देशातील सर्वात मोठा व्यवसाय होय. २०११ च्या जनगणनेनुसार देशातील एकूण लोकसंख्येपैकी ५८ टक्के लोकांच्या उपजिविकेचे मुख्यसाधन शेती आहे.भारतीय अर्थव्यवस्थेत शेतीचे राष्ट्रीय उत्पन्न, रोजगार, उद्योग क्षेत्र आणि इतर क्षेत्राच्या विकासाबाबत महत्त्वपूर्ण योगदान आहे.भारतात फळबाग लागवड अत्यंत प्राचीन काळापासून केली जाते.देशात सिंचनाखालील जमीनीचे क्षेत्र १८ टक्के आहे.त्यामूळे फलोत्पादनाला बराच वाव आहे.जगाच्या तुलनेत भारताचे फळबाग क्षेत्र ८ टक्के आहे.त्यामुळे देशाचा फलोत्पादनात प्रथम क्रमांक लागतो.फलोत्पादनाच्या निर्यातीपासून शासनाला विदेशी चलन मिळते. भारतीय शेतकरी पारंपरिक पिकाच्या तुलनेत फलोत्पादनाला रोखपिकांचे उद्देशाने प्राधान्य देतात. त्यामुळे फलोत्पादन शेतकऱ्याला आर्थिक दृष्टय फायदेशीर पिक ठरत आहे. भारतीय शेतकरी फलोत्पादनात केळी पिकाला मोठ्या प्रमाणात रोख पिकाच्या दृष्टीने प्राधान्य देतात. केळी हे उष्ण कटीबंध प्रदेशातील महत्त्वाचे फळपिक होय. केळीचा उगम आशीया खंडात झाल्याचे दिसून येते. भारतीय कृषी संस्कृतीत केळीला कल्पतरू मानतात. केळीचा उल्लेख रामायणात ४ ते ५ हजार वर्षापुर्व, कौटील्याचे अर्थशास्त्र इ.स. ३०० ते ४०० पुर्व आणि इ.स.

Dongar Kathore

V2M 21-22

आत्मनिर्भर भारत आणि महिला उद्योजकता महिला सक्षमीकरण

डॉ. विनोद झामा मोरे

सहायक प्राध्यापक – अर्थशास्त्र विभाग, कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर एप्लीकेशन, महिला महाविद्यालय,
डोंगर कठोरे ता. यावल जि. जळगांव मो.नं. ७७०९४९८३८०

प्रस्तावना :–

आपल्या देशात उद्योजकता हा पुरुषांचाच प्रांत आहे असे आजही मानले जाते. पुरुषांच्या कर्तृत्वासाठी राखीव क्षेत्र म्हणजे उद्योजकता असे म्हटल्यास फारसे वावगे होणार नाही. मात्र असे असले तरी महिला उद्योजकांचाही उद्योजकता क्षेत्रात खारीचा का असेना वाटा आहे हे नाकारता येणार नाही. खरं तर खारीचा वाटा म्हणणे हे महिलांच्या कर्तृत्वाला नाकारण्यासारखे आहे. पण पुरुषांच्या तुलनेत महिलांचे उद्योजकता क्षेत्रातील प्रमाण कमी असल्याने आम्ही खारिचा वाटा म्हणतो हा वाटा खारिचा असला तरी खुप महत्वाचा आहे.

"बायोटेक" या जैवतंत्रज्ञानातील उद्योगात महिला उद्योजक किरण मुजूमदार शॉ यांचा सिंहाचा वाटा आहे. टेल्कोच्या पहिल्या महिला इंजिनीअर सुधा मुर्ती यांनी तर आपल्या कार्याने हे सिध्द केले की महिला कोणत्याही क्षेत्रात उतरली तरी स्वतःला सिध्द करु शकते.

महिलांनाही उद्योजकतेची निकोप वाढ व्हावी म्हणून प्रत्यक्षात किंवा अप्रत्यक्षपणे आपआपल्या परीने योगदान केले आहे. महिला महत्वाकांक्षा पुरुषांना उद्योग बनविण्यासाठी प्रवृत्त करतात. मोठमोठी आवाहने स्विकारण्यासाठी प्रोत्साहन देतात. आता तर स्वतःच पुढाकार घेऊन उद्योजकांची भूमिका पार पाडण्यासाठी सिध्द झाल्या आहेत. उद्योजक बनण्यासाठी आवश्यक असलेले कौशल्य आत्मसात करतात. शिक्षण प्रशिक्षण घेत आहेत. महिला उद्योजकांची नेमकी व्याख्या करणे कठीण आहे.

जेव्हा एखादी महत्वाकांक्षी आणि अभिप्रेरीत महिला पुढाकार घेऊन उद्योजकांची भुमीका स्विकारते आणि ती भुमिका पार पाडण्यासाठी आवश्यक ते प्रयत्न करते, तेव्हा अशा महिलला महिला उद्योजक म्हणता येईल.

महिला उद्योजकता संकल्पना (Concent of Women Enterprenuers)

महिला उद्योजकता म्हणजे महिलांनी स्थापन केलेले किंवा महिलांकडून ज्यांचा कारभार संचालित होतो असे उद्योग होय. आपल्या देशाच्या दृष्टीकोनातून विचार केल्यास महि उद्योजकता हे महिलांच्या कर्तृत्वासाठी नव्याने उपलब्ध झालेले क्षेत्र आहे. महिला उद्योजकता आणि पुरुष उद्योजकता यात मुलभूत फरक नसला तरी महिला उद्योजकांना उद्योजकतेच्या क्षेत्रात प्रवेश घेण्यासाठी प्रवृत्त करणे. त्यांना प्रोत्साहन देणे आवश्यक आहे. महिलांचे काही वेगळे प्रश्न आहेत. त्यासाठी सरकारी दरबारातून काही वेगळ्या मदतीची अपेक्षा आहे. महिला उद्योजकांसाठी सर्व स्तरांवर स्वतंत्रपणे विचार होण्याची फार गरज आहे. असे झाल्यास आर्थिक विकासाच्या प्रक्रियेत महिला उद्योजकांचे महत्वपुर्ण योगदान दिसेल. महिला उद्योजकांसाठी विशेष सवलती जाहीर करण्याची आवश्यकता आजही आहे.

१९९१ ला औद्योगिक धोरणाविषयक ठरावात महिला उद्योजकतेबाबत प्रथमच विचार करण्यात आला, त्यानुसार महिला उद्योजकांच्या व्याख्या पुढील प्रमाणे करण्यात आली.

"A women enterprise is an enterprise owned and controlled by a women and having a minimum financial interest of 51 Per cent of the capital and giving of least 51 percent of employmnt generated in the enterprise to women"

Dongar Kathora

SMB 21-22

१९. संशोधन आराखडा

Dr. Shakuntala Mitharam Bharambe
Women's College of Art's, Commerce & Computer Application, Dongar Kathore,
Tal- Yawal, Dist-Jalgaon.

संशोधन ही निरंतर चालणारी प्रक्रिया असून संशोधनाची सुरुवात मानवी विचारातून होते पृथ्वीतलावर जन्माला येणारा प्रत्येक माणूस विचार करतो कारण त्याला बुद्धी असते. निसर्गात घडणाऱ्या प्रत्येक घडामोडींबद्दल त्याच्या मनामध्ये उत्सुकता असते. समाजात वेगवेगळ्या क्रिया, घडामोडी घडतात. त्या का घडतात? त्यामागे कोणती कारणे आहेत? याचा तो नेहमी विचार करतो आणि या विचारातून संशोधनाची सुरुवात होते. संशोधन ही बौद्धिक प्रक्रिया असून तिच्याद्वारे नवीन अज्ञान प्रकाशात आणले जाते तसेच जुन्या ज्ञानातील उणिवा दुरुस्त करुन त्यामध्ये नवीन अज्ञानाची भर घातली जाते. संशोधन कार्यात संशोधनाचा आराखडा ही प्रमुख पायरी आहे. संशोधनात आराखड्याचे खूप महत्त्व असते कारण त्या आधारे प्रस्तुत प्रकरणाचा विषय, त्याची व्याप्ती, विषयाची माहिती या संकल्पनांबाबत अधिक तपशील असतो. संशोधन आराखड्याच्या संदर्भात विविध संशोधकांनी वेगवेगळ्या व्याख्या केलेल्या आहेत.

व्याख्या

- डब्ल्यू. बेस्ट - यांनी असे म्हटले आहे की,"संशोधन म्हणजे कोणत्याही प्रश्नांच्या सोडवणुकीसाठी क्रमबद्ध व शास्त्रशुद्ध चिंतन केलेले प्रयोग."
- जहोडा, डयॉइश व कूक,"- संशोधनाच्या उद्दिष्टांच्या पूर्ततेसाठी निष्कर्षांची संबंधता आणि संशोधन कार्यातील मितव्ययी यांची सांगड घालता येण्याच्या दृष्टीने तथ्यांचे संकलन आणि विश्लेषण करण्यासाठी आवश्यक असणाऱ्या अटींची नियोजित व्यवस्था म्हणजे संशोधन आराखडा होय."

  एकॉफ – "निर्णय कार्यान्वित करण्याची स्थिती येण्यापूर्वीच निर्णय निर्धारित करण्याच्या प्रक्रियेला आराखडा असे म्हणतात."

"संशोधन

कार्यात निर्माण होणाऱ्या समस्यांना समर्थपणे आणि यशस्वीपणे तोंड देण्यासाठी संशोधन कार्याची निश्चित केलेली रूपरेषा म्हणजे संशोधन आराखडा होय."

Dongar Kathore

SMB 21-22

VOLUME - IX, ISSUE - II - MARCH - AUGUST - 2021
IDEAL - ISSN - 2319 - 359X - IMPACT FACTOR - 6.601 (www.sjifactor.com)

१२. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार

डॉ. शकुंतला मिठाराम भारंबे
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन, महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे, ता. यावल, जि. जळगाव.

प्रस्तावना

भारतातील महिलांच्या प्रगतीच्या मार्गातील अडथळे दूर करणारे पहिले भारतीय म्हणून त्यांचा उल्लेख केला जातो. त्यांनी भारतीय समाजातील इतर घटकांसाठी समान नागरी संहिता संहिता बद्ध करून ठोस आणि प्रामाणिक प्रयत्नांची पायाभरणी केली. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी 1920 मध्ये आपली चळवळ सुरू केली. त्यांनी हिंदू समाज व्यवस्थेविरोधात प्रचार सुरू केला. 1920 मध्ये 'मूकनायक' आणि 1927 मध्ये 'बहिष्कृत भारत' हे नियतकालिक सुरु केले. यामध्ये त्यांनी लिंग समानता आणि आजच्या शिक्षणाचे महत्त्व तसेच स्त्रियांविषयीच्या समस्या यावर भर दिला. आंबेडकरांनी गरीब, निरक्षर महिलांमध्ये जागरुकता निर्माण करून बालविवाह आणि देवदासी सारख्या अन्यायकारक सामाजिक पद्धतीविरुद्ध लढा दिला.भारतीय राज्यघटनेचे शिल्पकार म्हणून आंबेडकर यांचे नाव अजरामर झाले. त्यांचे कार्य विविधांगी असून त्यांचे व्यक्तिमत्त्व बहुआयामी होते. या क्रांती सूर्याच्या तेजाने बहुजन समाज प्रकाशमय झाला. एक थोर समाजसुधारक, घटनातज्ञ, स्त्री समाजसुधारक, दलितांचा कैवारी, कामगारांचा नेता, थोर अर्थशास्त्रज्ञ अशा अनेक बाबतीत डॉ. आंबेडकरांची ख्याती आहे. त्यांच्या एकंदर कार्यात सामाजिक सुधारणांना विशेषतः दलीतोद्धाराच्या चळवळीला विशेष महत्त्व आहे. ते स्वतः एका अस्पृश्य कुटुंबात जन्मल्याने त्यांना अस्पृश्यतेचे चटके सहन करावे लागले म्हणून त्यांनी समाजातील अस्पृश्यता नष्ट करून अस्पृश्यांचा सर्वांगीण विकास करण्यावर आपले ध्येय ठरविले. 'तलवारीच्या धारेपेक्षा लेखणीची धार कायम टिकणार आहे' याविषयी त्यांचा विश्वास असल्याने त्यांनी लेखणी हातात घेऊन अन्यायावर मात करा अशी त्यांची शिकवण होती. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर हे दृढ निश्चयी व सखोल अभ्यासक असल्याने समाजाला स्वातंत्र्य, समानता आणि बंधुत्वाच्या मार्गावर नेण्यासाठी महत्त्वपूर्ण कार्य केले. डॉ. बाबासाहेबांच्या वाचनात, व लेखनात प्रचंड शक्ती होती. ज्ञानसंपन्नतेच्या शक्तिमुळेच व्यक्ति, समाज, राज्य आणि राष्ट्र महान बनत बनत असते याची त्यांना पुरेपूर जाणीव होती. सतत अभ्यास करून शेकडो वर्षाचा शिल्लक राहिलेला बॅकलॉग भरून काढत होते. तळागाळातील समाजाला त्यांनी मानसिक गुलामगिरीतून मुक्त केले आणि हक्काने, सन्मानाने जगण्याची शिकवले. त्यासाठी त्यांनी स्वातंत्र्य, समता, बंधुता व न्याय समाजात

SMB 21-22

Journal of Research & Development
Vol. 13 (Issue 13), April, 2022
(ISSN-2230-9578)

कुसुमाग्रजांच्या कवितेतील सामाजिक मूल्ये आणि जाणिवा

डॉ. शकुंतला मिठाराम भारंबे
कला, वाणिज्य व कॉम्प्युटर ॲप्लिकेशन महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे,
ता. यावल जि. जळगाव

प्रस्तावना

मराठी कवितेच्या वाटचालीमध्ये एक महत्त्वाचे कवी कुसुमाग्रज हे आहेत. एक श्रेष्ठ आधुनिक मराठी कवी, नाटककार आणि कादंबरीकार विष्णू वामन शिरवाडकर यांनी कुसुमाग्रज या नावाने लेखन कार्य केले आहे. कुसुमाग्रज हे नाटककार आणि तेजस्वी आशयाची कविता लिहिणारे मानवतावादी कवी आहेत. त्यांचे सुमारे चौदा कविता संग्रह प्रकाशित झाले आहेत. त्यांची नावे अशी - जीवनलहरी (1933), विशाखा (1942), समिधा (1947), किनारा (1952), मराठीमाती (1960), स्वगत (1962), हिमरेषा (1964), वादळवेल (1969), छंदोमयी (1982), मुक्तायन (1984), पाथेय (1989), महावृक्ष (1994), मारवा (1999), थांब सहेली (2002).

कुसुमाग्रजांच्या कवितेतील सामाजिक मूल्ये आणि जाणिवा

कुसुमाग्रजांची कविता ज्या काळात घडत होती तो काळ सामाजिक कृतींचा काळ होता. स्वातंत्र्यासाठी सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनासाठी आपण काही तरी केले पाहिजे असे प्रत्येकाला वाटत होते. यासाठी विशिष्ट दृष्टिकोन स्वीकारून सकारात्मक कृती केल्या पाहिजेत यासंबंधीचा विचार होत होता. अशा या काळाच्या तीव्र प्रभावामुळे कुसुमाग्रज जीवनाकडे नैतिक भूमिकेतून पाहत असल्याने अशा प्रकारच्या जाणिवा त्यांच्या काव्यातून प्रखरपणे जाणवतात. कुसुमाग्रजांची बरीचशी कविता ही आरंभापासून आजतागायत सामाजिक जाणीव व्यक्त करणारी म्हणूनच अवतरली आहे. ' विशाखा' संग्रहातील त्यांच्या सामाजिक जाणिवेच्या कविता इतक्या प्रखर आणि तेजस्वी आहेत की त्यांना केशवसुतांचे उत्तराधिकारी ठरविले आहे. कुसुमाग्रज यांची सामाजिक कविता अर्थातच केशवसुतांच्या सामाजिक विचारांबाबतच्या कवितांच्या पुढे गेली आहे. कुसुमाग्रज यांचा पहिला कवितासंग्रह 'जीवनलहरी' हा इ.स. 1933 मध्ये प्रकाशित झाला परंतु इसवी सन 1942 मध्ये प्रकाशित झालेल्या ' विशाखा' या त्यांच्या दुसऱ्या कवितासंग्रह मुळे ते कवी म्हणून अधिक प्रसिद्धीस आले. या संग्रहाने एकाच वेळी मराठी कवितेला समाजसन्मुख करण्याचा आणि समाजाला का व्यसनमुक्त करण्याचा विक्रम केला या कविता संग्रहामध्ये बडी बाळाचे मनोगत पाचोळा लिलाव गुलाम आव्हान बंदी व जमीन यांच्या सर्व कविता संग्रहामध्ये कमी-अधिक प्रमाणात सामाजिक कविता पहावयास मिळतात त्यांच्यासमोर काम लेखन प्रवासात हा विकसनशील असा आहे ती प्रखर सामाजिक जाणीव त्यांच्या काव्यसंग्रह प्रवासामध्ये व्यक्त झालेली आढळते त्यांची सामाजिक कविताच नव्हे तर एकूण कविता आहे असीम निष्ठा बाळगणारे आदर्शवादाचा ची जोपासना करणारी आहे ही कविता अधिकाधिक गेली मानव कल्याणाची आकांक्षा बाळगणाऱ्या गेली त्यातून

Dongar Kathore

RRK 21-22

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श June 2021 Special Issue 02 SJIF Impact- 5.54

33

हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जनजीवन

प्रा.डॉ. रविंद्र आर. खरे

हिन्दी विभागाध्यक्ष

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, डोंगर कठोरा तह. यावल जि. जलगाँव

"आदिवासी" शब्द से तात्पर्य है, जंगली या वनवासी। विशिष्ट भू प्रदेश में रहना, समूह बनाना धर्म संबंधी प्राचीन मान्यता को मानना, जात पंचायत की रक्षा करना, गांव के मुखिया को महत्व देना तथा आदि विशेषताएं हैं। भारत के संविधान में जनजाति का दर्जा आदिवासी को मिला है। अनुसूचित जनजाति के रूप में संविधान ने लगभग 500 आदिवासी जातियों को प्रमाणित किया गया है। भारत के कुछ और अछुते हिस्सों को अनुसूचित जनजाति के नाम से संबोधित करने के लिए संविधान द्वारा 342 के बुक भाषिक राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया गया है। सन 1991 की जनसंख्या के अनुसार लगभग 83-86 करोड़ आदिवासियों जनसंख्या मानी जाती है।

आदिवासी साहित्य जीवन वादी साहित्य है, उसमें वेदना है, विद्रोह है, स्वयं अभिव्यक्त करने की एक शैली है। आदिवासी साहित्य के प्रमुख स्रोत संस्कृति, प्रकृति तथा इतिहास है। प्रकृति, नदी, पेड़-पौधा, पर्वत, पशु-पक्षी यह सब आदिवासी साहित्य में व्यक्त होता है। उनकी परंपरा रीति-रिवाज, धार्मिक उत्सव, त्योहार और देवी-देवता उनके लेखन के प्रमुख अंग होते हैं। आदिवासी जीवन को केंद्र में रखकर अनेक उपन्यासकारों ने उपन्यास का सृजन किया है। आदिवासी समाज अपनी भाषा रिती-रिवाज, रूढ़ियाँ, लोकगीत, लोकनृत्य, कलारुचि तथा सभी संस्कृति कनावरों से अलंकृत किया है। उनके अलग रहन-सहन को कस्बा से लेकर महानगरों के साथ जोड़ने का प्रयास आदिवासी उपन्यासकारों ने किया है। प्रस्तुत उपन्यास हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श को लेकर चलने वाले कुछ उपन्यासों पर विचार किया गया है।

जंगल के आसपास (1982)

राकेश वत्स रचित 'जंगल के आसपास' सोन नदी के किनारे फैले जंगल और शोषित आदिवासियों का विकास की धारा से अछूता और अभिशप्त जीवन पर आधारित एक ब्रहद आदिवासी उपन्यास है। इसमें जंगली जानवरों की समस्या, पूंजीपतियों द्वारा किया जाने वाला अमानुष शोषण, अन्याय और नई चेतना कथा की महत्वपूर्ण बिंदु है। उपन्यास का आरंभ आदमखोर जानवर और रॉबर्ट शिकारी के आगमन से होता है। यह कथा काव्य शक्तियों द्वारा किए जाने वाले जल व वायु जाने वाले अंचलवासियों के शोषण को प्रस्तुत करती है। उपन्यास केंद्र में दमकड़ी अँचल और वहां के आदिवासी है। इस उपन्यास में पिछड़ेपन का मूल कारण शोषक-शक्तियाँ है। राय साहब इस पहाड़ी इलाके के अकेले बेताज बादशाह है। "यह सैकड़ों मील के घेरे में फैलीपहाड़ी जागीर के मालिक है। "१ कानून ने जमीदारी तो छीन ली लेकिन आज भी उनका रुतबा राजा की तरह है। खेती के साथ ही उनके शराब, फलों का रस, लकड़ी की चिराई, मांस तथा खुँभी के डिब्बों में बंद करना जैसे अन्य उद्योग भी है। यह इलाका पूंजीपतियों का, महाजन, पुलिस और नेताओं से अत्याधिक आतंकित है। इन वर्गों ने आदिवासियों का खून ही नहीं बल्कि हड्डियां भी चूस डाली है। आतंक तथा अन्याय उपन्यास के कारण आदिवासियों में जड़ता और दब्बू मानसिकता पैदा हो गई है। इसी वजह से बहू बेटियों की इज्जत अपनी आंखों के सामने लूटते देखकर भी पत्थर की मूरत बन कर खड़े रहते हैं। इस जड़ता का एक कारण यह भी है की कोई सुनवाई नहीं होती।

सू-राज (अंधेरा और) (1982)

हिमालय के तराई क्षेत्र में जीवन-यापन करने वाले थारू आदिवासियों के जीवन की अभिशप्त एवं करुण व्यथा हिमांशु जोशी ने सु-राज में संकलित दूसरी उपन्यास "अंधेरा और" में अंकित किया है। जिसके अंतर्गत थारू आदिवासियों का अत्यंत पिछड़ा शोषित एवं संघर्षमय जीवन प्रस्तुत किया है। यह कथा एक अछूते वास्तविकता से परिचय कराती है जो स्वतंत्रोत्तर आदिवासी जीवन की त्रासदी है- "यह उपन्यास शोषित वर्ग एवं थारू जाति का ऐसा दस्तावेज है जो प्राय सभी आदिवासी क्षेत्रों को प्रतिबिंबित करता है।"२

Dongar Kathora

RRK 21-22

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54

September 2021, Special Issue 02, Vol. VI

75

21 वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में महिला लेखन की भूमिका

डॉ.रविंद्र आर.खरे

हिंदी विभागाध्यक्ष

कला, वाणिज्य एवं कॉम्प्युटर अप्लीकेशन, महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरे जि.जळगाव (महाराष्ट्र)

मो.9422462800 Email- ravindrakhare78@gmail.com

21 वीं सदी के लोकतांत्रिक देश में रहते हुए और नारी को सभी संवैधानिक अधिकारों पर दृष्टिपात करते हुए वर्तमान समय में नारी चिंतन आवश्यक हैं। आज हम वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं फिर भी नारी को लेकर हमारे देश का जो मानस हैं सदृढ नहीं हैं। आज भी भारतवर्ष में नारी को अपने मौलिक अधिकारों से लेकर सामजिक अधिकारों तक संघर्ष करना पड़ता हैं। इस चिंतन को गत तीन दशको से महिला लेखन में स्थान दिया गया हैं। अनेकानेक महिला रचनाकार अपनी रचनाओं में नारी में आए पारिवारिक, सामजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं नैतिक बदलावों को उजागर करने का प्रयास कर रही हैं। नारी सशक्तिकरण, शिक्षा, सुरक्षितता, मानसिक व शारीरिक छल, अस्मिता, कन्या भ्रूणहत्याए, दहेज प्रथाए, यौन संबंध, विज्ञापन एवं ग्लैमर की ओर बढ़ते उसके कदमों ने नारी विषयक कुछ अहम सवाल हमारे समक्ष खडे किए हैं। उन सवालों पर किस हद तक महिला रचनाकारों ने लेखनी उठाई हैं यह जानने का प्रयास आवश्यक है। हम अगर 21वीं सदी की महिला लेखिकाओं की रचनाओं को देखे तो हर जगह एक ऐसी औरत दिखाई देती हैं जो अपने पर हुए शोषण,अन्याय, अत्याचार पर अपना मुँह खोलना सीख रही हैं। उसे एक ऐसी बेहतर, दुनिया की तलाश हैं जिसका आसमान उसका हो, जहाँ वह अपने पंख पसार कर उड़ान भर सके। उस आसमान के नीचे की धरती उसकी अपनी हो, जहाँ वह अपनी जडे जमा सके।महिला लेखन मन की इन्हीं परतों को खोलने का प्रयास हैं। राजी सेठ के अनुसार महिला लेखन की "सारी भाग दौड, भीतर से पोली जमीन को पक्की बनाने में परिवर्तन की आंतरिक संचेतना जगाने की हैं ताकि पारस्पारिकता की जमीन का विस्तार हो।"1

21वीं सदी की महिलाएं पत्रकारिता, नाटक, सिनेमा, पुलिस और सेना आदि क्षेत्रों में सजग एवं साहस के साथ सम्मिलित हो रही हैं, जो उसके लिए अभी तक वंचित माने गए थे। महिला कथाकारों ने सामाजिक समस्याओं को बड़ी सूक्ष्मता से समझा हैं तथा उनकी अभिव्यक्ति अपनी साहित्य के माध्यम से स्पष्ट की हैं। आधुनिक युग की चुनौतियों को स्वीकारनेवाली महिला साहित्यकारों का नारी के प्रति दृष्टिकोन प्रचूर मात्रा में परिवर्तित हुआ हैं। आज की लेखिका नारी विरोधी व्यवस्था का विरोध करके एक नवीन मूल्यों की प्रतिष्ठापना करना चाहती हैं। हम प्रतिदिन समाचार पत्रों में पढ़ते हैं हर प्रांत, शहर, या गाँव कही न कही नारीयों पर होनेवाला शारीरिक शोषण बढ़ता जा रहा हैं। हमारे देश में औरत ही नहीं छोटी बच्चीयाँ भी असुरक्षित हैं। इसके संदर्भ में डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे लिखते हैं, "वर्तमान में दामिनी हत्याकांड से उपजी नारी चेतना ने पुरे भारत में एक स्वप्न स्फूर्त आन्दोलन का रूप लिया हैं। तथा देश में नारी अस्मिता और सुरक्षा का वर्ष मनाने का संकल्प हुआ हैं, शताब्दीयों से चली आ रही नारी की त्रासदियों की सिसकियों ने जनमानस को झकझोर दिया हैं। उनकी समस्याओं के प्रति समाज और शासन में संवेदनशीलता जागी हैं। "2 मानवता प्रस्थापित करने के विचार से 21वीं सदी की महिला लेखन ने इस पीडा, दर्द, यातना, असुरक्षितता को स्वनुभूति से अभिव्यक्त करने का सार्थक प्रयास किया गया हैं।

21 वीं सदी की महिला लेखिका सचेत, सजग एवं संयमी हैं। वह अपने लेखन के प्रति जितनी प्रामाणिक हैं, उतनी ही जागृत भी हैं। इस सदी की हिंदी महिला कथाकारों में ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, मंधु कांकरिया, शिवानी, अलका सरावगी, अनामिका, चंद्रकांता, नासिरा शर्मा, शशिप्रभा शास्त्री, मेहरूनिस्सा परवेज, सूर्यबाला, राजी सेठ, गीतांजली श्री, क्षमा शर्मा, दीप्ति खंडेलवाल, निरुपमा सेवती, अचला शर्मा, सिम्मी हर्षिता, शुभा वर्मा, सुनीता जैन आदि उल्लेखनिय नाम हैं। जिसमें से कुछ महिला कथाकारों के विद्रोह भरे स्वर निम्न प्रकार से विश्लेषीत किया जा सकता हैं।

ममता कालिया:-

महिला कथाकार ममता कालिया वैविध्यपुर्ण रचनाओं द्वारा तथा आधुनिकता से प्रेरित होकर स्वयं आधुनिकता की ओर आकर्षित होते हुए हिंदी साहित्य को तथा नारी अस्मिता समृद्ध करने में महत्वपुर्ण योगदान देती हैं। 'बेघर' , 'नरक दर नरक' , 'प्रेम कहानी' , 'लड़कियां' , 'एक पत्नी के नोट्स' तथा 'दौड़' आदि उपन्यासो में नए-नए औरत आधुनिक विचार धाराओं को

RRK-21-22

राष्ट्रसंत श्री. तुकडोजी महाराज के काव्य में सामाजिकता एवं संस्कृति

प्रा. डॉ. रविंद्र रामदास खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कला, वाणिज्य एवं कॉम्प्युटर ॲप्लीकेशन महिला महाविद्यालय, डोंगर कठोरा,
तह. यावल, जि. जलगाँव (महाराष्ट्र)
Email : ravindrakhare78@gmail.co
मोबा : ९४२२४६२८००

भारतवर्ष संत महात्माओं की पुण्यभूमि हैं। भारतीय संस्कृति की नींव संत महात्माओं के ही उपदेश की आधारशीला से बनी हैं। संत कवियों में सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व महात्मा कबीर का ही था, परंतु हिंदी सन्त-काव्य परम्परा के प्रवर्तन का श्रेय कबीर की अपेक्षा संत नामदेव को अधिक हैं। संत परम्परा में महत्वपूर्ण कवियों में दादुदयाल, सुन्दरदास, रज्जबदास, यारी साहब, पलटू साहब, मलूकदास, प्राणनाथ, दयाबाई, सहजोबाई, जगजीवनदास, दरिया साहब, शिवनारायण आदि संतों ने समाज को सच्चा मार्ग दिखाया और यह मार्ग समाज के लिए आज भी मार्गक्रमित करता हैं।

इसी संत परम्परा में महाराष्ट्र के आधुनिक काल के महान संत 'राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज' आते हैं। जिन्होंने अमरावती के 'यावली' गाँव से निकलकर सम्पूर्ण राष्ट्र को हीं नहीं तो विश्व को भी अपनी खंजेडी, पहाड़ी आवाज, निडर वृत्ति और गहनतम विद्वत्ता से प्रभावित किया हैं। समाज की दिन-ब-दिन बिगड़ती दुर्दशा देख परिस्थितिनुरूप राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का काव्य ईश्वर आराधना से ऊपर उठकर परिवर्तित होता गया। जिससे अपनेपन की संकुचित भावना हटाकर, समाज, राष्ट्र तथा विश्वकल्याण की भावना उनके काव्य में अभिव्यक्त हुई हैं। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज 'मेरी जापान यात्रा' में विश्वकल्याण की भावना व्यक्त करते हुए, सम्पूर्ण विश्व को मानवता धर्म की सिख देते। ''भाईयों। मैं तो अपनी धारणा पहले से ही विश्व की बना चूका हूँ। इसलिए मुझे जापान ही क्या सारे विश्व में भी घूमने का प्रसंग आया तो कोई बड़ी बात नहीं हैं मेरा इष्ट देव विश्व हैं। मेरा धर्म मानवधर्म हैं। मेरी भावना इसी ओर भगवान बढ़ा रहा हैं। यो तो मुझे ही क्या, आपको भी इसी रास्ते से आना होगा, जबकि, आप आपने विशाल हरदम को खो बैठेंगे।''[१]

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज ने राष्ट्रीय एवं विश्वकल्याण की सामुदायिक भावना निर्माण करने के लिए राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रयोग आवश्यक समझा। राष्ट्रीयता, स्वाधीनता, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रप्रेम तथा राष्ट्रोन्नति उनके भजनों का प्रमुख विषय रहा हैं। इतना ही नहीं अंधविश्वास और जातिगत भेदभाव को मिटाने के लिए भजनों और कीर्तन का प्रभावी ढंग से उपयोग किया। यही खंजरी भजन उनकी ज्ञानोदय की विशेषता थी। तत्कालिन सामाजिक परिस्थितियों का गहन अध्ययन कर उन्होंने निम्नलिखित तत्त्वों को अपने काव्य में अभिव्यक्त किया हैं। ग्राम्य विकास, कृषक जीवन, बेरोजगारों की समस्या, राष्ट्रीय भावना, नारी शक्ति की पहचान, शिक्षा क्षेत्र और आत्मनिर्भरता आदि सामाजिक एवं संस्कृति के विविध आधुनातन आयामों को संक्षेप में स्पष्ट करना प्रस्तुत आलेख का मुख्य उद्देश्य हैं।

१) ग्राम्य विकास :-

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज की यह धारणा रही हैं कि, यदि भारत गाँवों का देश हैं, तो ग्रामीण विकास से राष्ट्र का विकास होंगा। वह निरंतर इस बात से चिंतित रहते कि सभी क्षेत्र के लोग किस प्रकार जीवनयापन करें। ग्रामीण विकास और ग्रामीण कल्याण उनकी विचारधारा का केंद्रबिंदु प्रतीत होता था। उन्होंने ग्रामीण विकास की विभिन्न समस्याओं का एक मुल विचार दिया और इन समस्याओं को कैसे हल किया जाए। इसका भी सुझाव दिया हैं।

जब तक ग्राम न सुधारोंगे।
तब तक देश न उध्दारोंगे।।[२]

Dongar Kathore